सम्पादकीय

2008 की मंदी के बाद सबसे बड़ी गिरावट, भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए चिंता का विषय

विदेशी मुद्रा भंडार और डालर के मुकाबले रुपए की कीमत में गिरावट आर्थिक विकास की दृष्टि से गंभीर चिंता का विषय है। डालर के मुकाबले रुपए की विनिमय दर लंबे समय से नीचे का रुख किए हुए है। अब विदेशी मुद्रा भंडार भी तेजी से घटना शुरू हो गया है। बीते सप्ताह शुक्रवार को इसमें 8.48 अरब डालर की कमी दर्ज की गई। यह 2008 की मंदी के बाद अब तक की सबसे बड़ी गिरावट है। इसके पिछले हफ्ते भी 1.99 अरब डालर की गिरावट दर्ज हुई थी। सितंबर में विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ कर 704.88 अरब अमेरिकी डालर के अपने सर्वाधिक उच्च स्तर पर पहुंच गया था। मगर उसके बाद इसमें लगातार कमी दर्ज हो रही है। अब विदेशी मुद्रा भंडार गिर कर 644.87 अरब अमेरिकी डालर पर पहुंच गया है। हालांकि यह स्तर अभी चिंताजनक नहीं माना जा सकता, मगर जिस तरह निरंतर इसमें गिरावट दर्ज हो रही है, वह अर्थव्यवस्था के लिए चिंता का विषय है। विदेशी मुद्रा भंडार गिरने का अर्थ है कि अपेक्षित विदेशी निवेश नहीं आ पा रहा। इसकी वजह भी साफ है। अमेरिकी डालर लगातार मजबूत हो रहा है, जिसके चलते विदेशी निवेशक भारत से अपना पैसा निकाल कर लगाने लगे हैं। दुनिया के कारोबार में डालर की स्थिति अहम भूमिका निभाती है। डालर कमजोर होता है, तो विदेशी निवेशक दूसरे देशों का रुख करने लगते हैं। मगर जैसे ही डालर मजबूत होने लगता है, वे अमेरिकी बाजार का रुख कर लेते हैं। कोरोना के बाद मंदी की मार झेल रहे अमेरिका के फेडरल रिजर्व ने अपने यहां ब्याज दरों में बदलाव किए। इससे निवेशकों को वहां निवेश करने के लिए आकर्षित करने में मदद मिली। फिर, डोनाल्ड ट्रंप के दुबारा राष्ट्रपति चुने जाने और आर्थिक नीतियों को लेकर उनके बयानों से निवेशकों में विश्वास जगा है कि निवेश की दृष्टि से अमेरिका ज्यादा फायदेमंद जगह है। इसका असर भारत के मुद्रा भंडार पर भी पड़ा है।

मगर केवल यही कारण प्रमुख नहीं है। सबसे अहम बात है कि हमारा व्यापार घाटा लगातार बढ़ रहा है। निर्यात पर जोर देने के बावजूद इसमें बेहतरी के संकेत नजर नहीं आ रहे। आयात लगातार बढ़ रहा है। इसका सीधा असर घरेलू उत्पादन और बाजार पर पड़ रहा है। यह आकारण नहीं है कि पिछली कुछ तिमाहियों से विनिर्माण क्षेत्र हिचकोले खाता नजर आ रहा है। सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में औद्योगिक उत्पाद गिरा है। जब तक इस क्षेत्र में मजबूती नहीं आएगी, तब तक रुपए की कीमत और विदेशी मुद्रा भंडार में बेहतरी की उम्मीद धुंधली बनी रहेगी। रुपए की कीमत गिरने से विदेशी निवेशकों का उत्साह भी कम होता है। कोई भी निवेशक ऐसी जगह अपना पैसा नहीं लगाना चाहता, जहां उसे मुनाफा न हो। फिर तमाम कोशिशों के बावजूद महंगाई अपने उच्च स्तर पर बनी हुई है, जिसके चलते भारतीय बाजार में चमक नहीं लौट पा रही। इसका बड़ा कारण प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोतरी न हो पाना है। पिछले कई सालों से लोगों की आय यथावत बनी हुई है, जबकि उसकी तुलना में महंगाई काफी बढ़ चुकी है। जाहिर है, इसके चलते उपभोक्ता व्यय घटा है। ऐसी स्थिति में स्वाभाविक ही सकल घरेलू उत्पाद यानी जीडीपी की दर नीचे गई है।

यह वर्ष देगा भारत को विकास की असीम संभावनायें

भारत में ई-कॉमर्स का बाजार भी तेजी से बढ़ रहा है। 2025 तक, इसके और भी अधिक परिपक्व होने की उम्मीद है, जिसमें ऑनलाइन खरीदारी, डिजिटल भुगतान और लॉजिस्टिक्स में भी पर्याप्त सुधार होगा। डिजिटल भुगतान को भी सरकारी स्तर पर पर्याप्त बढ़ावा दिया जा रहा है। 2025 तक, भारत में डिजिटल लेनदेन की संख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। भारत में 5जी तकनीक के प्रयोग में तेजी से विस्तार हो रहा है। 2025 तक, इसका व्यापक रूप से उपयोग होने लगेगा इसकी उम्मीद है, जो तेज रफ्तार से इंटरनेट की कनेक्टिविटी प्रदान करेगा। डिजिटल परिवर्तन के साथ, साइबर सुरक्षा भी महत्वपूर्ण हो गई है।

डॉ. आर.के. सिन्हा

भारत के लिए नूतन वर्ष 2025 कई क्षेत्रों में बड़ी उपलब्धियों का बड़ा तोहफा लेन वाला साल साबित हो सकता है। भारत डिजिटल अर्थव्यवस्था की तरफ लंबी छलांग लगा सकता है। सॉफ्टवेयर और आईटी सेवाएं देने में भी हम सारे संसार का नेतृत्व करने की स्थिति में पहुंच सकते हैं। इसी तरह भारत विश्व भर के पर्यटकों के लिए एक सुरक्षित और सस्ता आकर्षण का केंद्र भी बन सकता है जहाँ पर्यटकों की रुचि के तमाम केंद्र , हर तरह के खान- पान, स्थानीय कुटीर उद्योगों के उत्पाद और गाइड के रूप में अच्छे पढ़े लिखे बढ़िया अंग्रेज़ी जानने बोलने वाले विद्यमान है , जो एक साथ मुश्किल से ही किसी एक देश में मिल सकते हैं।इनके अलावा भी बहुत सारे क्षेत्रों में हमारे लिए आगे बढ़ने का अनुपम अवसर बन रहे हैं। अब इस बात से सारी दुनिया वाकिफ हो चुकी है कि भारतीय अर्थव्यवस्था डिजिटल होती जा रही है। इस लिहाज से भारत सरकार बेहद गंभीर भी है। इसके तहत ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी, डिजिटल साक्षरता, और ई-गवर्नेंस को बढ़ावा दिया जा रहा है और आवश्यक संसाधन भी तेजी से विकसित किये जा रहे हैं । 2025 तक, भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या में भारी वृद्धि होने की उम्मीद है, जिससे ई-कॉमर्स, ऑनलाइन शिक्षा, और डिजिटल वित्तीय सेवाओं जैसे क्षेत्रों में तेजी आएगी। 2025 तक, भारत इस क्षेत्र में और अधिक मजबूत हो सकता है, जो डेटा सुरक्षा और साइबर अपराधों को रोकने में मदद करेगा। इसके साथ ही, भारत डिजिटल के सबसे बड़े सॉफ्टवेयर विकास और निर्यात केंद्रों में एक बड़ा और मजबूत केंद्र बनकर खड़ा हो चुका है। 2025 तक, यह क्षेत्र और अधिक मजबूत होने की उम्मीद है, जो विदेशी मुद्रा कमाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। भारत में क्लाउड कंप्यूटिंग का उपयोग बढ़ रहा है। 2025 तक, कई संगठन क्लाउड-आधारित समाधानों को अपनाएंगे, जो लचीलापन और कम लागत पर असीमित दक्षता प्रदान करेंगे। नए साल में, डेटा एनालिटिक्स में कुशल पेशेवरों की मांग बढ़ेगी, जो व्यापारिक निर्णय लेने में मदद करेंगे। आप मानकर चल सकते हैं कि नूतन साल में आईटी पेशेवरों की संख्या बढ़ती ही रहेगी। 2025 तक, यह क्षेत्र और अधिक कुशल और प्रशिक्षित पेशेवरों को आकर्षित कर सकता है। सरकार और निजी क्षेत्र दोनों ही कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। 2025 तक, यह प्रयास युवाओं को नए आईटी कौशल सीखने और रोजगार के लिए तैयार करने में मदद कर सकते हैं। अब मेक इन इंडिया के बारे में तो विश्व भर में सब जानते ही हैं। यह पहल भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनाने पर केंद्रित है। सरकार विदेशी निवेश को आकर्षित करने और घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए नीतियां बना रही है। 2025 तक, भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, फार्मास्युटिकल्स, और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में विनिर्माण गतिविधियों में तेजी आने की उम्मीद है।इस विनिर्माण में भी सरकार आत्मनिर्भरता हासिल करने पर जोर दे रही है। घरेलू रक्षा विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं। 2025 तक, भारत रक्षा उपकरणों का एक प्रमुख निर्यातक बनने की दिशा में आगे बढ़ सकता है। नितिन गड़करी के नेतृत्व में भारत सरकार सड़कों, रेलवे, बंदरगाहों, और हवाई अड्डों जैसे परिवहन बुनियादी ढांचे को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। 2025 तक, देश में बेहतर परिवहन कनेक्टिविटी होगी, जिससे व्यापार और पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।

भारत नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों, जैसे सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा, के विकास पर जोर दे रहा है। सरकार का लक्ष्य 2025 तक ऊर्जा सुरक्षा हासिल करना और जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करना है। भारत में शहरीकरण भी तेजी से हो रहा है। स्मार्ट सिटी मिशन के तहत, सरकार शहरों को अधिक रहने योग्य और कुशल बनाने के लिए काम कर रही है। 2025 तक, स्मार्ट शहरों में बेहतर बुनियादी ढांचे, जल आपूर्ति, स्वच्छता, और सार्वजनिक परिवहन जैसी सुविधाएं होंगी।आयुष्मान भारत योजना देश के लाखों लोगों को स्वास्थ्य बीमा कवरेज प्रदान करती है। सरकार स्वास्थ्य सेवा बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाने और सभी के लिए सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। 2025 तक, भारत में स्वास्थ्य सेवा में सुधार की उम्मीद है, जिसमें बेहतर अस्पताल, डॉक्टरों और दवाओं की पहुंच शामिल है। भारत में कृषि क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का उपयोग बढ़ रहा है। ड्रोन, सेंसर, और डेटा एनालिटिक्स जैसी तकनीकों से किसानों को फसल उत्पादन बढ़ाने और लागत कम करने में मदद मिल रही है। 2025 तक, कृषि क्षेत्र में अधिक डिजिटलीकरण होने की उम्मीद है। भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में तेजी से विकास हो रहा है। यह क्षेत्र किसानों के लिए आय बढ़ाने और खाद्य अपशिष्ट को कम करने में मदद कर सकता है। 2025 तक, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में और अधिक निवेश की उम्मीद है। उम्मीद है कि इस साल सेंसर, ड्रोन और जीपीएस जैसी तकनीकों का उपयोग करके किसान अब मिट्टी, पानी और उर्वरक का अधिक कुशलता से उपयोग करने लगेंगे। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म किसानों को बाजार, मौसम की जानकारी और अन्य महत्वपूर्ण संसाधनों से तो जोड़ ही रहे हैं। सरकार कृषि अनुसंधान और विकास में निवेश कर रही है, जिससे नई फसलें, बेहतर कृषि तकनीकें और कीट नियंत्रण के नए तरीके विकसित हो रहे हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम और कम लागत वाली पारंपरिक अन्नों पर जोर देकर मोदी सरकार ने छोटे किसानों के लिए दूरगामी योजना तैयार की है । यह अवतक का दुर्भाग्य ही रहा है कि हमारी सभी पूर्ववर्ती सरकारों का ध्यान सिंचित भूमि की कृषि पर ही रहा है , जो पिछले 75 वर्षों में और लाखों करोड़ रुपये का व्यय करने और बाँधो और परियोजनाओं के निर्माण में लाखों एकड़ भूमि बर्बाद करने के बाद भी हम मुश्किल से 1.30-35 प्रतिशत भूमि ही सिंचित कर पाए है । प्रकृति और पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए बरसात पर निर्भर पारंपरिक अन्नों, दलहन और तिलहन की खेती करने वाले छोटे और मध्यम वर्ग के किसानों की चिंता हमने की ही कहाँ? अब आशा करनी चाहिए कि सतत अनुसंधानों और पारंपरिक फसलों के उत्पादन पर सरकार का ध्यान जाने से किसानों को लाभ होगा। साथ ही मिलेट्स का निर्यात बढ़ेगा और उपभोक्ताओ के स्वास्थ्य में भी सुधार होगा । 2025 में कृषि क्षेत्र में लंबी छलांग लगाने के संभावित परिणामों की बात करें तो कृषि उत्पादन में वृद्धि से देश में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होगी। किसानों की आय में वृद्धि से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार होगा। कृषि क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। भारत कृषि उत्पादों का निर्यात करके भारी विदेशी मुद्रा अर्जित कर सकता है। हालांकि, कुछ चुनौतियां भी हैं जिनका समाधान करने की आवश्यकता होगी जैसे, छोटे किसानों को नई तकनीकों और बाजारों तक पहुंच प्रदान करना महत्वपूर्ण है। भूमि और जल संसाधनों का संरक्षण करना आवश्यक है, ताकि कृषि उत्पादन को टिकाऊ बनाया जा सके। इन चुनौतियों का समाधान करके भारत 2025 में कृषि क्षेत्र में लंबी छलांग लगा सकता है और एक मजबूत और टिकाऊ कृषि प्रणाली विकसित कर सकता है। शिक्षा के लिए भी 2025 बेहद अहम हो सकता है। सरकार ने हाल ही में एक नई शिक्षा नीति शुरू की है, जिसका उद्देश्य शिक्षा प्रणाली में सुधार करना है। यह नीति कौशल विकास, व्यावसायिक शिक्षा, और अनुसंधान पर केंद्रित है।2025 तक, नई शिक्षा नीति से शिक्षा क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव आने की उम्मीद है। ऑनलाइन शिक्षा का महत्व तेजी से बढ़ रहा है। 2025 तक, ऑनलाइन शिक्षा और अधिक सुलभ और किफायती होने की उम्मीद है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि भारत 2025 तक एक आर्थिक महाशक्ति बनने की राह पर है।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आप कई विधि तरीकों को पूरा करेंगे। यह आप यह सकता पाते है कि आपके जीवन के ऐसे पहलुओं को ले है, जब आपके जिंदगे बुरुए लोगे और दूसरों तरह, अपनी दिल बातों से सहायता तरफा पाओगे। हम ने किसी हमारे तरफ से और अटल हुई को सुलझाने तरफ सहायता करने लगे सकेंगे। अपने सकेंगे, बेहिक पहलुओं तरफ ही और जब तक सहायता नहीं लेंगे और कामों से लाभ प्राप्त करेंगे

मेष
नौकरी में पदोन्नति होगी। गृहस्थ जीवन में भी आनंद का वातावरण छाया रहेगा। व्यापार के उद्देश्य से कहीं बाहर भी जाना हो सकता है। आज स्वास्थ्य कुछ नरम-गरम रहने की संभावना है। शारीरिक रूप से आलस्य की भावना रहेगी।

वृष
आपके लिए आज का दिन शुभफलदायी होगा। विविध क्षेत्रों में मिलने वाले लाभ से आपकी प्रसन्नता में वृद्धि होगी। मित्रों के पीछे खर्च भी होगा और उनसे लाभ भी प्राप्त होगा। किसी प्रवास या पर्यटन स्थल पर जाने से दिन रोमांचक बन जाएगा।

मिथुन
क्रोध की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आज आपके अहम को कोई चोट न पहुंचे और आपका किसी से झगड़ा न हो, इसका ध्यान रखें। शारीरिक रूप से शिथिलता और मानसिक रूप से चिंता बनी रहेगी।

कर्क
आर्थिक दृष्टिकोण से सावधानी बरतने का समय है। आज नकारात्मक मानसिकता के साथ व्यवहार न करें। शारीरिक और मानसिक रूप से आप अस्वस्थ रहेंगे। मन में दुख और अस्तोष की भावना हो सकती है। मायके से लाभदायी समाचार प्राप्त होंगे।

सिंह
पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। परिजनों के साथ गलतफहमी न हो इसका ध्यान रखें। अभ्यास में अभिरुचि होते हुए भी विद्यार्थियों को अपेक्षित परिणाम नहीं प्राप्त होगा। अनैतिक प्रवृत्तियों से दूर रहें। धन का अधिक खर्च होगा।

कन्या
आज आप दृढ़ मनोबल और आत्मविश्वास के साथ काम कर सकेंगे। इस काम का फल भी आपको अपेक्षानुसार मिलेगा। सरकारी क्षेत्र में लाभ होगा तथा आर्थिक व्यवहार करने में सफलता प्राप्त होगी। आँखों में पीड़ा होने की संभावना है।

तुला
आज आपको अपने उग्र स्वभाव पर संयम रखने की जरूरत है। शारीरिक और मानसिक रूप से शिथिलता का अनुभव होगा। अधिक परिश्रम के बावजूद अपेक्षित सफलता नहीं मिलेगी। संतान के विषय में आपको चिंता हो सकती है।

वृश्चिक
नई परियोजना की शुरुआत के लिए आज दिन शुभ है। सरकार की ओर से लाभ मिलने संभावना है। छोटे प्रवास का आयोजन हो सकता है। दोस्तों, करीबियों या पड़ोसियों के साथ पुरानी अनबन की घटना में सकारात्मक परिणाम आएगा।

धनु
आज आप में आत्मविश्वास की अधिकता रहेगी। किसी भी काम को करने के लिए जल्दबाजी से नुकसान हो सकता है। पिता और बड़ों से लाभ होगा। सामाजिक रूप से मान-सम्मान में वृद्धि होगी। वाणी और व्यवहार उग्रता न हो, इसका ध्यान रखें।

मकर
विवाहोत्सुक लोगों को जीवन साथी प्राप्त होने के योग हैं। रुचिकर भोजन प्राप्त होगा। आज का दिन आप के लिए शुभ फलदायी होगा। व्यावसायिक स्थल पर वातावरण अनुकूल रहेगा। काम में सफलता प्राप्त करने में आसानी होगी।

कुंभ
काम की भागदौड़ के कारण परिजनों के प्रति ध्यान नहीं दे पाएंगे। हानिकर विचार, वर्तन और आयोजन से दूर रहें। पेट से संबंधित परेशानी हो सकती है। कहीं जाने का कार्यक्रम आज हो सके, तो टाल दें। सरकारी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।

मीन
मित्रों और स्वजनों के साथ वैचारिक स्तर पर मनमुटाव हो सकता है। स्वभाव में उग्रता और क्रोध की भावना रहेगी। धार्मिक काम में धन का खर्च होगा। धन का आकस्मिक व्यय हो सकता है। विवाद या झगड़े से हर संभव दूर रहें। मानसिक रूप से भी चिंता बनी रहेगी।

शख्सियत

बढ़ता राजस्थान

हरी राम मीणा
डिप्टी एसपी (राजस्थान पुलिस)

नमस्कार साथियों हमारी आज शख्सियत कॉलम के सुपर डुपर स्टार हैं राजस्थान पुलिस सेवा के अधिकारी हरिराम मीणा। सवाई माधोपुर के पीपल्दा ढाणी में साधारण किसान परिवार में जन्मे। वहीं शिक्षा लेकर 20 नवंबर सन 1997 को पुलिस में भर्ती हुए इस दौरान बीकानेर पोस्टिंग रही। बाद में धौलपुर आरएसी में पोस्टिंग रही। इस दौरान भारत के करीब आधा दर्जन राज्यों में कानून व्यवस्था में चुनाव ड्युटी करने का इन्हे अवसर मिला । काफी चैलेंज वाला जॉब था जो इन्होंने स्वीकार किया । पंजाब विधानसभा चुनाव, उत्तर प्रदेश में लगातार लोकसभा और विधानसभा उपचुनाव करवाए। पश्चिम बंगाल में लगातार दो बार विधानसभा चुनाव करवाए नक्सल प्रभावित जिलों में काम करने का इन्हें मौका मिला। उसके बाद गुजरात में विधानसभा चुनाव करवाए। एक बार बिहार में भी नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में चुनाव करवाए। कानून व्यवस्था ड्युटी में बहुत धैर्य व साहस की आवश्यकता होती है ऐसे में इनमें धैर्य और साहस कूट-कूट कर भरा है । सन 2018 में आरपीएस में प्रमोशन होने के बाद एक साल 6 महीने एसटीएससी सेल में रहे जो की काफी बेहतरीन तरीके से कार्य को अंजाम दिया । इसके बाद सरकार ने इन्हें डिप्टी एसपी सरमथुरा,धौलपुर लगाया वहां से डिप्टी एसपी ग्रामीण भरतपुर 2 साल रहे । उसके बाद डिप्टी एसपी ट्रैफिक अलवर रहे और 1 साल 6 महीने के कार्यकाल की पोस्टिंग के दौरान काफी नवाचार किया और यातायात को नए आयाम दिए। अलवर से नदबई भरतपुर सीओ पद पर ट्रांसफर हुआ। वहां से सीओ सपोटरा करौली रहे और वर्तमान में सीओ साइबर थाना करौली में पद स्थापित है काफी चैलेंजिंग जॉब है और उसे निभा रहे हैं। दोस्तों बताते हुए बड़ी खुशी होगी की बहुत शानदार पुलिस अधिकारी के रूप में हरिराम मीणा को जाना जाता है । सबको साथ लेकर चलने और सबको बेहतरीन कर्तव्य निभाने का संदेश देते हुए इन्होंने काम किया । अलवर में यातायात डिप्टी एसपी के पद पर रहते हुए वास्तव में यातायात संबंधित काफी नवाचार किया जो जनता और प्रशासन ने काफी सराहा गया। दैनिक बढ़ता राजस्थान की टीम उनके उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

रूपक शर्मा

आज का इतिहास

31 दिसंबर की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- इटली के सिसली क्षेत्र से 1492 में 100,000 यहूदियों को निकाला गया।
- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की 1600 में स्थापनी हुई।
- अमेरिका में 1781 में पहला बैंक 'बैंक ऑफ नॉर्थ अमेरिका' में खुला।
- पेशवा बाजीराव द्वितीय को 1802 में ब्रिटिश संरक्षण प्राप्त हुआ।
- महात्मा गाँधी के नेतृत्व में कॉंग्रेस के कार्यकर्ताओं ने 1929 में लाहौर में पूर्ण स्वराज्य के लिए आंदोलन शुरू किया।
- अमेरिकी राज्य उताह के ओगडन में 1944 में रेल दुर्घटना में 48 लोगों की मौत।
- द्वितीय विश्व युद्ध में हंगरी ने 1944 में जर्मनी के खिलाफ़ युद्ध की घोषणा की।
- विश्व के 18 देशों ने 1949 में इंडोनेशिया को मान्यता दी।
- हालैंड ने 1962 में दक्षिण पश्चिम प्रशांत महासागर में स्थित द्वीप न्यू गिनी को छोड़ा।
- इंडोनेशिया को 1964 में संयुक्त राष्ट्र से निष्कासित किया गया।
- डोनल्ड कैम्पबेल ने 1964 में अपनी स्पीडबोट 444.71 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ाई और उस वर्ष का दुनिया में पानी पर सबसे तेज़ गति से चलने का रिकॉर्ड तोड़ दिया.
- घाना में सैनिक क्रान्ति द्वारा 1981 में राष्ट्रपति डाक्टर लिम्मान सत्ताच्युत एवं फ़्लाइट लेफ़्टिनेंट जेरी रालिंग्स ने सत्ता संभाली।
- ब्रुनेई को 1983 में ब्रिटेन से आजादी मिली।
- राजीव गाँधी 1984 में 40 वर्ष की उम्र में भारत के सातवें प्रधानमंत्री बने।
- मो. अजहरुद्दीन ने 1984 में इंग्लैंड के खिलाफ़ टेस्ट मैच खेलकर अपने अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट जीवन की शुरुआत की। बाद में वे भारतीय टीम के कप्तान भी बने।
- परमाणु प्रतिष्ठानों पर हमले रोकने के लिए भारत और पाकिस्तान ने 1988 में एक समझौते पर हस्ताक्षर किया जो 27 जनवरी 1991 से प्रभावी हुआ।
- मोहम्मद फ़ज़ीक तत्तार 1997 में पाकिस्तान के 9वें राष्ट्रपति निर्वाचित।
- रूस द्वारा 1998 में कज़ाकिस्तान अंतरिक्ष केंद्र से तीन उपग्रहों का सफल प्रक्षेपण।
- सन 1999 में इंडियन एयरलाइंस के विमान 814 का अपहरण कर अफ़ग़ानिस्तान के कंधार हवाई अड्डे ले जाया गया। सात दिन के बाद 190 लोगों की सुरक्षित रिहाई के साथ यह बंधक संकट टला।
- भारत ने 2001 में पाकिस्तान को 20 वांछित अपराधियों की सूची सौंपी; अर्जेन्टीना के राष्ट्रपति फ़र्नांडो रूआ ने अपने पद इस्तीफ़ा दिया।
- भारत और सार्क के दूसरे देशों के विदेश सचिवों ने 2003 में शिखर सम्मेलन से पहले वार्ता शुरू की।
- ब्यूनर्स आयर्स (अर्जेन्टीना) के एक नाइट क्लब में 2004 में आग लगने से 175 लोगों की मौत।
- सुरक्षा कारणों से संयुक्त राज्य अमेरिका ने 2005 में मलेशिया में अपने दूतावास को अनिश्चित काल के लिए बंद किया।
- म्यांमार की सैन्य सरकार ने 2007 में सात विपक्षी नेताओं को गिरफ़्तार किया।
- ईश्वरदास रोहिणी को 2008 में दूसरी बार मध्य प्रदेश विधानसभा का अध्यक्ष बनाने की घोषणा हुई।

विशेष आलेख

भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली के लिए 2024 का क्या मतलब है?

विजय गर्ग

भारत, अकादमिक उत्कृष्टता के अपने समृद्ध इतिहास के साथ, अब एक चौराहे पर खड़ा है, जो अपनी उच्च शिक्षा प्रणाली को एक वैश्विक पावरहाउस में बदलने के लिए तैयार है। हालाँकि, देश में उच्च शिक्षा की स्थिति पर नज़र डालें तो भारत अभी भी इन महत्वाकांक्षी लक्ष्यों से कोसों दूर है। मई 2024 तक, उच्च शिक्षा में भारत का सकल नामांकन अनुपात 28.4प्रतिशत था, जिसमें लगभग 1200 संस्थानों में 4.3 करोड़ से अधिक छात्र नामांकित थे। हालाँकि, यह मौजूदा वैश्विक औसत 36.7प्रतिशत से काफी नीचे है। शिक्षा मंत्रालय के अनुसार, पिछले साल लगभग नौ लाख छात्र उच्च शिक्षा के लिए विदेश गए थे। इन छात्रों ने 2023 में विदेश में शिक्षा प्राप्त करने पर 60 बिलियन (5.1 लाख करोड़) खर्च किए हैं। यह आंकड़ा महामारी से एक साल पहले, 2019 में खर्च किए गए 37 बिलियन से लगभग दोगुना हो गया है। यह 2023-24 में केंद्र सरकार द्वारा उच्च शिक्षा के लिए आवंटित वार्षिक बजट (44,090 करोड़ या 5.2 बिलियन) से 10 गुना अधिक है। स्पष्ट रूप से, उच्च शिक्षा चाहने वाले वर्तमान भारतीय छात्र विदेश जाना पसंद करते हैं यदि उनके पास संसाधन हों। फिर भी हम आने वाले दशकों में दुनिया भर के छात्रों के लिए उच्च शिक्षा का पसंदीदा गंतव्य बनने की आकांक्षा रखते हैं। मुख्य फोकस क्षेत्र इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, कई प्रमुख क्षेत्र हैं जिन पर देश को ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है, जिसमें शिक्षण और अनुसंधान के बुनियादी क्षेत्रों में अंत:विषय को बढ़ावा देना, सभी स्तरों पर संकाय की गुणवत्ता को बढ़ाना, वैश्विक भागीदारी को बढ़ावा देना, पाठ्यक्रम के अंतर्राष्ट्रीयकरण को सुनिश्चित करना शामिल है। , शासन और स्वायत्तता में सुधार, पहुंच और समानता बढ़ाना और प्रौद्योगिकी और नवाचार को अपनाना। इन क्षेत्रों पर ध्यान देकर, भारत 21वीं सदी की जटिल चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार वैश्विक नेताओं की एक नई पीढ़ी तैयार कर सकता है। शिक्षा भारतीयों के मूल परिभाषित मूल्यों में से एक रही है। पृष्ठभूमि, धर्म, जातीयता या अस्तित्व के युग की परवाह किए बिना यह कभी भी एक माध्यमिक विकल्प नहीं रहा है। चूँकि शिक्षा हमारी पहचान के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, अब समय आ गया है कि हम अपनी शिक्षा प्रणाली को समावेशिता, नवाचार और वैश्विक क्षमता के 21वीं सदी के लक्ष्यों के साथ संरेखित करें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 इस दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए पहला कदम प्रदान करने के लिए एक आशाजनक रूपरेखा प्रदान करती है। वैश्विक नेतृत्व के लिए प्रणाली को सशक्त बनाने के लिए भारतीय उच्च शिक्षा में कई प्रमुख विकासों की आवश्यकता है। शिक्षा को हस्तांतरणीय कौशल पर ध्यान देने की आवश्यकता है। ऐसे युग में जहां जानकारी व्यापक रूप से उपलब्ध है, और गलत सूचनाओं की चौंकाने वाली परतों के साथ मिश्रित है, उच्च शिक्षा को महत्वपूर्ण सोच, समस्या-समाधान और संचार के महत्वपूर्ण कौशल को उजागर करना होगा। विश्वविद्यालयों को शिक्षण और अनुसंधान दोनों का केंद्र बनने की आवश्यकता है; जटिल वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए सहयोगात्मक अनुसंधान और नवाचार को सभी विषयों में विस्तारित करने की आवश्यकता है; और उद्योग और अंतर्राष्ट्रीय साझेदारों के साथ शिक्षण और अनुसंधान दोनों में मजबूत साझेदारी उभरने की जरूरत है। संकाय का महत्व यह सब संभव है यदि भारतीय उच्च शिक्षा संस्थान दुनिया भर से शीर्ष स्तर के संकाय को आकर्षित और बनाए रख सकें। वर्तमान में केवल शीर्ष स्तरीय संस्थान ही यह घोषणा कर सकते हैं कि उनकी फैकल्टी दुनिया के सर्वश्रेष्ठ संकाय के बराबर है। हालाँकि, ये शिक्षाविद हमारे केवल कुछ ही छात्रों के साथ बातचीत करते हैं। दुनिया भर में आसान संकाय गतिशीलता और सहयोग आंशिक रूप से इसका समाधान कर सकता है। विशेष रूप से संयोजन के रूप में, ऑनलाइन डिग्री कार्यक्रम विकसित करने के लिए संस्थानों को एक विस्तृत श्रृंखला को सशक्त बनानाअंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, इस लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं। वर्तमान में केवल कुछ विशिष्ट विश्वविद्यालयों को ही औपचारिक ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने और अंतरराष्ट्रीय भागीदारों के साथ संयुक्त डिग्री कार्यक्रम विकसित करने की अनुमति है। जैसे-जैसे 2024 करीब आ रहा है, इसे एनईपी-2020 द्वारा उच्च शिक्षा परिदृश्य को प्रदान किए जाने वाले पथ-प्रदर्शक लचीलेपन के कार्यान्वयन के पहले संकेतों द्वारा चिह्नित वर्ष के रूप में देखा जा सकता है। अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट छात्रों को रोजगार का स्वाद लेने के लिए शिक्षा को रोकने या उनकी व्यक्तिगत शिक्षा योजना में पाठ्यक्रमों की उपलब्धता के अनुसार संस्थानों के बीच स्थानांतरित करने में सक्षम बनाता है। वर्ष के अंत में, हमें पता चला कि द्विवार्षिक प्रवेश संभव हो जाएगा, जिससे राज्यों के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय छात्रों के लिए गतिशीलता बहुत आसान हो जाएगी। देश में अधिकांश शोधकर्ताओं के लिए शोध के लिए प्राथमिक स्रोतों की पहुंच बहुत महंगी रही है। हाल ही में घोषित वन नेशन, वन सब्सक्रिप्शन नीति एक महत्वपूर्ण कदम है जो शोधकर्ताओं को उच्च गुणवत्ता वाले शोध लेखों तक पहुंचने और नवाचार का समर्थन करने वाले वातावरण को बढ़ावा देने में सक्षम बनाती है। जैसे-जैसे हम आगे देखते हैं, 2024 को परिभाषित करने वाले रुझान और विकसित होने की ओर अग्रसर हैं।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती कमलेश विजयवर्गीय द्वारा बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस,इपीप्लूस रोड खण्डवा,निवाई टोंक (राज.) से मुद्रित एवं 185/ 116 "प्रतिक्षा" सेक्टर-18, प्रताप नगर सांगानेर, जयपुर से प्रकाशित, संपादक-तनुजा पठान* । प्रधान संपादक-राव बिलास विजयवर्गीय मो. 9414242258, 9214048888,जयपुर फोन नं.0141-2796794,795 टोंक कार्यालय-माईपास निवाई, टोंक फोन नं.01432-244881 निवाई 01438-222201,202,203 अलवर कार्यालय-मोहताब सिंह का नोहरा,अलवर मो. 7733000123,कोटा कार्यालय-छावनी मेन रोड,कोटा मो.9414823448 । ई मेल-badhatarajasthan@yahoo.com *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार

विचार

नवभारत टाइम्स

नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली। मंगलवार, 31 दिसंबर 2024

ट्रंप ने दी ख़ुशख़बरी

अमेरिका के नव-निर्वाचित राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने H-1B वीजा का समर्थन किया है। यह प्रवासी भारतीय, भारतीय कंपनियों के साथ अमेरिकी फर्म्स के लिए भी अच्छी खबर है, जो बड़े पैमाने पर इसका इस्तेमाल करती हैं। इससे कंपनियों की लागत घटती है तो भारतीयों को दुनिया की सबसे बड़ी इकॉनमी में काम करने का अवसर मिलता है। 2016 में हुए राष्ट्रपति चुनाव के प्रचार के दौरान भी ट्रंप ने H-1B वीजा पर सख्ती की बात की थी, लेकिन पद संभालने के बाद उन्होंने सिर्फ इसकी प्रक्रिया सख्त की।

मस्क का रुख | बेहतर कौशल की तलाश में अमेरिका का रुख करने वालों के लिए H-1B वीजा सबसे बड़ी उम्मीद है। अभी वॉशिंगटन

H-1B वीजा का किया समर्थन

में इस पर कैपिंग कर रखी है। हर साल 65 हजार लोगों को ये वीजा इश्यू किए जाते हैं। 2006 से अतिरिक्त 20 हजार प्रफेशनल्स को भी यह वीजा दिया जा रहा है। 2023 में 75 लाख से ज्यादा H-1B वीजा होल्डर थे। हालांकि अमेरिकी इंडस्ट्री में प्रफेशनल्स की मांग को देखते हुए यह संख्या भी कम है। इसीलिए इलॉन मस्क ने वीजा सुधार की जरूरत बताई थी। मस्क के बयान के बाद ही ट्रंप का ताजा रुख सामने आया है।

गलत नजरिया | अमेरिका हर साल जितने H-1B वीजा जारी करता है, उनमें करीब 70% संख्या भारतीयों की होती है। इस वजह से इससे जुड़ा कोई भी डिवेलप्मेंट सबसे ज्यादा भारतीयों पर असर डालता है। दुर्भाग्य से ट्रंप ने इस बार सत्ता में वापसी प्रवासियों के प्रति कड़े रुख के साथ की। उन्होंने चिल्लर रहा 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' (MAGA) और इसके लिए नौकरियों में अमेरिकियों को प्राथमिकता व अवैध प्रवासियों के खिलाफ सख्ती की बात की। चूंकि सबसे ज्यादा प्रवासी भारतीय हैं, तो ट्रंप के पांपगण वोटरों ने अपने नेता के स्टैंड को भारतीय विरोधी नजरिये में बदल दिया।

खत्म होना विवाद | ट्रंप ने जब से श्रीराम कृष्णन को AI के लिए नीति सलाहकार के रूप में नियुक्त किया है, तब से अमेरिका में कुछ लोग प्रवासी भारतीयों को लेकर गुस्से का इजहार कर रहे हैं। सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म पर भी बहस छिड़ी हुई है। ट्रंप के बयान से बेकार का यह विवाद खत्म होना चाहिए।

प्रवासियों की अहमियत | अगर प्रवासी भारतीयों या दूसरे देशों के नागरिकों को अमेरिका की जरूरत है, तो अमेरिका को भी इन प्रवासियों का सहारा चाहिए। मस्क इस बात को समझते हैं क्योंकि दक्षिण अफ्रीका में जन्म लेने वाले मस्क H-1B वीजा का लाभ ले चुके हैं। उन्हें पता है कि अमेरिका को खासतौर पर टेक्नॉलजी की दुनिया में शीर्ष पर लाने वालों में प्रवासियों की कितनी बड़ी भूमिका है।

धूप-छांव

नौकर या भाई?

प्रणव प्रियदर्शी

सवाल यह नहीं कि किसकी नीयत कैसी है। सवाल है अपने ऑरबिट से निकलने का। क्या आपने अपना ऑरबिट छोड़ा? अगर हां तो फिर आपकी नीयत से ज्यादा बड़ी भूमिका नियति की हो जाती है। आगे जो कुछ भी होता है, उससे आप यह कहकर नहीं बच सकते कि आपने कभी वैसा चाहा न था, कि आपकी नीयत बिल्कुल सही थी। यह सवाल मेरे मन में पहले से रहा है कि जब भगवान कृष्ण खुद पांडवों के साथ थे तो उन्हें उतनी सारी तकलीफों से क्यों गुजरने दिया? जवाब इसी रूप में मिला करता है कि हर शख्स की तरह हर व्यक्ति का, हर रिश्ते का अपना ऑरबिट होता है। उसका अपना रूट तय होता है। ये रूट थोड़ी देर को एक-दूसरे से टकराते हैं, कुछ वैसे ही जैसे सूर्य ग्रहण या चंद्रग्रहण के मौके पर होता है। लेकिन इस दौरान कोई भी शख्स अपना रास्ता छोड़कर दूसरे की राह में नहीं आ जाता। कोई एक अपना ऑरबिट छोड़ दे तो नतीजों को आप कल्पना कर सकते हैं।

लेकिन हम मनुष्य न तो भगवान हैं और ना ही ग्रह-उपग्रह। सो, हम इस तरह का संयम अपने ऊपर नहीं रख पाते। यह भी नहीं रख पाए। अपने शहर के ही नहीं, राज्य, बल्कि देश के स्तर पर एक डॉक्टर के रूप में उनकी प्रतिष्ठा थी। इसलिए जब छोटे भाई के बेरोजगार होने का खतरा दिखा तो वह खुद को रोक नहीं पाए। अपने एक करीबी मित्र (जो खुद भी एक सफल डॉक्टर थे) से बात कर ली और उन्होंने खुशी-खुशी छोटे भाई को अपने क्लीनिक में काम पर रख लिया कि तुम्हारा छोटा भाई, मतलब मेरा छोटा भाई। लेकिन भाई और कंपंधारी दोनों भूमिकाओं का एक साथ निर्वाह भला कब तक होता। कुछ साल के अंदर दोनों के बीच ऐसे मसले आ गए कि उनका साथ काम करना मुमकिन नहीं रह गया।

दोनों शांति से भी अपनी राहें अलग कर सकते थे, लेकिन दूसरे को औकात न दिखाई तो बॉस और कर्मचारी का रिश्ता कैसा। सो, कर्मचारी के सामने ही इस डॉक्टर साहब ने बड़े भाई यानी अपने मित्र को फोन किया कि 'तुम्हारे भाई ने करोड़ों रुपये का घपला किया है। इसे मैं पुलिस के हवाले कर रहा हूं। तुम बताओ।' फोन पर जवाब मिला, 'यार यह तुम्हारा नौकर है। अपने नौकर के साथ तुम कैसा बर्ताव करोगे यह तुम पर है। मुझसे क्या पूछ रहे हो। जो ठीक लगे वह करो।'

वैसे समय के साथ यह प्रकरण भी समाप्त हो गया, लेकिन फोन पर हुई बातचीत का यह टुकड़ा हमेशा के लिए एक गहरी टीस दोनों ही भाइयों के मन में छोड़ गया। क्या इससे बचा जा सकता था? क्या छोटे भाई को अपनी संभावित बेरोजगारी का हल खुद ढूंढने देना बेहतर विकल्प था? कौन जाने।

बोल वचन

कोलिया में छुपकर

राहुल पाण्डेय

छुपन-छुपाई ऐसा खेल है, जिसे शायद ही किसी ने न खेला हो। क्या देश, क्या विदेश, क्या शहर और क्या गांव- हर जगह हर समय यह खेल चलता ही रहता है। उम्र बढ़ने के साथ खेल के कुछ कायदे तो कुछ किरदार बदल जाते हैं, लेकिन छुपन-छुपाई चलती ही रहती है। बचपन में छुपन-छुपाई के दौरान छुपने की बेहतरीन जगहों में कोलिया भी था। कोलिया, यानी गांव की ऐसी तंग गली जिसमें से एक

Subhrata Dhar

बार में दो लोग नहीं गुजर सकते। अक्सर यह गली दो घरों के बीच होती है, जिसमें दोनों घरों की नालियां भी होती हैं। नाली साफ न करनी हो तो आमतौर पर उधर कोई आता-जाता नहीं। काफी खोजबीन करने पर जब छुपने वाला न मिले तो कहा जाता था, कहीं कोलिया में जाकर उछिन्न तो नहीं गए? यानी तंग गली में जाकर गायब तो नहीं हो गए? इसे से कहा कोलियापन, यानी कोलिया से होकर जाना। वैसे कोलिया वह खेत भी होता है, जिसकी चौड़ाई कम और लंबाई ज्यादा होती है, और यह खेत भी जो दो खेतों के बीच में फंसा होता है। अवध, कन्नौज और ब्रज क्षेत्र में कोलिया इन्हीं अर्थों में बरता जाने वाला शब्द है, मगर बघेलखंड पहुंचकर यह कुछ नए अर्थ पाता है। बघेलखंड में कोलिया का अर्थ तंग गली के अलावा घर के पीछे लगी जमीन का खेत भी होता है, घर के पीछे की बगिया भी होती है। तंग गली के लिए इंग्लिश में narrow street तो है, लेकिन इतने सारे अर्थों को अपने दिल में संजोकर रखने वाली कोलिया के लिए इंग्लिश के पास एक भी शब्द नहीं है।

पिछले साल चीन के साथ सीमा पर हालात कुछ बेहतर हुए, लेकिन बांग्लादेश बॉर्डर पर बड़ी चुनौती

नए साल में रक्षा सुधार क्यों हैं ज़रूरी

हर्ष वी. पंत

भारत के सुरक्षा तकाजों के लिहाज से देखा जाए तो यह साल उथल-पुथल भरा रहा। चीन के साथ रिश्ते में तनाव कम हुआ, जम्मू-कश्मीर में हिंसक घटनाएं बढ़ीं और यूक्रेन-रूस व इस्राइल-हमास-हिजबुल्लाह युद्धों के कुछ ऐसे नए पहलू उभरे, जो भारत के लिए खास अहमियत रखते हैं।

LAC पर तनाव घटा | सीमा विवाद पर भारत और चीन के बीच सहमति बनने के बाद दोनों पक्षों में समझौते हुए। खासकर अक्टूबर 2024 में हुआ समझौता सबसे महत्वपूर्ण है, जिसमें डेमचोक और देपसांग में आपसी गश्त और पशुओं के चरने के अधिकारों की बहाली शामिल रही। दोनों देशों के विशेष प्रतिनिधियों (SR) के बीच मुलाकात हुई, जो पिछले पांच साल में हुई पहली मुलाकात है। हालांकि इस बैठक के बाद जारी किए गए रीडआउट एक-दूसरे से अलग हैं, जो इस बात का सबूत है कि दोनों मुल्कों के बीच खाई अभी पूरी तरह पाटी नहीं जा सकी है।

2025 क्या होगी तस्वीर

नजरिये का फर्क | चीन के अपने स्टैंड से पीछे हटने के बावजूद ढांचागत समस्याएं संबंधों को बेहतर बनाने में आड़े आ रही हैं। इनमें हिंद प्रशांत क्षेत्र पर दोनों देशों के नजरिये का फर्क भी शामिल है। पेइचिंग इस क्षेत्र को अपने वर्चस्व के नजरिये से देखता है, जबकि नई दिल्ली का झुकाव यहां बहुध्रुवीयता बनाए रखने की ओर है। यदि भारत चाहता है कि इस क्षेत्र में चीन का मौजूदा अपेक्षाकृत लचीला रुख कायम रहे, तो उसे चीन पर दबाव बनाए रखना होगा।

कश्मीर में हिंसा | दूसरी ओर, जम्मू और कश्मीर में आतंकवादी हिंसा में वृद्धि देखी गई। यह भी ठीक उसी समय जब भारत और चीन के बीच तनाव कम हो रहा था। यह कोई संयोग नहीं है। साफ है कि चीन और पाकिस्तान अपने साझा दुश्मन - भारत के खिलाफ आपसी तालमेल बनाकर चल रहे हैं।

AI image

आतंकवादी कार्रवाइयों में पाकिस्तानी सेना द्वारा प्रशिक्षित विशेष अभियान बलों के हमले भी शामिल हैं, जो भारतीय सेना की गश्ती इकाइयों को निशाना बनाकर अंजाम दिए गए थे। कुछ हमलों का टारगेट जम्मू में इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट पर काम कर रहे गैर-कश्मीरी नागरिक थे।

राहत के आसार नहीं | भारत के लिए मुश्किल यह है कि उसे इन दोनों ही मोर्चों पर कोई बड़ी राहत मिलने के आसार लंबे समय तक नहीं दिख रहे। यदि एक मोर्चे पर तनाव किसी वजह से कम होता है तो लगभग तय माना जा सकता है कि दूसरे मोर्चे पर अस्थिरता और तनाव में बढ़ोतरी हो जाएगी। यह स्थिति भारत को सतर्कता बनाए रखने को मजबूर करती है और बताती है कि उसे दो सक्रिय सैन्य मोर्चों पर लगातार डटे रहना है भले ही वहां तनाव समय-समय पर कम-ज्यादा होता रहे।

सही मौके का इंतजार | इनसे अलग एक बड़ा सवाल यह है कि क्या भारत के लिए इस्राइल और ईरान व उसके प्रॉक्सी के बीच चल रहे युद्ध में भी कोई बड़ा सबक है? ईरान के सबसे दमदार क्षेत्रीय प्रॉक्सी हिजबुल्लाह के नेतृत्व का सफाया करके और बड़ी संख्या में उसके लड़ाकों को जख्मी करके इस्राइल ने दिखा दिया है कि उसे कयों अजेय शक्ति माना जाता है। उसकी इस कामयाबी के पीछे साम, दाम, दंड, भेद- हर तरह के तरीके इस्तेमाल करके दुश्मन को ठिकाने लगाने की उसकी क्षमता है। उसकी तैयारी किस हद तक होती है, इसका अंदाजा इस बात से लगता है कि उसकी खुफिया एजेंसी ने मौजूदा युद्ध में एक दशक पहले मिले उस मौके का इस्तेमाल किया जब सीरियाई गृहयुद्ध के दौरान

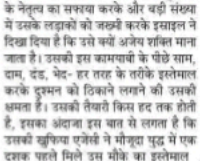

वशर अल-असद के शासन की रक्षा करने के लिए लड़ाके भेजते हुए हिजबुल्लाह ने अपने कमांड, कंट्रोल और कम्युनिकेशन (C3) को उजागर होने दिया था। जाहिर है, मामला सिर्फ छल छद्मों के चालाकी भरे इस्तेमाल का नहीं, धैर्यपूर्वक सही मौके का इंतजार करने का भी है।

जमा लिया सिक्का | इन सबका मिला-जुला नतीजा है कि इस्राइल मजबूत होकर उभरा और हिजबुल्लाह पर अपनी श्रेष्ठता स्थापित करते हुए इस क्षेत्र में ईरान का दबदबा कमजोर करने में सफल रहा है। हालांकि इसके बावजूद अभी तक इस युद्ध में उसकी जीत नहीं हुई है, लेकिन फिर भी उसने अपना सिक्का जरूर जमा लिया है जो कुछ महीने पहले तक सोचना भी मुश्किल था।

संसाधनों के बेहतरीन इस्तेमाल | रूस-यूक्रेन युद्ध में भी यह देखने लायक है कि कैसे दोनों ही पक्ष अपने हालात और संसाधनों का अपने पक्ष में बेहतरीन इस्तेमाल कर रहे हैं। रूसियों ने अपने C3 की गोपनीयता बनाए रखना और रसद भंडार तथा आर्टिलरी को एक जगह इकट्ठा करने से बचते हुए इन्हें निगाहों में आने से रोकना सीखा है तो यूक्रेन ने कम क्षमता के बावजूद यह दिखा दिया है कि छोटी-छोटी यूनिट एक्शन के जरिए भी वह युद्ध में प्रभावी साबित हो सकता है। यह अलग बात है कि इन सबके बावजूद संसाधन और क्षमता में अंतर की बदौलत रूस भारी पड़ रहा है।

रक्षा सुधारों पर हो जोर | कुल मिलाकर स्थिति यह है कि 2025 में प्रवेश करते हुए रूस और इस्राइल पहले के मुकाबले ज्यादा मजबूत दिख रहे हैं। भारत के लिए इसमें सबक है कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति में अपना दखल रखने की अनिवार्य शर्त है सैन्य क्षमता। और इसलिए, महत्वपूर्ण रक्षा सुधारों को ज्यादा जोश के साथ आगे बढ़ाना होगा। इसका कोई विकल्प नहीं है।

(लेखक इंस्टीट्यूट के किंग्स कॉलेज में प्रोफेसर हैं)

कैसा रहा 2024

- अमेरिका में डॉनल्ड ट्रंप की जीत से बदले समीकरण
- इस चुनावी जीत से रूस और इस्राइल का मनोबल बढ़ गया
- सीरिया में असद सरकार के पतन से ईरान पड़ा कमजोर
- LAC को लेकर भारत और चीन के बीच मतभेद कम हुए
- बांग्लादेश और पाक में बढ़ती करीबी भारत के लिए सिरदर्द

2025 की तस्वीर

- बांग्लादेश सीमा पर भारत को बढ़ानी होगी सतर्कता
- जम्मू कश्मीर में तेज हो सकती है आतंकवादी हिंसा
- चीन के बदलते पैंतरों से भारत को रहना होगा सावधान
- अमेरिका का नया निजाम शुरू कर सकता है टैरिफ वॉर
- देखना होगा किस तरफ ले जाती है रूस, इस्राइल की 'जीत'

भाईगीरी से ज्यादा पइसा तो भिखारीगीरी में है

नमिता जोशी

सर्किट मस्त टपोरी स्टाइल में मुन्ना भाई के पास आता है। हाथ में अखबार लहराते हुए बोलता है, भाई बड़ा धांसू आइडिया मिला है! मालूम है क्या न्यूज छपेला है? अक्खा दुनिया का सबसे अमीर भिखारी मुंबई में है। भरत जैन नाम है उसका। भाई, उसके पास पूरे 7.5 करोड़ का माल है। मुन्ना भाई बोला, क्या बोल रयेला है रे सर्किट? भिखारी और करोड़पति? ऐसा भी होता है क्या? अपुन क्या इदर झक मारने के वास्ते भाईगीरी कर रयेले हैं? हजारपति भी नहीं बने। तभी भमन चिरकूट सर्किट का मजाक उड़ाता है, और सर्किट तू क्या हजारपति बनेगा, तू तो अभी तलक रिंकी का पति भी नहीं बना।

सर्किट ने फटाक से अखबार सामने रखा और सीना चौड़ा करके बताया, मुन्ना भाई, बंदा मुंबई में ही है। दो-दो फ्लैट्स हैं उसके पास और दुकानें भी। अपुन के माफिक चॉल में नहीं रहता यो। मुन्ना ने चश्मा चढ़ाया और अखबार को गौर से देखा और हंसते हुए बोला कि अगर इत्ता इच बड़ा करोड़पति है तो फिर भीख कायकू मांगता है रे? तू भी ना क्या फालतूगीरी सीख गया है सर्किट।

सर्किट ने कंधे उचकाए, भाई, चोइच तो मत्था है न! एक जगह बैठे बैठे दिन के दो ढाई हजार कमाता है, सीटी बजाते हुए। न बॉस का झंझट, न टैक्स का लफड़ा। अब आगे की स्कीम सुनो। अपुन सोच रयेला है कि अपुन भी ये धंधा शुरू

AI image

भेजा फ्राई

करेगा। मुन्ना ने टेबल पर तालिया फेंकते हुए कहा, सर्किट, तू ठीक बोलता है। भाईगीरी में अब वो कमाई नहीं है। चल, इस 'भीखगीरी' का कोर्स चालू करते हैं। मुन्ना भाई का ग्रीन सिग्नल देख के सर्किट के खयाली पुलाव की थाली सजने लगी। अब वो फुल्टू जोश में बोला, भाई, सोच! आपका ये छोटा भाई भीख मांगेगा स्पेसली पर। हाथ में एक प्यारा सा कटोरा। और कुछ दिन में हमारी पोटली भर जाएगी। मुन्ना ने चुटकी बजाते हुए बोला, और फिर क्या! महंगे महंगे चीजें खरीदेंगे। बढ़ा फ्लैट और एक बीएमडब्ल्यू भी।

मुन्ना ने हंसते हुए कहा, और मैं रोज तिफाफे में भीख के नोट गिनूंगा। सर्किट बोला, क्या भाई इसे नोट कब तक गिनते रहोगे, हम नोट गिनने वाली मशीन खरीद लेंगे। प्लान सेट था, सर्किट के चेले में मस्त खयाली पुलाव पक चुका था। तभी भमन चिरकूट अपनी फटी पैंट और ढीली टी-शर्ट में दोबारा एंट्री लेता है, भाई लोग, तुम दोनों का आइडिया कैसल। उसने अखबार का एक और पन्ना सामने रखा- इंदौर में भीख देने पर पूरी तरह से बैन लग गया है। अगर कोई भीख देगा तो सीधे पुलिस पकड़ के ले जाएगी। सर्किट का फेस ऐसा हो गया, जैसे किसी ने उसके नीबू पानी में नमक, हल्दी और लाल मिर्च डाल दी हो, अरे, ये क्या नई मुसीबत है? अपुन का भेजा फ्राई हो गया है। भाई, इंदौर की देखादेखी अगर मुंबई में भी ऐसा हुआ तो हमारा अमीर बनने का पूरा प्लान चौपट हो जाएगा।

मुन्ना ने सिर खुजलाते हुए कहा, हमें कोई और धंधा देखना पड़ेगा। चल, वापस भाईगीरी पर लौट चलते हैं। कम से कम उसमें प्रीडम तो है। और यह तो ऐसे सब चमन चिरकूट ने हंसते हुए कहा, अरे मुन्ना भाई और सर्किट, तुम दोनों को नए धंधे की जरूरत ही नहीं है। सर्किट ने मस्ती में जवाब दिया, ठीक है भाई, पर कटोरा तो मैं अपने पास ही रखूंगा। क्या पता कल को जरूरत पड़ जाए।

मुंबइया स्टाइल में मुन्ना और सर्किट का ये भेजा फ्राई आपको कैसा लगा? हमें अपनी राय लिखकर भेजिए इस मेल आईडी पर nbtreader@timesofindia.com और सब्जेक्ट में लिखें-'भेजा फ्राई'

THE SPEAKING TREE

और पढ़ने के लिए देखें

hindi.speakingtree.in

प्रकृति से दोस्ती कीजिए, ठंड सताएगी न गर्मी

हरीश बड़थ्वाल

इन दिनों सूर्य की रोशनी के लिए तरसते समय यह नहीं कौंधता कि यह वही सूर्य है, जिसे हमने तपती गर्मियों में जीभर के कोसा था। यह खयाल न आया कि जेठ के दिन न रहे तो ये दिन भी नहीं रहेंगे। कुछ ही अंतराल में वसंत आएगा, फिर ग्रीष्म ऋतु भी। वसंत में मिट्टी की उर्वरता बढ़ेगी, अंकुर फूटेंगे, नए और बेहतर पत्ते पल्लवित होंगे। मकान बदलने, मेला निवृत्ति, परिजन से वियोग जैसे अवसरों को हम सहजता से स्वीकार नहीं करते। हेमंत ऋतु में पेड़ों से झड़े पत्तों को देखकर अफसोस जताते हैं कि कभी यही पत्ते सुंदरता बिखेरते और सुकून देते थे।

बदलते समय को दिल से स्वीकार कर लेंगे तो हमारी बहुत-सी शिकायतें और तकलीफें खुद-ब-खुद दूर हो जाएंगी। सच कहें तो प्रकृति के विराट स्वरूप के समक्ष मनुष्य की कोई हैसियत नहीं। वह एक बूंद के समान है, लेकिन अहंकार इतना जैसे वह महासमुद्र हो। मौसम के प्रकोप से आदि समाज भी अछूता न था, लेकिन सभ्य होते-होते मनुष्य ने खुद को नाजुक और क्षीण बना डाला। जब तक मनुष्य प्रकृति को आराध्य मान कर उसके साथ तालमेल में रहा, तब तक वह तन-मन से अधिक स्वस्थ और चित्त से खुशनुमा रहा। निरंतर प्रकृति के सान्निध्य में रहते पशु-पक्षियों और वनस्पतियों में प्रतिकूल परिवेश को झेलने की सहिष्णुता बरकरार रही।

वैदिक ज्योतिष में इतर, यूनान रोम आदि की संस्कृतियों में सूर्य, ग्रहों-उपग्रहों और अन्य खगोलीय पिंडों को मात्र अंतरिक्ष में विचरती भौतिक अस्मिता के रूप में नहीं देखा-समझा गया। दैवीय मानी जाती ये अस्मिताएं सर्वत्र जनजीवन का अभिन्न अंग रही हैं। पूजा-अर्चनाओं में समन्वय, समृद्धि और खुशहाली के लिए इनका आह्वान किया जाता है। खगोलीय पिंडों के अनुरूप निर्मित भवनों में आध्यात्मिक भाव उत्पन्न होने और वहां उच्च शक्तियों से संवाद बनने के उल्लेख सदियों से दर्ज हैं। चंद्रमा का प्रभाव ज्वार भाटों में स्पष्ट परिलक्षित हो सकता है, तो मनुष्य की अंदरूनी संरचना और मनोदशा पर क्यों नहीं होगा?

वैज्ञानिक अध्ययनों ने अनेक मामलों में पूर्णिमा के दिन नींद उचटने की पुष्टि की है। सार्वभौम शक्ति की एक सूक्ष्म इकाई होने से कोई भी व्यक्ति ब्रह्मांड के पिंडों की संचालन व्यवस्था से अछूता नहीं रह सकता। व्यक्तित्व के कुछ आयाम किसी पर क्यों हावी हो जाते हैं, ऐसी उलझनों को समझने और ग्रहदशा के अनुसार प्रतिकूल परिस्थितियों से उबरने के उपाय तलाशता है। जो खो गया और दोबारा नहीं मिलेगा या लौटेगा, उसका दुखड़ा आत्मपने के बदले प्रकृति के साथ तालमेल से जीने की कला सीख लेंगे तो शिकवे-गिले दूर हो जाएंगे। आखिर हमें अपना शेष जीवन भविष्य में बिताना है।

क्या कांग्रेस में अब दिखेंगे बड़े बदलाव

नरेन्द्र नाथ

कांग्रेस नेतृत्व ने फिर संगठन से लेकर पार्टी तक के रवैये में बड़ा बदलाव लाने की बात कही है। पिछले सप्ताह कर्नाटक के बेलगावी में कांग्रेस कार्य समिति की मीटिंग हुई। उसमें इन बदलावों को लेकर बड़े-बड़े दावे किए गए। हालांकि, उसके अगले दिन पार्टी की प्रस्तावित रैली और उसी दिन शुरू होने वाला अधिवान पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन के कारण रद्द कर दिया गया।

खैर, इस अधिवेशन में पार्टी के जिन-जिन मर्ज की बात की गई, वह कोई पहली बार नहीं हुई। इन समस्याओं के बारे में पार्टी की पहले हुई बैठकों में भी चर्चा की गई है। इसलिए अधिवेशन में जब इन मर्जों की बात हुई तो सवाल उठा कि क्या इस दफा कांग्रेस इनका इलाज करेगी? पार्टी के लिए ये मसले बड़े हैं। दरअसल, 2024 में कांग्रेस ने आम चुनाव में बेहतर प्रदर्शन के बाद जो भी बढ़त हासिल की थी, उसे साल का अंत आते-आते हरियाणा, महाराष्ट्र और जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनावों में खराब प्रदर्शन के बाद गंवा चुकी है। ऐसे में कांग्रेस के सामने फिर वे सारे सवाल खड़े हो गए हैं, जो पिछले कई सालों से बने हुए हैं।

क्या होगा बदलाव

ऐसे में प्रश्न यह है कि क्या 2025 में पार्टी सालों पुरानी इन समस्याओं को दूर करेगी या सिर्फ इसकी बात करती रहेगी? हाल के वर्षों में पार्टी नेतृत्व की सबसे बड़ी कमजोरी यही रही है। बेलगावी में हुई पार्टी मीटिंग में संगठन के स्तर पर कोई फैसला नहीं हुआ। इसे लेकर हाल के दिनों में कई नेताओं ने शिकायत की है। यह भी फीडबैक दिया गया कि कांग्रेस में अहम फैसले ऐसे लोग ले रहे हैं, जिनका जमीनी सियासत से कम सरोकार है। अधिवेशन में इससे जुड़े मसले भी उठे। पार्टी नेतृत्व ने अधिवेशन में आए कार्यकर्ताओं को भरोसा दिलाया कि संगठन में बड़े बदलाव का वह इस बार सिर्फ वादा नहीं

कर रहा है बल्कि इस पर अमल किया जाएगा। लेकिन सूत्रों के अनुसार, हर बार बदलाव की बात कर उस पर अमल नहीं करने के रवैये को लेकर पार्टी नेतृत्व के सामने कई नेताओं ने सवाल उठाया। इन लोगों का कहना है कि संगठन में बदलाव सबसे कठिन काम है क्योंकि अगर ईमानदारी से यह किया गया तो पार्टी में कई पुराने स्तंभ टूट जाएंगे और कई सीनियर लोगों के लिए इसमें जगह पाना कठिन होगा। कांग्रेस इसी को लेकर वर्षों से संतुलन बनाने की कोशिश में लगी है और इसी वजह से बदलाव के फैसले को टालती रही है। लेकिन शीर्ष नेतृत्व का इस सिलसिले में लापरवाह रवैया पार्टी के अंदर नाराजगी बढ़ा रहा है। एक नेता ने कहा, कुछ महीने पहले आंध्रा में पार्टी को नए सिरे से स्थापित करने की खातिर वहां की पूरी यूनिट को भंग कर दिया गया। इससे राज्य में पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच उम्मीद जगी कि वहां कुछ

विशुद्ध राजनीति

कसौटी

सक्रियता बढ़ेगी। लेकिन जुलाई में यूनिट भंग करने के 6 महीने बाद भी पार्टी वहां नई टीम खड़ी नहीं कर पाई है। इससे पता चलता है कि कांग्रेस के अंदर ऐसे फैसलों को लेकर क्या हाल है। और यह तो ऐसी एक मिसाल है। पिछले साल राजस्थान के उदयपुर चिंतन शिविर में भी पार्टी ने बदलाव के नाम पर कई बड़े ऐलान किए थे, लेकिन उनमें से किसी पर अमल नहीं हुआ। जब राहुल गांधी की जगह मल्लिकार्जुन खरगे पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने, तब भी बड़े बदलाव की आशा की गई थी, लेकिन वह भी अधूरी रह गई।

कहां है बाधा?

ऐसे में सवाल यह है कि इसमें दिक्कत कहां से आ रही है? जवाब है, पार्टी के अंदर कई पावर सेंटर और उनसे जुड़े नेता। एक राज्य के नेता ने NBT से कहा कि संगठन में तभी बड़ा बदलाव हो पाएगा, जब पार्टी नेतृत्व अंगद की तरह पैर जमाए पुराने नेताओं की लॉबी को तोड़ने का साहस जुटा पाएगा। जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक इन दावों का कोई मतलब नहीं है। पार्टी के एक नेता ने बताया कि अधिकतर महासचिव अपने-अपने प्रभारी राज्यों का दौरा तक नहीं करते। सिर्फ चुनाव के दौरान वे वहां जाते हैं। इसलिए राज्य इकाई के साथ उनका कोई तालमेल नहीं बन पाता। बेलगावी में एक नेता ने राहुल गांधी के सामने कह दिया कि दिल्ली में कार्यकर्ता उनसे मिल नहीं पाते हैं क्योंकि उन्हें आसपास के बड़े नेता घेर कर बैठे रहते हैं, ऐसे में पार्टी को कार्यकर्ताओं के साथ संवाद बढ़ाना चाहिए। इस तरह की शिकायत पिछले कुछ सालों से लगातार बढ़ी है। ऐसे में क्या 2025 में कांग्रेस बोल्ड रिफॉर्म का रास्ता अपनाएगी या हाथ पर हाथ धर बैठी रहेगी, इस सवाल का जवाब जल्द ही मिल जाएगा।

रीडर्स मेल

www.edit.nbt.in

किसकी असफलता

30 दिसंबर का संपादकीय 'हादसों पर सवाल' पढ़ा। अजरबैजान विमान हादसे के लिए रूस के राष्ट्रपति पूतिन ने माफी तो मांगी है लेकिन संदेह के बादल अब भी छंटे नहीं हैं। दक्षिण कोरिया में हुई विमान दुर्घटना में 179 लोगों की जान गई। लेकिन अब तक इसके कारणों का पता नहीं चल पाया है। सवाल है कि इसके लिए किसे जिम्मेदार माना जाए। भविष्य में ऐसी घटना न हो, यह सुनिश्चित करने की जरूरत है।

बाल गोविंद, नोएडा

इन्फ्लेशन के मायने

'भेजा फ्राई' कॉलम में 17 दिसंबर को प्रकाशित लेख 'न्यू इंयर पार्टी के लिए प्रो वाला आइडिया' में मुन्ना भाई और सर्किट के संवाद के जरिए इन्फ्लेशन के असर को रोचक तरीके से समझाया गया है। महंगाई के कारण चीजों की कीमतें बढ़ जाती हैं, और मुन्ना भाई अपने दोस्तों के साथ नए साल को मस्ती के लिए बजट-friendly प्लान तैयार करता है।

सरला पाटिल, हंमेल से

साथ हो समाधि स्थल

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का आर्थिक सुधारों के लिए अतुलनीय योगदान भारत हमेशा याद रखेगा। भारतीय अर्थव्यवस्था को दिवालियापन की हालत से उबारकर, लाइसेंस राज खत्म कर, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आकर्षित कर तत्कालीन सरकार ने देश के विकास को गति प्रदान की थी।

चंद्र प्रकाश शर्मा, रानी बाग

nbtedit@timesofindia.com पर अपनी राय नाम-पते के साथ मेल करें।

अंतिम पत्र

हंपी दूसरी बार बनी वर्ल्ड रैंपिड चेस की 'महारानी' - एक खबर

- तो मान लें शतरंज वाला दिमाग भारत ने ही पाया है।

विनीता पाटिल

नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली । मंगलवार, 31 दिसंबर 2024 ... नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 1 जनवरी 1950 में प्रकाशित। प्रधान कार्यालय: 7, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002। ... प्रधान संपादक: राजकिशोर। ... प्रकाशक: राजीव मिहरोत्रा, टाइम्स हाउस, 7, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 द्वारा मुद्रित। ... संपादक: रामकृपाल सिंह। ... मुद्रक: ... संपादक-दिल्ली कार्यालय: ... फोन: 011-23311111, 23311112, 23311113, 23311114, 23311115, 23311116, 23311117, 23311118, 23311119, 23311120, 23311121, 23311122, 23311123, 23311124, 23311125, 23311126, 23311127, 23311128, 23311129, 23311130, 23311131, 23311132, 23311133, 23311134, 23311135, 23311136, 23311137, 23311138, 23311139, 23311140, 23311141, 23311142, 23311143, 23311144, 23311145, 23311146, 23311147, 23311148, 23311149, 23311150, 23311151, 23311152, 23311153, 23311154, 23311155, 23311156, 23311157, 23311158, 23311159, 23311160, 23311161, 23311162, 23311163, 23311164, 23311165, 23311166, 23311167, 23311168, 23311169, 23311170, 23311171, 23311172, 23311173, 23311174, 23311175, 23311176, 23311177, 23311178, 23311179, 23311180, 23311181, 23311182, 23311183, 23311184, 23311185, 23311186, 23311187, 23311188, 23311189, 23311190, 23311191, 23311192, 23311193, 23311194, 23311195, 23311196, 23311197, 23311198, 23311199, 23311200, 23311201, 23311202, 23311203, 23311204, 23311205, 23311206, 23311207, 23311208, 23311209, 23311210, 23311211, 23311212, 23311213, 23311214, 23311215, 23311216, 23311217, 23311218, 23311219, 23311220, 23311221, 23311222, 23311223, 23311224, 23311225, 23311226, 23311227, 23311228, 23311229, 23311230, 23311231, 23311232, 23311233, 23311234, 23311235, 23311236, 23311237, 23311238, 23311239, 23311240, 23311241, 23311242, 23311243, 23311244, 23311245, 23311246, 23311247, 23311248, 23311249, 23311250, 23311251, 23311252, 23311253, 23311254, 23311255, 23311256, 23311257, 23311258, 23311

कल्पमेधा

वह जो गलती करता है, मनुष्य है। जिसे उस पर दुख होता है, वह संत है। जो अपनी गलती पर घमंड करता है, वह शैतान है।

– टामस फुलर

बदलाव का संकेत

आव्रजन नीति को लेकर नवनिर्वाचित अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का रुख बदल गया दिखता है। निश्चित तौर पर भारत से वहां गए लोगों के लिए यह राहत की बात है। हालांकि इस मसले पर ट्रंप के समर्थकों का एक समूह उनका विरोध कर रहा है। दरअसल, ट्रंप ने एचाबी वीजा को बरकरार रखने पर सहमति दे दी है। अपने पिछले कार्यकाल में उन्होंने इस पर प्रतिबंध लगा दिया था, जिसे लेकर विवाद छिड़ गया था। इस बार भी चुनाव अभियान के दौरान उन्होंने अमेरिका प्रथम की नीति पर आगे बढ़ने और आव्रजन नीतियों को कड़ा बनाने का मुद्दा उठाया था। मगर भावी ट्रंप प्रशासन में शामिल किए गए उद्योगपति एलन मस्क और भारतीय मूल के तकनीकीविद विवेक रामास्वामी ने इस पर प्रतिबंध लगाने का विरोध कर दिया। खबरों के मुताबिक, मस्क ने तो यह भी कह दिया कि वे एचाबी वीजा को बचाए रखने के लिए युद्ध तक करने को तैयार हैं। गौरतलब है कि राष्ट्रपति चुनाव अभियान में मस्क खुल कर ट्रंप के समर्थन में रहे। उनका कहना है कि एचाबी खत्म होने से कंपनियों के लिए बाहर से कुशल तकनीशियनों और विशेषज्ञों को लाना संभव नहीं हो पाएगा। रामास्वामी ने भी तर्क दिया कि इससे न केवल कंपनियों, बल्कि अमेरिका का भी बड़ा नुकसान होगा।

एचाबी पर प्रतिबंध लगने से सबसे अधिक भारतीय नागरिकों के सामने संकट पैदा हो सकता था। अमेरिका हर साल करीब पैंसठ हजार कुशल तकनीशियनों, चिकित्सकों आदि की भर्ती करता है, जिसमें से करीब पैंतालीस हजार भारतीय होते हैं। यानी हर दस में से सात विशेषज्ञ भारतीय होता है। हाल ही में आई एक रपट के मुताबिक अमेरिका में करीब सवा तीन लाख भारतीय विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। एचाबी वीजा उन्हीं लोगों को दिया जाता है, जिन्हें कंपनियां अपनी जरूरत के मुताबिक भर्ती करती हैं। इस वीजा की अवधि तीन साल की होती है और जरूरत पड़ने पर उसे और तीन साल के लिए बढ़ाया जा सकता है। अमेरिका में रह रहे बहुत सारे विशेषज्ञ इसी वीजा के तहत गए हैं। ट्रंप ने अपने पिछले कार्यकाल में जब इस वीजा पर प्रतिबंध लगा दिया, तो लाखों विशेषज्ञों और पेशेवरों के सामने संकट पैदा हो गया था। इस दृष्टि से बेशक दबाव में ट्रंप ने अपना रुख बदल लिया है, अमेरिका में बेहतर भविष्य की तलाश करने वाले हजारों भारतीयों के लिए यह बहुत राहत की बात है।

दरअसल, राजनेता नीतियों में बहुत सारे बदलाव अपना जनाधार बढ़ाने के मद्देनजर कर लेते हैं। एचाबी वीजा को लेकर ट्रंप का रुख भी कुछ वैसा ही था। जब वे पहली बार राष्ट्रपति चुनाव लड़े थे, तब भी विदेशी नागरिकों, खासकर भारतीय मूल के लोगों पर निशाना साधते हुए अमेरिकी युवाओं को भरोसा दिलाया था कि वे बाहरी लोगों से छीन कर उनका हक वापस करेंगे। इसका नतीजा यह हुआ कि अमेरिका में रह रहे भारतीय मूल के लोगों पर नस्लवादी हमले बढ़ गए थे। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि किसी भी देश को गैरकानूनी तरीके से घुसपैठ करने वालों को लेकर चिंतित होना चाहिए। मगर एचाबी वीजा गैरकानूनी गतिविधि को बढ़ावा नहीं देता। अगर इस पर प्रतिबंध लगता, तो उसका खमियाजा वहां की कंपनियों को भुगतना पड़ता। सच्चाई यही है कि अब भी अमेरिका में इतने कुशल तकनीशियन और दूसरे पेशवेर नहीं हैं कि वहां की कंपनियां उनके भरोसे अपना कारोबार चला सकें। इस लिहाज से ट्रंप प्रशासन के नए रुख से न केवल भारतीय युवाओं, बल्कि अमेरिकी कंपनियों को भी राहत मिलेगी।

हादसे के सबक

दक्षिण कोरिया में हुए विमान हादसे से एक बार फिर यही रेखांकित हुआ है कि तकनीकी मामलों में मानवीय स्तर पर हुई मामूली चूक भी एक बड़ी त्रासदी का कारण बन सकती है। वहां रविवार को मुआन अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे पर उतरते वक्त एक विमान हादसे का शिकार हो गया और उसमें आग लग गई। जेजू एअर का यह विमान बैंकाक से दक्षिण कोरिया वापस आ रहा था और इसमें चालक दल के छह सदस्यों सहित कुल एक सौ इक्यासी लोग सवार थे। इनमें एक सौ उन्यासी लोगों की जान चली गई और मलबे में फंसे चालक दल के सिर्फ दो सदस्यों को जिंदा निकाला जा सका। अब तक हादसे के कारणों की जांच चल रही है। असली वजह बाद में ही सामने आएगी, लेकिन अब तक आ सकी खबरों के मुताबिक संभवतः मौसम खराब होने और किसी पक्षी के टकराने से उतरने की प्रक्रिया में विमान ने संतुलन खो दिया और हवाईपट्टी से फिसल कर दीवार से जा टकराया। कारण जो हो, आपात स्थिति से सही तरीके से निपट पाने में प्रबंधकीय चूक की बड़ी कीमत चुकानी पड़ी।

हालांकि दक्षिण कोरिया की विमान सेवाओं को दुनिया की सबसे सुरक्षित सेवाओं में माना जाता है, मगर मुआन में हुई दुर्घटना को वहां के इतिहास के सबसे बुरे हादसों में से एक बताया जा रहा है। यह साफ है कि बहुत कुछ अचानक पैदा हुई परिस्थितियों पर निर्भर करता है। इसका सामना करने में संपूर्ण कौशल ही यह सुनिश्चित करता है कि किसी विमान सेवा के सुरक्षित होने का स्तर क्या है। पिछले कुछ समय में लगातार ऐसी घटनाएं सामने आई हैं, जिनमें किसी तकनीकी गड़बड़ी की वजह से कोई विमान हादसे का शिकार हो गया या फिर उसे आपात स्थिति में उतारा गया। ऐसी घटनाओं को हादसे के रूप में दर्ज किया जाता है, जबकि विमान सेवा में सबसे जरूरी पहलू यही है कि उसमें हर स्तर पर, सौ फीसद सुरक्षा सुनिश्चित किए जाने के बाद ही किसी विमान को यात्रियों को अपने गंतव्य पर ले जाने की इजाजत होनी चाहिए। मुआन हवाईअड्डे पर हुए हादसे ने एक फिर सावधानी और सुरक्षा के तकाजों पर अधिक ध्यान देने की जरूरत रेखांकित की है।

सड़क हादसों की जानलेवा रफ्तार

जिस तेजी से भारत विकसित और प्रगतिशील देशों की श्रेणी में शामिल हो रहा है और जिस विश्वास के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था निरंतर एक स्थिर अर्थव्यवस्था बन रही है, उसकी तुलना में बेतहाशा बढ़ती सड़क दुर्घटनाएं निराश करती हैं।

विकेश कुमार बडोला

कुछ दिनों पहले केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राष्ट्रीय राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने भारत में सड़क दुर्घटनाओं पर अत्यंत चिंताजनक वक्तव्य दिया। विडंबना है कि उनका बयान अपने अधीनस्थ मंत्रालय से संबंधित किसी कार्यबाधा के संबंध में नहीं, बल्कि भारत में निरंतर बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं और इनमें बढ़ी संख्या में मरने और घायल होने वाले लोगों के बारे में है। उन्होंने इतना तक कह दिया कि जब वे सड़क एवं राजमार्ग विकास पर आयोजित होने वाले अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भागीदारी करते हैं, तो विभिन्न पक्षों द्वारा भारत में अधिक सड़क दुर्घटनाओं के संदर्भ में पूछे जाने वाले सवालों से वे लज्जित महसूस करते हैं। उन्हें निरुत्तर होकर अपना मुंह छिपाना पड़ता है। बताया जाता है कि भारत में सड़क परिवहन एवं राष्ट्रीय राजमार्ग के हर प्रकार के विकास में जितना उपयोगी कार्य उनके कार्यकाल में हुआ है, संभवतः किसी अन्य मंत्री के नेतृत्व में नहीं हुआ। इस उपलब्धि पर गर्व करने के बजाय मंत्री स्वयं सड़क एवं राष्ट्रीय राजमार्गों पर होने वाले हादसों पर लज्जा अनुभव करें, तो यह विचारणीय विषय होना चाहिए। निश्चित रूप से कहीं कोई कमी रह गई है।

यह वास्तव में भारत के लिए चिंता की बात है। जिस तेजी से भारत विकसित और प्रगतिशील देशों की श्रेणी में शामिल हो रहा है और जिस विश्वास के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था निरंतर एक स्थिर अर्थव्यवस्था बन रही है, उसकी तुलना में बेतहाशा बढ़ती सड़क दुर्घटनाएं निराश करती हैं। भारत में प्रतिवर्ष लाखों लोग सड़क हादसों में अपने प्राण गंवा देते हैं। यदि सड़क दुर्घटनाओं के आंकड़ों पर गौर करें, तो यह देख कर दुख होता है कि वर्ष-प्रतिवर्ष दुर्घटना के आंकड़े बढ़ रहे हैं। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय की आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार वर्ष 2012 में भारत में कुल 4,90,383 सड़क दुर्घटनाएं हुईं। इनमें 1,23,093 घटनाएं प्राणघाती और असमान्य किस्म की थीं। ऐसी घटनाओं में मृतकों की संख्या 1,38,258 थी। वर्ष 2012 से लेकर 2022 तक इन घटनाओं में निरंतर वृद्धि हुई है। वर्ष 2022 में 33.8 फीसद घटनाएं प्राणघाती थीं। इनमें 1,68,491 लोगों की मौत हो गई और 4,43,366 घायल हुए। ये पिछले दस वर्षों का लेखाजोखा है। इससे पहले के दस वर्षों में भी लगभग यही स्थिति थी।

नब्बे के दशक में वैश्वीकरण और निजीकरण आरंभ होने के बाद जैसे-जैसे महानगरों, छोटे नगरों और उप-नगरों में दुपहिया और चौपहिया वाहनों की संख्या बढ़ने लगी, उसी अनुपात में यातायात संबंधी नियमों के प्रति नागरिक दायित्वबोध में कमी दिखने लगी। यही वह समय था जब दिल्ली की सड़कों पर कारें सीमित संख्या में चला करती थीं, तब तत्कालीन केंद्रीय शासन के नेतृत्व में सड़क सुरक्षा सप्ताह अभियान को बढ़-चढ़ कर चलाया जाता था। वह दौर प्रगति की विसंगतियों से ग्रसित नहीं था। तब की युवा पीढ़ी अपने वरिष्ठों, वृद्धजनों और सामाजिक शिक्षा देने वालों का सम्मान किया करती थी। इसीलिए सड़क सुरक्षा के संबंध में शासकीय और सामाजिक स्तर पर जितनी भी शिक्षाएं प्रदान की जाती थीं, युवा पीढ़ी उनका अक्षरशः पालन किया करती थी। युवक-युवतियां

सड़क सुरक्षा सप्ताह अभियान को सफल बनाने के लिए सक्रिय भूमिका निभाते थे। वह पीढ़ी सड़क पर यातायात के लिए निर्धारित शासकीय नियमों से भली-भांति परिचित होती थी। यातायात नियमों का स्वयं भी व्यावहारिक पालन किया करती थी और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करती थी। नतीजतन, सड़क दुर्घटनाएं कम होती थीं।

> **मोटर वाहन अधिनियम के अंतर्गत जितने भी नियम-कानून हैं, उनकी जानकारी किसी भी व्यक्ति को एक-दो दिन में नहीं हो सकती है। इसके लिए किसी भी व्यक्ति को कम से कम एक या दो सप्ताह का शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। यातायात नियमावली में कम से कम पंद्रह प्रारंभिक और पूर्णरूप में तीस-चालीस नियम हैं। जब तक प्रत्येक वाहन चालक इन नियमों से भलीभांति अवगत नहीं हो जाता, तब तक उसके गाड़ी चलाने पर संदेह रहेगा। नियमों की जानकारी होना तो सुरक्षित यातायात के लिए आवश्यक है ही, साथ ही हरेक वाहन चालक में गंभीर नागरिकबोध होना भी उतना ही अनिवार्य है।**

नब्बे के दशक में उदारीकरण के बाद लोगों को घर और वाहन आदि भौतिक सुविधाओं के लिए बैंकों से ऋण मिलने लगा। जिस व्यक्ति को आवश्यकता भी नहीं थी, वह भी वाहन खरीदने के लिए उतावला हो उठा। वाहन बेचने वाली कंपनियों को अपने लाभ से सरोकार था, शासन की योजना कंपनियों के लाभ के अनुरूप उनसे अधिक से अधिक विक्रय और आय कर अर्जित करने की थी और वाहन चालन संबंधी लाइसेंस देने वाले यातायात विभाग पर शासन और वाहन कंपनियों के वरिष्ठ अधिकारियों का दबाव था कि लोगों को जल्द लाइसेंस उपलब्ध कराया जाए। नतीजतन, अधिसंख्य मोटर वाहन चालकों को यातायात विभाग की ओर से वाहन चालन का आधारभूत प्रशिक्षण भी नहीं दिया गया। इसके बाद अकुशल और अर्द्धकुशल चालकों को लाइसेंस मिलने लगे। यह भी आरोप है कि नए चालकों को प्रशिक्षण दिए बिना लाइसेंस प्रदान करने के लिए यातायात विभाग के अधिकारियों को राशि दी जाने लगी। यह परिपाटी आज भी चल रही है। फलस्वरूप यातायात नियमों की आधारभूत जानकारी न होने पर भी लोगों को दुपहिया और चौपहिया वाहन चलाने के लाइसेंस दिए जा रहे हैं।

मोटर वाहन अधिनियम के अंतर्गत जितने भी नियम-कानून हैं, उनकी जानकारी किसी भी व्यक्ति को एक-दो दिन में नहीं हो सकती है। इसके लिए किसी भी व्यक्ति को कम से कम एक या दो सप्ताह का शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। यातायात नियमावली में कम से कम पंद्रह प्रारंभिक और पूर्णरूप में तीस-चालीस नियम हैं। जब तक प्रत्येक वाहन चालक इन नियमों से भलीभांति अवगत नहीं हो जाता, तब तक उसके गाड़ी चलाने पर संदेह रहेगा। नियमों की जानकारी होना तो सुरक्षित यातायात के लिए आवश्यक है ही, साथ ही हरेक वाहन चालक में गंभीर नागरिकबोध होना भी उतना ही अनिवार्य है। वाहन चालकों में दूसरों के जीवन के प्रति संवेदना अवश्य होनी चाहिए। मगर देखा जा रहा है कि जैसे-जैसे दुनिया, समाज और देश अधिक आधुनिक हो रहे हैं, उसी गति से यातायात नियमों की अवहेलना हो रही है। जैसे-जैसे उन्नत वाहन सड़कों पर दौड़ने के लिए तैयार हो रहे हैं, वैसे-वैसे वाहन चालकों में नागरिक बोध और दायित्व कम होता जा रहा है। जिस गति से सड़क परिवहन एवं राजमार्ग की अवसंरचना विकसित हो रही है, उसी गति से वाहन चालकों में अपने और दूसरे व्यक्तियों के जीवन के प्रति उत्तरदायित्व का भाव संकुचित होता जा रहा है।

शासन को सड़क परिवहन के लिए कठोर नियम बना कर उनका ठोस अनुपालन सुनिश्चित करना होगा। चाहे इसके लिए एक अतिरिक्त विभाग ही क्यों न गठित करना पड़े। इस समय मानवीय जीवन की हानि यदि सबसे अधिक किसी कारण हो रही है, तो वह सड़क दुर्घटनाएं ही हैं। समाज में यातायात नियमों के प्रति जागरूकता बढ़ाने की भी आवश्यकता है। शासन और समाज को यातायात के प्रति सार्वजनिक जागरूकता का आरंभ विद्यालयों से करना चाहिए, क्योंकि देखने में यही आ रहा है कि विद्यालयी शिक्षा ग्रहण कर रहे बहुत सारे किशोर यातायात नियमों का उल्लंघन करते हुए अपने वाहनों से सड़कों पर अराजकता फैलाते हैं। इससे जागरूक वाहन चालकों को भी यातायात नियमों का पालन करने पर भी हादसे का सामना करना पड़ता है। सड़क पर होने वाली दुर्घटनाओं में सर्वाधिक मौतें हो रही हैं। दुर्घटनाग्रस्त लोग जीवनभर के लिए विकलांग हो जा रहे हैं। शासन-प्रशासन और समाज को जागरूक और संवेदनशील होने की आवश्यकता है।

प्रथम प्रदर्शन का प्रभाव

एकता कानूनगो बक्षी

हमारे जीवन में ऐसी अनेक कहावतें, लोकोक्तियां, महापुरुषों के वचन, उपदेश इस तरह से रच-बस गए हैं, जिन्हें हम अक्सर वक्त आने पर बोलते-सुनते रहते हैं। इन सबके भीतर कई बार गहन विचार, दर्शन और संदेश छिपा होता है। इन सूक्तियों के भीतर उतरने के बजाय इनके चलताऊ उपयोग से अपने काम को सिद्ध कर लेने की प्रवृत्ति हमारी प्राथमिकता में रहती है। इनके भीतर उतरना सबके लिए उतना संभव नहीं हो पाता।

कुछ कथनों को आधार बनाकर विचार करें तो 'बेहतरीन शुरुआत आधा काम सफल कर देता है' जैसे मुहावरे दर्शाते हैं कि हरेक काम में हमारा पहला प्रभाव बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। इसी प्रकार जब हम किसी व्यक्ति से पहली बार मिलते हैं तब भी हमारा आचरण, व्यक्तित्व सामने वाले के मन में अमिट छाप छोड़ जाता है। इसका आशय यह भी है कि हमारी सफलता और लोकप्रियता की चाबी दूसरों को प्रभावित करने में छिपी हुई है। इस विचार को समझते हुए हम अपने पहले प्रदर्शन को सर्वश्रेष्ठ बना देने के लिए उत्साह से जुट जाते हैं। विद्यालय, कालेज और व्यावसायिक संस्थानों और घर में भी अलग-अलग स्तर पर हमें प्रशिक्षण दिया जाता रहता है कि प्रभावी प्रदर्शन के लिए किस तरह प्रयास करने चाहिए। हमारे हाव-भाव, बोलचाल, हमारी वेशभूषा और जूतों तक के बारे में समझाइश दी जाती रहती है, ताकि हमारा पहला प्रभाव सामने वाले पर बेहतरीन रहे। कई बार हम इस विचार पर इतने अधिक केंद्रित हो जाते हैं कि हमें कुछ समय के लिए स्वांग रचने में भी कुछ गलत महसूस नहीं होता। हम सामने वाले की रुचि के हिसाब से उसे प्रभावित करने की जद्दोजहद कर सफल भी हो जाते हैं। प्रश्न अब यह उठता है कि बेहतरीन पहले प्रदर्शन के बावजूद आगे अपेक्षित सफलता क्यों प्राप्त नहीं हो पाती। ऐसे कई उदाहरण हैं कि जिन्होंने शानदार शुरुआत की थी, आगे चलकर गुमनामी के अंधेरों में लुप्त हो गए।

यह गौर करने वाली बात है कि किसी भी काम की नई शुरुआत तब तक सफल नहीं कही जा सकती, जब तक कि वह हमारे जीवन के सभी आयामों को न छू लेती हो। दूसरे के मन में अमिट छाप छोड़ने से पहले उसका गहरा प्रभाव हमारे भीतर होना आवश्यक है। वही हमारे जीवन की सफलता को सुनिश्चित करता है। हमारे आत्मबल को मजबूत करता है। हम वास्तव में जैसे हैं, बिल्कुल वैसा ही हमें खुद को प्रस्तुत करना चाहिए। अगर किसी बात या कार्य को शुरू करना है तो पहले उसके लिए अपने आपको दीर्घकालिक रूप से योग्य और समर्थ बनाना बहुत जरूरी है। किसी और के सामने सर्वश्रेष्ठ नजर आने के लिए किसी तरह के छल का उपयोग कर भले ही अपने पहले प्रभाव को सिद्ध कर लें, पर उसके बाद का हमारा रास्ता हम खुद ही बेहद जटिल बना लेते हैं। इससे कई गुना प्रभावशाली है वह पहला प्रदर्शन, जिसमें हमारी ईमानदार कोशिशें, संभावनाएं और हमारी कमियां भी नजर आती हों, सीखने-समझने और मेहनत करते रहने का जुझारूपन और ईमानदारी जैसे बुनियादी गुण-मूल्य व्यक्तित्व के वे जरूरी पहलू हैं जो सुनिश्चित करते हैं कि भविष्य में हमारे लिए जो सर्वश्रेष्ठ होगा, वह हमें जरूर प्राप्त होगा।

कोई भी प्रदर्शन मात्र एक क्षण न होते हुए असल में एक लंबी प्रक्रिया होती है जो दो बिंदुओं से जुड़ी हुई महसूस होती है। अगर पहला प्रदर्शन हमारी शुरुआत है तो हमें उसे बनाए रख कर अपने आप को लगातार परिष्कृत करते हुए हमारे जीवन के आखिरी पड़ाव तक ले कर जाना रहता है। यह एक जिम्मेदारी और मेहनत का काम है। जो चीजें प्रभावित करती हैं, जरा-सी चूक से उतनी ही जल्दी अपना प्रभाव खोने लगती हैं। हमारी छवि किसी के मन में अंकित है, वह दूसरे के मन में उसकी अपेक्षा के रूप में ही विद्यमान रहती है। अब हम अपने आप को उस अपेक्षा से नीचे नहीं ले जा सकते। अगर हम ऐसा करते हैं तो हमारी पूरी मेहनत बर्बाद हो जाती है और सामने वाले का हम पर से विश्वास खत्म हो जाता है। तब बड़ी दुखद स्थिति बन जाती है।

> **दुनिया मेरे आगे**
>
> **जीवन परिवर्तनशील और अनिश्चित है। हमारा आज हमारे बीते हुए कल तक हमारा भविष्य था और आने वाले कल में यह हमारा अतीत बन जाएगा। समय लगातार आगे बढ़ रहा है। किसी भी तरह की मुलाकात आखिरी मुलाकात का रूप ले सकती है। हमारा कोई भी शब्द किसी के लिए या हमारे द्वारा कहा गया आखिरी शब्द भी हो सकता है।**

हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि हमारा जीवन परिवर्तनशील और अनिश्चित है। हमारा आज हमारे बीते हुए कल तक हमारा भविष्य था और आने वाले कल में यह हमारा अतीत बन जाएगा। समय लगातार आगे बढ़ रहा है। किसी भी तरह की मुलाकात आखिरी मुलाकात का रूप ले सकती है। हमारा कोई भी शब्द किसी के लिए या हमारे द्वारा कहा गया आखिरी शब्द भी हो सकता है। हम पहले प्रदर्शन को लेकर चिंतित हो सकते हैं, जबकि हमारा हर प्रदर्शन हर बार अपनी छाप किसी न किसी रूप में इस दुनिया में और हमारे अपनों के जीवन पर छोड़ रहा होता है। हम एक बिंदु से दूसरे बिंदु की ओर लगातार आगे बढ़ रहे हैं, यह हम पर निर्भर है कि हम कितनी मेहनत कर सकते हैं, कितना सीख सकते हैं, कितना प्यार बांट सकते हैं और अपने जीवन को सार्थकता से जी पाते हैं।

जब हम जीवन को उसके संपूर्ण अर्थ में समझ पाते हैं, तब हमारे मन से पहले प्रदर्शन का दबाव समाप्त हो जाता है। हमारे लिए हर दिन एक नया अवसर लेकर आता है जिसमें हम अपनी मेहनत और ईमानदारी से अपने स्तर पर सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर सकते हैं। जीवन की किताब का पृष्ठ पलटने पर हम उसे दुबारा नहीं खोल सकते, नया पन्ना नई संभावना लेकर हमारे सामने आता है। किसी भी समय की गई हमारी ईमानदार कोशिशें हमारे जीवन पर और दूसरों पर गहरी छाप छोड़ जाती हैं।

पारदर्शिता पर सवाल

वर्ष 2024 प्रतियोगी परीक्षाओं में धांधली और पर्चाफोड़ का वर्ष रहा। कई राज्यों के लोक सेवा आयोगों की परीक्षाओं में गड़बड़ी सामने आई। इससे परीक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता और पारदर्शिता पर सवाल खड़े होते हैं। देश में लगातार बढ़ रही बेरोजगारी के बीच परीक्षाओं में धांधली अभ्यर्थियों का हौसला तोड़ देती है। युवाओं में कौशल विकास की कमी और देश में बेरोजगारी चिंता का विषय है। इस वर्ष देश के विभिन्न राज्यों में अभ्यर्थियों के आंदोलन और विरोध प्रदर्शन हुए। इससे साफ है कि कहीं न कहीं गड़बड़ी हो रही है। परीक्षाओं में धांधली की घटनाएं ईमानदार एवं मेहनती अभ्यर्थियों में मानसिक दबाव और तनाव का कारण बन रही है। ऐसी घटनाओं से गलत मूल्यों का प्रसार भी होता है, जिससे लोगों को लगता है कि गलत तरीके से भी नौकरी मिल सकती है। नए वर्ष में उम्मीद है कि परीक्षा में धांधली की घटनाएं न हों, इसके लिए सरकार को शिक्षा-प्रणाली में सुधार लाना होगा। प्रतियोगी परीक्षाओं की पारदर्शिता सुनिश्चित करना होगा। इसके साथ ही आर्थिक विकास के साथ जनसंख्या के अनुरूप रोजगार के अवसर बढ़ाने होंगे।

– अंबिका कुशवाहा, पटना

संतुलन और संयम

पुलिस का काम शहर में कानून का राज कायम करना है। फिर भी कई लोग बिना हेलमेट पहने दुपहिया चलाते दिख जाते हैं। यहां तक कि मुख्य सड़कों पर भी। भला किसकी हिम्मत है जो उनके खिलाफ बोले! कई बार खुद पुलिस वाले दोपहिया पर गलत दिशा से जाते दिख जाते हैं। कोई आम आदमी उन्हें टोकने से हिचकता है। इसी तरह कुछ कर्मचारी नौकरी को खेल समझ लेते हैं। जहां और लोग नौकरी पाने के लिए लालायित रहते हैं, वहीं कुछ लोग जब-तब ड्यूटी से गायब रहते हैं। उन्हें किसी का डर नहीं होता। दूसरी ओर सत्ता में रहने पर नेताओं के तेवर चढ़े रहते हैं। विरोधी के लिए असंयत बोलते हैं। यह अनुचित है। सत्ता में बैठे लोग विरोधी नेताओं का भविष्य खत्म करने का प्रयास करते हैं, यह किसी से छिपा नहीं है। इसलिए किसी भी कार्य और व्यवहार में संतुलन और संयम बना रहना चाहिए।

– दिलीप कुमार गुप्ता, बरेली

दूरदर्शी नेता

मनमोहन सिंह एक दूरदर्शी नेता और कुशल अर्थशास्त्री के रूप में याद किए जाएंगे। वे मृदुभाषी थे। उन्होंने कभी सत्ता की महत्त्वाकांक्षा नहीं दिखाई। केंद्रीय वित्तमंत्री और प्रधानमंत्री जैसे पद उनके लिए अवसर नहीं, बल्कि चुनौतियों के रूप में आए। उन्होंने पूरी निष्ठा से दोनों जिम्मेदारियां निभाईं। भारत-अमेरिका परमाणु समझौते पर उनका दृढ़ रुख परमाणु क्षेत्र में देश की स्थिति को मजबूत करने वाला साबित हुआ। अपने पहले कार्यकाल के दौरान, उनकी सरकार को वामपंथी सहयोगियों के समर्थन के बावजूद आर्थिक सुधारों के निर्णय लेने में राजनीतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। हालांकि, मनमोहन सिंह की विनम्रता और ईमानदारी ने यूपीए सरकार को अपना कार्यकाल पूरा करने और 2009 में फिर से सत्ता में आने में मदद की। मनमोहन सिंह के निर्णय भारतीय राजनीति में दृढ़ और प्रभावशाली रहे। उनका नेतृत्व और निर्णय भारतीय राजनीति के इतिहास में मील के पत्थर बने रहेंगे।

– दत्तप्रसाद शिरोडकर, मुंबई

विवाह में दिखावा

पहले ग्रामीण परिवेश में सीमित साधनों के साथ वैवाहिक कार्यक्रम होते थे। मगर अब पूरा परिदृश्य बदल गया है। इन दिनों विवाह बहुत ही वैभवपूर्ण माहौल में होते हैं। कथित मैरिज गार्डन और रिजार्ट अथवा बैंक्वेट हाल में अनेक तरह के व्यंजन परोसे जाते हैं। नतीजा, बहुत सारा खाना कूड़ेदान के हवाले कर दिया जाता है। जबकि दूसरी ओर इसी देश में बड़ी संख्या में लोग भूखे पेट सोते हैं। शादियों में तेज आवाज में डीजे बजाना आम बात हो गई है। खर्च लाखों में नहीं, करोड़ों में किया जाता है। अमीरों के दिखावे का रोग अब मध्यवर्ग को भी लग गया है। सामान्य परिवार तो अपराधबोध महसूस करते हैं। कोई दो मत नहीं कि विवाह एक संस्कार है, जिसमें दो परिवारों का मिलन होता है। इसे भूल कर सिर्फ वैभव प्रदर्शन करने का जरिया हो गया है। इसे सीमित करना चाहिए। धन और खाने की बर्बादी रोकना चाहिए।

– अरविंद जैन, उज्जैन

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

www.readwhere.com

संवाद
जनसत्ता | 31 दिसंबर, 2024

शौर्य

जम्मू-कश्मीर के पुंछ में नियंत्रण रेखा पर निगरानी करते जवान।

बोल

एच-1बी वीजा एक शानदार कार्यक्रम है। मुझे हमेशा से वीजा पसंद रहे हैं, मैं हमेशा से वीजा के पक्ष में रहा हूं। मैं एच-1बी में विश्वास करता रहा हूं, इसलिए हमारे पास ये हैं। - डोनाल्ड ट्रंप, अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति

बोल

न्यूयार्क, शिकागो, सैन फ्रांसिस्को, सिएटल, ह्यूस्टन तथा अटलांटा में स्थित हमारे महावाणिज्य दूतों के साथ सार्थक मुलाकात हुई। इस दौरान अमेरिका-भारत साझेदारी को गहरा करने के अवसरों पर चर्चा की गई।
- एस जयशंकर, विदेश मंत्री

सम-सामयिक

अफगानिस्तान में तालिबान के भीतर दरार के संकेत

जनसत्ता संवाद

तालिबान सरकार के भीतर गहरे अंदरूनी विभाजन के संकेत देखने को मिले हैं। दरअसल, हक्कानी समूह के नेता और गृह मंत्री सिराजुद्दीन हक्कानी ने एक कार्यक्रम के दौरान शीर्ष तालिबान नेता हिबतुल्लाह अखुंदजादा के करीबी माने जाने वाले उच्च शिक्षा मंत्री निदा मोहम्मद नदीम पर 'संकीर्ण मानसिकता' का आरोप लगाया है।

सूत्रों ने इस बात की पुष्टि की कि कंधार में तालिबान नेता के साथ उनकी असफल बैठक के बाद हक्कानी ने काबुल के कार्यक्रम में शिरकत की थी। इस कार्यक्रम में निदा मोहम्मद नदीम ने तालिबान विरोधियों की बहुत तल्ख लहजे में निंदा की थी। सिराजुद्दीन हक्कानी अफगानिस्तान के नामी परिवार से आते हैं। उनके पिता जलालुद्दीन हक्कानी का तालिबान नेतृत्व में खासा दखल था। कंधार में जन्मे निदा मोहम्मद नदीम को तालिबान में एक प्रभावशाली नेता माना जाता है, हालांकि जंग के मैदान में उनकी कोई खास भूमिका नहीं रही है। उन्हें काबुल में हिबतुल्लाह अखुंदजादा का प्रतिनिधि और शिक्षा में महिलाओं पर प्रतिबंध लगाने के तालिबान नेता के फैसले को लागू करने में अहम भूमिका निभाने वाला शख्स माना जाता है। दूसरी तरफ, सिराजुद्दीन हक्कानी मार्च 2022 में पहली बार सार्वजनिक तौर पर दिखने वाले उन तालिबान नेताओं में से हैं जो बेबाकी से अपनी राय रखते हैं। मालूम हो कि स्वास्थ्य क्षेत्र में महिलाओं पर पाबंदी के बाद तालिबान सरकार के कैबिनेट की एक बैठक कंधार में हुई थी, जिसमें तालिबान नेता हिबतुल्लाह अखुंदजादा भी शामिल हुए थे। मीडिया रपटों में कहा गया है कि इस बैठक में विवादित फैसले पर भी चर्चा हुई। सूत्रों ने बताया कि सिराजुद्दीन हक्कानी दो दिन तक कंधार में रहे और तालिबान नेता के साथ उनकी बातचीत हुई लेकिन दोनों पक्षों में सहमति नहीं बन पाई।

कई सूत्र बताते हैं कि काबुल के नेता के तौर पर जाने जाने वाले हक्कानी, हिबतुल्लाह अखुंदजादा के धार्मिक तर्कों के सामने उनकी आलोचना नहीं कर पाए। इसलिए काबुल लौटने के बाद उन्होंने सार्वजनिक बैठकों और भाषणों में अपनी आलोचना और असंतोष को जाहिर करना शुरू कर दिया। कुछ सूत्रों का कहना है कि काबुल में अखुंदजादा ने जिन लोगों को नियुक्त किया है उनके और हक्कानी के करीबियों के बीच अविश्वास पैदा हो गया है। सूत्र बताते हैं कि अखुंदजादा कई मामलों में शक्तियों का एकतरफा इस्तेमाल करते रहे हैं, चाहे पूरे अफगानिस्तान में प्रमुख पदों पर नियुक्ति का मामला हो या सुरक्षा बलों को अपने मातहत करने का मामला हो। कई सूत्रों ने नाम न बताने की शर्त पर कहा कि महिला शिक्षा और हिबतुल्लाह अखुंदजादा की ओर से सत्ता पर एकतरफा पकड़ बनाए जाने को लेकर काबुल और कंधार के तालिबान नेताओं में मतभेद हैं। इन सूत्रों का कहना है कि तालिबान सरकार में हक्कानी के अलावा, रक्षा मंत्री मोहम्मद याकूब मुजाहिद, विदेश मंत्री आमिर खान मुत्तकी इस बात से चिंतित हैं कि तालिबान नेता के कठोर बर्ताव से तालिबान सरकार कमजोर होगी।

काबुल और कंधार में मतभेद

हक्कानी समूह के नेता और गृह मंत्री सिराजुद्दीन हक्कानी और तालिबान नेता हिबतुल्लाह अखुंदजादा के बीच तकरार बढ़ गई है। अखुंदजादा की ओर से सत्ता पर एकतरफा पकड़ बनाए जाने को लेकर काबुल और कंधार के तालिबान नेताओं में मतभेद हैं।

शोध

हफ्ते में 150 मिनट का व्यायाम घटाएगा मोटापा

जनसत्ता संवाद

बढ़ते हुए वजन को संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए खतरनाक माना जाता रहा है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, जिन लोगों का वजन सामान्य से अधिक होता है उनमें कई प्रकार की बीमारियां जैसे मधुमेह, हृदय रोग और वसा से संबंधित रोगों का खतरा अधिक हो सकता है। अगर आपका भी वजन सामान्य से अधिक है तो इसे कम करने के लिए उपाय शुरू कर दीजिए। ये स्थिति आपको भविष्य में गंभीर बीमारियों का शिकार बना सकती है।

शोधकर्ताओं ने कमर और चर्बी कम करने के लिए सप्ताह में 150 मिनट एरोबिक व्यायाम की सलाह दी है। शोधकर्ताओं ने अधिक वजन और मोटापे से ग्रस्त लगभग 7,000 वयस्कों पर किए गए 116 अध्ययनों की समीक्षा के बाद कहा है कि कमर और शरीर की चर्बी कम करने के लिए सप्ताह में कम से कम 150 मिनट एरोबिक व्यायाम करना महत्वपूर्ण है। सप्ताह में 300 मिनट एरोबिक प्रशिक्षण से शरीर के वजन और कमर की परिधि में सबसे अधिक कमी देखी गई, सप्ताह में 150 मिनट एरोबिक अभ्यास से शरीर में वसा फीसद में सबसे अधिक सुधार देखा गया।

ये निष्कर्ष द जर्नल आफ द अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन (जेएएमए) नेटवर्क ओपन में प्रकाशित हुए। एरोबिक या कार्डियोरेस्पिरेटरी व्यायाम, जिसमें दौड़ना और साइकिल चलाना शामिल है, हृदय गति को बढ़ाते हैं और मांसपेशियों और अंगों तक आक्सीजन की आपूर्ति में सुधार करते हैं। लंदन के इंपीरियल कालेज सहित अन्य शोधकर्ताओं ने कहा कि वजन कम करने के लिए कितने समय तक एरोबिक प्रशिक्षण करना चाहिए, इस बारे में वर्तमान सिफारिशें व्यक्तिगत अध्ययनों पर आधारित हैं तथा गहन-विश्लेषण या पूर्व में प्रकाशित साहित्य की समीक्षा कम है। अपने विश्लेषण के लिए, टीम ने बेतरतीब नैदानिक परीक्षणों को देखा - एक प्रकार का प्रयोग जो यह तुलना करता है कि किसी दी गई स्थिति के लिए हस्तक्षेप कितना प्रभावी है।

अध्ययन में वयस्कों में कम से कम आठ सप्ताह की निगरानी में एरोबिक प्रशिक्षण शामिल था, जिनका 'बाडी मास इंडेक्स' 25 (पश्चिमी देशों के लिए) या 23 (एशियाई) से अधिक था। शोधकताओं ने पाया कि जहां प्रति सप्ताह 30 मिनट एरोबिक व्यायाम करने से वयस्कों को शरीर के वजन, कमर की परिधि और शरीर की वसा में मामूली कमी का अनुभव हुआ, वहीं 150 मिनट और उससे अधिक व्यायाम करने से इन्हें कम करने में महत्वपूर्ण में मदद मिली।

उन्होंने अपने अध्ययन में पाया, कमर की परिधि और शरीर में वसा की मात्रा में चिकित्सीय रूप से महत्वपूर्ण कमी लाने के लिए मध्यम तीव्रता या उससे अधिक पर प्रति सप्ताह कम से कम 150 मिनट एरोबिक व्यायाम की जरूरत हो सकती है। प्रति सप्ताह 300 मिनट एरोबिक व्यायाम करने से शरीर के वजन में चार किलोग्राम से अधिक तथा कमर की परिधि में चार से पांच सेंटीमीटर की कमी देखी गई। शरीर में वसा फीसद में सबसे बड़ा सुधार हालांकि, प्रति सप्ताह 150 मिनट एरोबिक प्रशिक्षण से संबंधित था।

शोधकर्ताओं ने अधिक वजन और मोटापे से ग्रस्त लगभग 116 अध्ययनों की समीक्षा के बाद कहा है कि कमर और शरीर की चर्बी कम करने के लिए सप्ताह में कम से कम 150 मिनट एरोबिक व्यायाम करना महत्वपूर्ण है। यह दावा जर्नल आफ द अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन नेटवर्क ओपन में प्रकाशित अध्ययन में शोधकर्ताओं ने किया है।

विश्व परिक्रमा

सूरज के सबसे करीब पहुंचा नासा का अंतरिक्ष यान

जनसत्ता संवाद

अमेरिका की अंतरिक्ष एजंसी नासा के अंतरिक्ष यान पार्कर सोलर प्रोब ने 24 दिसंबर की शाम को सूरज के बेहद करीब पहुंचने का रेकार्ड बनाया है। नासा का यह यान सूरज से करीब 61 लाख किमी की दूरी से गुजरा। ये दुनिया का पहला यान है जिसने ऐसा रेकार्ड बनाया है।

नासा के मुताबिक, पार्कर सोलर प्रोब यान 1 जनवरी को अपनी स्थिति और खोजों का विस्तृत डेटा भेजेगा। सूरज के पास से गुजरते समय स्पेसक्राफ्ट की गति 6.9 लाख किमी/घंटा से अधिक थी। उस वक्त यह यान 982 डिगी सेल्सियस गर्मी झेल रहा था। इतनी तेज गर्मी के बावजूद यान को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है। पार्कर सूरज के जिस बाहरी वातावरण से गुजरा उसे कोरोना कहते हैं। यह सूर्य और हमारे सौर मंडल पर इसके प्रभाव को समझने की दिशा में एक बड़ा कदम है। नासा से मिली जानकारी के अनुसार पार्कर सोलर प्रोब ने 27 दिसंबर को धरती पर नासा के जान्स हापकिन्स एप्लाइड फिजिक्स लेबोरेटरी टीम को सिग्नल भेजा जिससे वैज्ञानिकों को उसके सुरक्षित होने और सही से काम करने के बारे में पता चला।

नासा के इस मिशन का मकसद पृथ्वी के सबसे करीबी तारे सूरज के बारे में ज्यादा जानकारी इकट्ठा करना है। यान के सूरज के बाहरी वातावरण में पहुंचने से वैज्ञानिकों को सूरज के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने में मदद मिलेगी। नासा ने जानकारी देते हुए कहा,सूर्य के सबसे करीब पहुंचने के बाद पार्कर सोलर प्रोब ने एक थीकन टोन भेजा है जो यह दशार्ता है कि यह अच्छी स्थिति में है और सामान्य रूप से काम कर रहा है। यह हमारे लिए अच्छी खबर है क्योंकि यान खराब स्थिति में सूर्य के चारों ओर चक्कर लगा रहा था।

जानें-समझें

जल विद्युत परियोजना

चीन के फैसले से भारत, बांग्लादेश की चिंता बढ़ी

जनसत्ता संवाद

चीन की एक महत्त्वाकांक्षी परियोजना से भारत और बांग्लादेश के लाखों लोग प्रभावित हो सकते हैं। चीन ने तिब्बत में एक विशाल जल विद्युत परियोजना को मंजूरी दे दी है, जिसे यारलुंग सांगपो (ब्रह्मपुत्र) नदी पर बनाया जाएगा। तिब्बत में इस नदी को यारलुंग जांग्पो के नाम से भी जाना जाता है। इस परियोजना के तहत नदी पर एक बांध बनाया जाएगा जो दुनिया का सबसे बड़ा बांध होगा।

बांध क्यों बना रहा है चीन?

इस परियोजना की चर्चा पहली बार चीन की 14वीं पंचवर्षीय योजना के सामने आने के दौरान हुई थी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने 2021 में अपनी तिब्बत यात्रा के दौरान एक बड़ा बांध के निर्माण की बात कही थी। तिब्बत में ब्रह्मपुत्र नदी पर बनने वाले बांध का लक्ष्य सालाना 300 बिलियन किलोवाट-घंटा बिजली पैदा करना है जो कि थ्री गार्जेस बांध की क्षमता से तीन गुना से भी ज्यादा है। इसे तिब्बत पठार के पूर्वी छोर पर बनाया जाएगा। यह परियोजना चीन के कार्बन पीकिंग, कार्बन न्यूट्रलिटी के लक्ष्यों को पूरा करने और वैश्विक जलवायु परिवर्तन से निपटने में प्रमुख भूमिका निभाएगी। साथ ही इंजीनियरिंग से संबंधित उद्योगों को प्रोत्साहित करेगी और तिब्बत में रोजगार पैदा करेगी। हालांकि, रपट में यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि निर्माण कब से शुरू होगा और निर्माण की सटीक जगह नहीं बताई है। यारलुंग सांगपो नदी लगभग 50 किलोमीटर के एक हिस्से में करीब दो हजार मीटर की ऊंचाई से गिरती है। इस ढलान की मदद से जलविद्युत उत्पादन में मदद मिलती है लेकिन इसमें इंजीनियरिंग की चुनौतियां भी हैं।

भारत-बांग्लादेश पर क्या होगा असर?

ब्रह्मपुत्र (यारलुंग सांगपो) नदी तिब्बत में कैलाश पर्वत के पास एंग्सी ग्लेशियर से निकलती है और यह लगभग तीन हजार किलोमीटर तक फैली हुई है। भारत में यारलुंग सांगपो ब्रह्मपुत्र नदी बन जाती है और इसके बाद यह असम होते हुए बांग्लादेश पहुंचती है, जहां इसे जमुना कहते हैं और ये फिर गंगा नदी के साथ मिल जाती है।

बांग्लादेश का 90 फीसद से ज्यादा पानी सीमा पार से आता है। सूखे के मौसम में ब्रह्मपुत्र नदी अकेले 70 फीसद तक पानी लाती है। इससे स्पष्ट है कि ब्रह्मपुत्र बांग्लादेश की जीवनरेखा है। मीडिया रपट के मुताबिक, इस विशाल परियोजना के लिए नमचा बरवा पर्वत के आस-पास कम से कम चार 20 किलोमीटर लंबी सुरंगें खोदने की जरूरत होगी, जिससे तिब्बत की सबसे लंबी नदी यारलुंग सांगपो की धारा को मोड़ दिया जाएगा। इसलिए इस बांध को भारत और बांग्लादेश के लिए एक बड़ी चिंता के रूप में देखा जा रहा है।

तक्षशिला इंस्टीट्यूट बंगलुरु के प्रोफेसर और जियोस्पेशियल रिसर्च प्रोग्राम के प्रमुख डा वाई निल्यानंदम कहते हैं कि चीन ने मेकांग नदी पर बांध बनाए हैं और हमने बांध के आगे निचले इलाकों की शोध की थी। इससे हमें पता चला था कि चीन ने बांध में पानी इकट्ठा किया और समय पर इसे छोड़ा नहीं। इसके अलावा आधी से ज्यादा गाद को बांधों ने रोक लिया है। गाद आगे कैसे बहेगी इसको लेकर कोई इंतजाम नहीं है। इसलिए इस बात की आशंका है कि कहीं भारत-बांग्लादेश के साथ भी ऐसा न हो।

भारत के उत्तर-पूर्वी राज्य और बांग्लादेश पहले से ही भयंकर बाढ़ की घटनाओं का सामना कर रहे हैं और जलवायु परिवर्तन के कारण उन्हें और अधिक चुनौतियों जैसे- भूस्खलन, भूकंप और बाढ़ आदि का सामना करना पड़ सकता है। अरुणाचल प्रदेश भूस्खलन के लिहाज से अति संवेदनशील है और अक्सर यहां भूकंप का खतरा भी बना रहता है। ब्रह्मपुत्र नदी पर बांध का निर्माण जलवायु परिवर्तन पर दबाव डाल सकता है।

फाइल फोटो

अरुणाचल प्रदेश भूस्खलन के लिहाज से अति संवेदनशील है और अक्सर यहां भूकंप का खतरा भी बना रहता है। ब्रह्मपुत्र नदी पर बांध का निर्माण जलवायु परिवर्तन पर दबाव डाल सकता है और विनाशकारी घटनाओं का कारण बन सकता है। चीन पर भरोसा भी नहीं कर सकते। क्योंकि वह पानी को हथियार की तरह भी इस्तेमाल कर सकता है।

- वाई निल्यानंदम, प्रोफेसर, तक्षशिला इंस्टीट्यूट बंगलुरु

इस परियोजना से निचले तटवर्ती राज्यों पर नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा। चीन के जलविद्युत विकास का उद्देश्य स्वच्छ ऊर्जा के विकास में तेजी लाना और जलवायु परिवर्तन और चरम जल विज्ञान संबंधी आपदाओं से निपटना है। दशकों से जलविद्युत विकास का गहन अध्ययन करने के बाद परियोजना की सुरक्षा और पारिस्थितिकी पर्यावरण संरक्षण के लिए सुरक्षा उपाय किए गए हैं। *- माओ निंग, चीन के विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता*

चीन पर भरोसा नहीं

प्रोफेसर वाई निल्यानंदम का मानना है कि चीन इस तरह के परियोजना में कहता है कि वो इसे स्वच्छ ऊर्जा के स्रोत के रूप में इस्तेमाल करेगा, लेकिन चीन पानी को एक हथियार की तरह भी इस्तेमाल कर सकता है। खासतौर पर विवाद बढ़ने की स्थिति में जैसा कि हम साल 2020 में भारत और चीन की सीमा पर देख चुके हैं।

परियोजना पर सहमति जरूरी

आस्ट्रेलिया स्थित थिंक टैंक लोवी इंस्टीट्यूट द्वारा प्रकाशित 2020 की एक रपट में कहा गया है कि इन नदियों (तिब्बत में) पर नियंत्रण प्रभावी रूप से चीन को भारत की अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण प्रदान करता है। जो बड़ी चिंता का विषय है। इस परियोजना पर सबकी सहमति लेने जरूरी कदम होगा।

व्यक्तित्व

श्रीराम कृष्णन : ट्रंप की टीम में एक और भारतवंशी सितारा

जनसत्ता संवाद

अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारतीय-अमेरिकी पूंजीपति श्रीराम कृष्णन को कृत्रिम मेधा (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) पर वरिष्ठ नीति सलाहकार नामित किया है। इसी के साथ ट्रंप की टीम में एक और भारतवंशी सितारा शामिल हो गया है।

श्रीराम ट्रंप को कृत्रिम मेधा के मामले में हर तरह की सलाह देंगे। इन्हें एलन मस्क का खास माना जाता है। साथ ही वे पूर्व माइक्रोसाफ्ट कर्मचारी भी हैं। मौजूदा वक्त में श्रीराम एक स्टार्टअप के मालिक हैं, जो वाइट हाउस आफिस के विज्ञान एवं तकनीक नीति पर काम करेंगे।

श्रीराम कृष्णन अमेरिकी के शीर्ष नेतृत्व को एआइ से जुड़े फैसले लेने और सरकार के एआइ योजना को आकार देने में मदद करेंगे। कृष्णन इससे पहले माइक्रोसाफ्ट, ट्विटर, याहू, फेसबुक और स्नैप में टीमों का नेतृत्व कर चुके हैं और वे डेविड ओ साक्स के साथ काम करेंगे। ट्रंप ने डेविड को वाइट हाउस एआइ एंड क्रिप्टो जार नामित किया है। ट्रंप ने कहा, डेविड के साथ श्रीराम एआइ के क्षेत्र में अमेरिका का वर्चस्व सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित करेंगे। साथ ही वह विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर राष्ट्रपति की सलाहकार परिषद के साथ काम करते हुए एआइ नीति को आकार देने और सामन्यय करने में मदद करेंगे। कृष्णन की शैक्षिक यात्रा तमिलनाडु के कांचीपुरम के कट्टनकुलथुर में एसआरएम वल्लियममई इंजीनियरिंग कालेज से शुरू हुई। उन्होंने अपना करिअर माइक्रोसाफ्ट में शुरू किया, जहां उन्होंने विंडोज एन्योर के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, इसके एपीआइ और सेवाओं पर काम किया। उन्होंने ओ'रेली के लिए प्रोग्रामिंग विंडोज एन्योर पुस्तक भी लिखी। कृष्णन ने कई प्रमुख प्रौद्योगिकी कंपनियों में अहम पदों पर काम किया है। वह 2013 में फेसबुक से जुड़े, जहां उन्होंने कंपनी के मोबाइल ऐप डाउनलोड विज्ञापन बिजनेस को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई। फेसबुक में अपने कार्यकाल के बाद वह स्नैप में चले गए, जहां उन्होंने विभिन्न उत्पाद पहलों में योगदान दिया। बाद में उन्होंने 2019 तक ट्विटर के साथ काम किया और 2022 में मस्क के अधिग्रहण के बाद एक्स के पुनर्गठन पर एलन मस्क के साथ सहयोग किया। 2021 में कृष्णन उभरती प्रौद्योगिकियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए अंद्रेसेन होरोविट्ज में एक सामान्य भागीदार बन गए और 2023 में उन्होंने लंदन में कंपनी के पहले अंतरराष्ट्रीय कार्यालय की अगुआई की। अपनी पेशेवर भूमिकाओं के अलावा कृष्णन भारतीय फिनटेक कंपनी क्रेड में एक निवेशक और सलाहकार हैं। वे अपनी पत्नी आरती राममूर्ति के साथ एक पाडकास्ट, द आरती और श्रीराम शो भी आयोजित करते हैं। कृष्णन एआइ के समर्थक रहे हैं, उन्होंने एआइ कंपनियों और इंटरनेट प्लेटफार्म के हितों को संतुलित करने के लिए समाधान का प्रस्ताव दिया है।

चिंतन

अपना बोया आतंकवाद ही काट रहा पाकिस्तान

जो बोएगा, वही काटेगा। पाकिस्तान पर यह बात अक्षरशः लागू हो रही है। पाकिस्तान आतंकवाद को पाला-पोसा, अच्छे व बुरे आतंकवाद की श्रेणी बनाई और नीतिगत स्तर पर आतंकवाद और इस्लामिक कट्टरता को बढ़ावा दिया। आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई के नाम पर अमेरिका से मोटी मदद ली, लेकिन उससे आतंकवाद को ही पोषित किया। आज नतीजा सामने है, पाकिस्तान आतंकवाद के खिलाफ संघर्ष के अपने सबसे कठिन दौर का सामना कर रहा है। अफगानिस्तान में आतंकी ठिकाने पर एयर स्ट्राइक पाकिस्तान को भारी पड़ रही है। करीब 15000 अफगान लड़ाके पाक सीमा में घुसे और पाक सैन्य चौकियों को निशाना बननानया। खबर है कि तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) के आतंकवादियों ने खैबर पख्तूनख्वा के बाजौर जिले के सालारजई इलाके में एक पाकिस्तानी सैन्य अड्डे पर कब्जा कर लिया है। अफगानिस्तान सीमा पर पाकिस्तान व अफगानिस्तान में सक्रिय आतंकी गुट टीटीपी को अफगानिस्तान में तालिबान के सत्ता में आने के बाद से मजबूती मिली है। आतंकवाद को प्रश्रय देने में पाकिस्तान इतना अंध था कि जब अफगानिस्तान में अमेरिकी फौज ने तालिबान को सत्ता सौंप स्वदेश लौटना उचित समझा, उस वक्त सबसे पहले पाकिस्तान फौज के प्रमुख और आईएसआई के प्रमुख ने सबसे पहले अफगानिस्तान की यात्रा की, और इस घटना को पाकिस्तान ने जश्न के तौर पर मनाया कि अब अफगानिस्तान में भारतीय कूटनीति कमजोर हो जाएगी। लेकिन पांच साल भी नहीं बीता कि पाकिस्तान अफगानिस्तान के दुश्मन देश में शामिल हो गया। आज पाकिस्तान को आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ने में काफी मुश्किलात का सामना करना पड़ रहा है। पाकिस्तान को अपने खैबर पख्तूनवा और बलूचिस्तान प्रांत में वहां के मजबूत विद्रोही व आतंकवादी गुटों के तीखे विरोध का सामना करना पड़ रहा है। कश्मीर में आतंकवादी घुसपैठ को बढ़ावा देने वाली पाक फौज ईरान व अफगानिस्तान सीमा पर स्थित आतंकी गुटों के सामने कमजोर साबित हो रही है। पाकिस्तान ने अफगानिस्तान में जब एयर स्ट्राइक कर टीटीपी के 18 आतंकियों को मारने का दावा किया तो अफगानिस्तान में टीटीपी ने बदले की कार्रवाई का ऐलान किया था। इसके बाद आज 30 दिसंबर को टीटीपी ने दावा किया है कि उसने पाकिस्तानी मिलिट्री बेस पर कब्जा कर लिया। अभी इस क्षेत्र में पाकिस्तानी सुरक्षा बलों को निशाना बनाने वाली आतंकवादी गतिविधियों में लगातार वृद्धि देखी जा रही है। हालांकि पाकिस्तानी मीडिया ने एक वरिष्ठ सुरक्षा अधिकारी के हवाले से बताया है कि इस मिलिट्री बेस को कुछ समय पहले खाली कर दिया गया था और यहां सेना के जवानों की तैनाती नहीं थी, उन्हें एक नए और मजबूत इंफ्रास्ट्रक्चर में ट्रांसफर कर दिया गया था। पाकिस्तान के मुताबिक उत्तरी व दक्षिणी वजीरिस्तान में भी कुछ पुराने मिलिट्री बेस को खाली करके, सैनिकों को नए बेस में ट्रांसफर किया गया है। स्थिति जो भी हो, लेकिन पाकिस्तान व अफगानिस्तान में युद्ध स्तर का तनाव है, पाकिस्तान बांग्लादेश में इस्लामिक कट्टर संगठनों को बढ़ावा देकर भारत के खिलाफ मोर्मोर्च बनाने के लिए प्रयासरत है। जब किसी मुल्क का वजूद ही दूसरों को परेशान करने का बन जाय तो वह खुद भी कभी शांत नहीं रह सकता। आर्थिक तंगहाली में फंसे पाकिस्तान के लिए एक मात्र रास्ता है कि आतंकवाद को खत्म कर नए सिरे से राष्ट्रनिर्माण करें, वरना आतंकवाद व इस्लामिक कट्टरता भस्मासुर बनते रहेंगे।

लेखा-जोखा
डॉ.एस.डी. वैष्णव

वैश्विक तनाव के नाम रहा यह वर्ष

> विश्व परिदृश्य में यह वर्ष भू-राजनीतिक तनावों और युद्धों के नाम रहा। घोषित और अघोषित युद्धों से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सबसे बड़ा नुकसान महिलाओं और बच्चों का होता है। युद्धों से किनारा चाहने वाले लोगों के लिए इस तरह के युद्ध एक तरह से उपद्रव होते हैं, इसलिए विश्व शांति हेतु लोगों में समरसता का भाव जगाना और विश्व को मानव निर्मित आपदाओं से बचना हम सब की जिम्मेदारी है। अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप की ऐतिहासिक जीत के बाद से ही विचारों के लिहाज से दुनिया दो ध्रुवों में बंटी नजर आ रही है। उम्मीद की जानी चाहिए कि आने वाले नए वर्ष का सूर्य विश्व परिदृश्य में शांति की रोशनी और नया उजास लेकर आएगा।

वर्ष 2024 का सूर्य धीरे-धीरे अस्ताचल की ओर जा रहा है। विश्व परिदृश्य में यह वर्ष भू-राजनीतिक तनावों और युद्धों के नाम रहा। घोषित और अघोषित युद्धों से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सबसे बड़ा नुकसान महिलाओं और बच्चों का होता है। युद्धों से किनारा चाहने वाले लोगों के लिए इस तरह के युद्ध एक तरह से उपद्रव होते हैं, इसलिए विश्व शांति हेतु लोगों में समरसता का भाव जगाना और विश्व को मानव निर्मित आपदाओं से बचना हम सब की जिम्मेदारी है।

राजनीति के गलियारों में यह वर्ष भारत में लोकतंत्र के महापर्व में आहुति देने के नाम रहा। नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बने और उन्होंने कूटनीति और संवाद के जरिए विश्व समुदाय के बीच आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्तरों पर समन्वय स्थापित करते हुए, विश्व परिदृश्य में फैली अराजकता को समाप्त करने का प्रयास किया। इस वर्ष रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को रूस के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'आर्डर ऑफ सेंट एंड्रयू द एपोस्टल' और इस साल के अंत में कुवैत यात्रा पर उन्हें कुवैत का प्रतिष्ठित नाइटहुड सम्मान 'ऑर्डर ऑफ मुबारक अल कबीर' से भी नवाजा गया। उधर अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप की ऐतिहासिक जीत के बाद से ही विचारों के लिहाज से दुनिया दो ध्रुवों में बंटी नजर आ रही है। ट्रंप का अभी शपथ ग्रहण समारोह होना बाकी है। उनके सत्ता संभालने के बाद भू-राजनीतिक हलकों में ऊंट किस करवट बैठेगा; यह नया साल ही बताएगा। इस वर्ष राजनीति का विद्रूप चेहरा रहे कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो की भारत विरोधी नीतियों के चलते दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों में तनाव भी देखने को मिला। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री के रूप में शेख हसीना का इस्तीफा और फिर उनका भारत में शरण लेना दक्षिण एशियाई भू-राजनीति में एक नए मोड़ के रूप में नजर आ रहा है।

रूस-यूक्रेन के बीच 1041 दिन से चल रहे महायुद्ध में लाखों लोग मारे गए और हजारों विस्थापित हुए। अमेरिका और पश्चिमी देशों के सहयोग से छोटा-सा देश यूक्रेन जंग के मैदान में रूस को बराबर टक्कर दे रहा है। यूक्रेन ने रूस की आर्थिक राजधानी कहे जाने वाले शहर कजान पर ड्रोन से 9/11 जैसा हमला करके अपने इरादे साफ़ कर दिए हैं। इस युद्ध को रोकने के लिए रूस और यूक्रेन को शांति वार्ता और युद्ध विराम हेतु एक मंच पर लाने के लिए भारत अपनी ओर से लगातार प्रयासरत है। उधर मध्य-पूर्व एक साल से भी ज्यादा समय से आग में धधक रहा है। 7 अक्टूबर 2023 को हमास द्वारा किए गए हमले में इजराइल के 1250 नागरिक मारे गए थे और 250 को बंधक बना लिया गया था। अपने बंधक नागरिकों को छुड़ाने के लिए इजराइल ने गाजा पट्टी में सैन्य अभियान शुरू किया तो गाजा पट्टी को खंडहरों में तब्दील कर दिया। आईडीएफ की रिपोर्ट के मुताबिक गाजा पट्टी में 17000 हमास लड़ाके और 45000 से ज्यादा आम नागरिक मारे गए। गाजा पट्टी में तो भुखमरी और विस्थापन की समस्या उत्पन्न हो गई है। अस्सी प्रतिशत आम फिलिस्तीनी नागरिकों ने विस्थापन कर

लिया है। गाजा की आर्थिक स्थिति खराब हो चुकी है। इधर लेबनान से हिज्बुल्लाह ने इजराइल पर रॉकेट बरसाकर आग में घी का काम किया। लिहाजा, इजराइल ने वहां पर भी ग्राउंड और हवाई ऑपरेशन शुरू कर दिया था। इजराइल के साथ युद्ध में दक्षिणी लेबनान का बुनियादी ढांचा बिखर चुका है। हालांकि अमेरिका और फ्रांस की मध्यस्थता के चलते अब इजराइल और हिज्बुल्लाह में 60 दिन के युद्ध विराम की घोषणा भी हो चुकी है। इजराइल हिज्बुल्लाह को लेबनान के दक्षिण में लितानी नदी से आगे नहीं बढ़ने देना चाहता है। इजराइल वहीं पर लेबनानी सेना की उपस्थिति चाहता है।

इस बीच युद्ध के चलते लेबनान में अब तक 4000 आम नागरिक और 400 हिज्बुल्लाह लड़ाके मारे गए और लगभग 12 लाख लोग विस्थापित हो चुके थे जो अब धीरे-धीरे लेबनान में अपने घरों की ओर लौट रहे हैं। इधर हमास और हिज्बुल्लाह के साथ जंग के मैदान में इजराइल के 1000 के करीब सैनिक मारे गए। इजराइल ने गाजा और लेबनान सीमा क्षेत्र से अपने 60000 नागरिकों को विस्थापित कर लिया। इजराइल-हिज्बुल्लाह में युद्ध विराम होते ही अगले ही दिन सीरिया में गृह युद्ध का प्रेत फिर जागा और 12 साल तक गृह युद्ध की आग में झुलसते रहे सीरिया में एक बार फिर सिविल वॉर के जख्म हरे होने के साथ ही वहां के सशस्त्र विद्रोही गुट हयात तहरीर अल-शामयानी एचटीएस ने वहां की असद सरकार और सेना के खिलाफ मोर्चा खोला और मात्र नौ दिन में ही दमिश्क सहित पूरे सीरिया की सत्ता अपने हाथों में ले ली। सीरियाई राष्ट्रपति बशर अल-असद को सीरिया छोड़कर रूस में शरण लेनी पड़ी। लेबनान के बाद सीरिया में एक नया वॉर फ्रंट खुल गया है। सीरिया में हुआ यह गृह युद्ध प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अमेरिका रूस के बीच चल रहे तनाव का परिणाम था, जिसमें रणनीतिक रूप से अमेरिका की जीत हुई। असद सरकार को रूस, ईरान, इराक और हिज्बुल्लाह का समर्थन प्राप्त था जबकि सीरिया में विद्रोही गुट एचटीएस को अमेरिका, ब्रिटेन और इजराइल का समर्थन प्राप्त था। इधर भारत के दो पड़ोसी देशों पाकिस्तान और बांग्लादेश में राजनतिक अस्थिरता का माहौल बना हुआ है। पाकिस्तान में आतंकवादी गतिविधियों में आए दिन आम नागरिक मारे जा रहे हैं। बांग्लादेश में तख्तापलट के बाद से अल्पसंख्यकों खासकर हिंदुओं को निशाने पर लिया जा रहा है। हिंदू मंदिरों और घरों में आगजनी एवं लूटपाट की घटनाएं वहां आम बात हो गई हैं। भारत के लिए चिंता का विषय यह कि बांग्लादेश फिर से कहीं आतंकवादियों के लिए लॉन्चिंग पैड न बन जाए। इस वर्ष यूरोप के कई देशों में शरणार्थियों की वजह से भी अराजकता का माहौल बना रहा। साल का अंत होते-होते एशिया में पाकिस्तान- अफगानिस्तान के बीच स्थित डूरंड रेखा पर युद्ध का नया फ्रंट खुल गया है। अफगानिस्तान ने युद्ध के लिए अपने 15000 सशस्त्र लड़ाके, रॉकेट लांचर और टैंक डूरंड रेखा पर तैनात कर दिए हैं। लिहाजा, एशिया में अस्थिरता बढ़ने की संभावना है। रईसी और ईरान के विदेश मंत्री की 19 मई को एक हेलीकॉप्टर दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। इस घटना को इजराइल की खुफिया एजेंसी मोसाद से जोड़कर देखा गया। उधर चीन और ताइवान के बीच सीमा पर तनाव बना रहा। दक्षिणी कोरिया में मार्शल लॉ लगाने वाले राष्ट्रपति यून सुकयोल को पद से निलंबित कर दिया गया। यह वर्ष इसलिए भी याद रखा जाएगा कि दर्दनाक यादों के बावजूद वर्षों से अब तक शांति का विकल्प तलाश रहे जापान के हिबाकुशा लोगों के संगठन 'निहोन हिडानक्यो' को इस वर्ष का शांति का नोबेल पुरस्कार दिया गया। यह पुरस्कार ऐसे समय दिया गया जब विश्व समुदाय परमाणु खतरे के साथ तीसरे विश्व युद्ध की आहट सुन रहा है। उम्मीद की जानी चाहिए कि आने वाले नए वर्ष का सूर्य विश्व परिदृश्य में सार्वभौमिक विषयों पर संवाद के साथ शांति और समन्वय की रोशनी और नया उजास लेकर आएगा।

(लेखक सामाजिक मामलों के जानकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **edit@haribhoomi.com** पर दे सकते हैं।

उम्मीद

डॉ. आर.के. सिन्हा

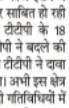

नव वर्ष में विकास में छलांग की असीम संभावनाएं

भारत के लिए नूतन वर्ष 2025 कई क्षेत्रों में बड़ी उपलब्धियों का बड़ा तोहफा लाने वाला साल साबित हो सकता है। भारत डिजिटल अर्थव्यवस्था की तरफ लंबी छलांग लगा सकता है। सॉफ्टवेयर और आईटी सेवाएं देने में भी हम सारे संसार का नेतृत्व करने की स्थिति में पहुंच सकते हैं। इसी तरह भारत विश्व भर के पर्यटकों के लिए एक सुरक्षित और सस्ता आकर्षण का केंद्र भी बन सकता है जहाँ पर्यटकों की रुचि के तमाम केंद्र , हर तरह के ख़ान- पान, स्थानीय कुटीर उद्योगों के उत्पाद और गाइड के रूप में अच्छे पढ़े लिखे बढ़िया अंग्रेजी जानने बोलने वाले विद्यमान हैं, जो एक साथ मुश्किल से ही किसी एक देश में मिल सकते हैं। इनके अलावा भी बहुत सारे क्षेत्रों में हमारे लिए आगे बढ़ने का अनुपम अवसर बन रहे हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था डिजिटल होती जा रही है। इसके तहत ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी, डिजिटल साक्षरता, और ई-गवर्नेंस को बढ़ावा दिया जा रहा है। 2025 तक, भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या में भारी वृद्धि होने की उम्मीद है, जिससे ई-कॉमर्स, ऑनलाइन शिक्षा, और डिजिटल वित्तीय सेवाओं जैसे क्षेत्रों में तेजी आएगी। भारत में ई-कॉमर्स का बाजार भी तेजी से बढ़ रहा है। 2025 में इसके और परिपक्व होने की उम्मीद है। डिजिटल भुगतान को भी सरकारी स्तर पर पर्याप्त बढ़ावा दिया जा रहा है। 2025 में भारत में डिजिटल लेनदेन की संख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। भारत में 5जी तकनीक के प्रयोग में तेजी से विस्तार हो रहा है। 2025 तक, इसका व्यापक रूप से उपयोग होने लगेगा इसकी उम्मीद है. डिजिटल परिवर्तन के साथ, साइबर सुरक्षा भी महत्वपूर्ण हो गई है। 2025 तक भारत इस क्षेत्र में और अधिक मजबूत हो सकता है, जो डेटा सुरक्षा और साइबर अपराधों को रोकने में मदद करेगा। भारत में क्लाउड कंप्यूटिंग का उपयोग बढ़ रहा है। 2025 तक, कई संगठन क्लाउड-आधारित समाधानों को अपनाएंगे, जो लचीलापन और कम लागत पर असीमित दक्षता प्रदान करेंगे। आप मानकर चल सकते हैं कि नूतन साल में आईटी पेशेवरों की संख्या बढ़ती ही रहेगी। नए साल में यह क्षेत्र और अधिक कुशल और प्रशिक्षित पेशेवरों को आकर्षित कर सकता है। मेक इन इंडिया भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनाने पर केंद्रित है। सरकार विदेशी निवेश को आकर्षित करने और घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए नीतियां बना रही है। 2025 में भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, फार्मास्युटिकल्स, और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में विनिर्माण गतिविधियों में तेजी आने की उम्मीद है। रक्षा विनिर्माण में भी सरकार आत्मनिर्भरता हासिल करने पर जोर दे रही है। घरेलू रक्षा विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं। भारत रक्षा उपकरणों का एक प्रमुख निर्यातक बनने की दिशा में आगे बढ़ सकता है। भारत सरकार सड़कों, रेलवे, बंदरगाहों, और हवाई अड्डों जैसे परिवहन बुनियादी ढांचे को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। 2025 तक, देश में बेहतर परिवहन कनेक्टिविटी होगी, जिससे व्यापार और पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। भारत नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों, जैसे सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा, के विकास पर जोर दे रहा है। सरकार का लक्ष्य 2025 तक ऊर्जा सुरक्षा हासिल करना और जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करना है। भारत में शहरीकरण भी तेजी से हो रहा है। 2025 तक, स्मार्ट शहरों में बेहतर बुनियादी ढांचे, जल आपूर्ति, स्वच्छता, और सार्वजनिक परिवहन जैसी सुविधाएं होंगी। आयुष्मान भारत योजना देश के लाखों लोगों को स्वास्थ्य बीमा कवरेज प्रदान करती है। 2025 तक, भारत में स्वास्थ्य सेवा में सुधार की उम्मीद है, जिसमें बेहतर अस्पताल, डॉक्टरों और दवाओं की पहुंच शामिल है। भारत में कृषि क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का उपयोग बढ़ रहा है। शिक्षा के लिए भी 2025 बेहद अहम हो सकता है। सरकार ने हाल ही में एक नई शिक्षा नीति शुरू की है, जिसका उद्देश्य शिक्षा प्रणाली में सुधार करना है। यह नीति कौशल विकास, व्यावसायिक शिक्षा, और अनुसंधान पर केंद्रित है। 2025 तक, नई शिक्षा नीति से शिक्षा क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव आने की उम्मीद है। 2025 तक ऑनलाइन शिक्षा और अधिक सुलभ होने की उम्मीद है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि भारत 2025 तक एक आर्थिक महाशक्ति बनने की राह पर है। डिजिटल अर्थव्यवस्था, विनिर्माण, बुनियादी ढांचा, स्वास्थ्य सेवा, कृषि, और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में प्रगति से देश के विकास को बढ़ावा मिलेगा। हालांकि, सरकार को अभी भी गरीबी, असमानता और पर्यावरणीय चुनौतियों जैसी कई समस्याओं का समाधान करना बाकी है।

(लेखक पूर्व जज्ज हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

भक्ति के लिए मन शुद्ध होना जरूरी

संकलित
दर्शन

एक सवाल करने वाले मन के साथ, एक संदेह करने वाले मन के साथ भक्ति की कोशिश मत कीजिए। यह जीवन की बर्बादी होगी। आज की दुनिया में, लोग इस तरह के बने हैं अगर भगवान सामने प्रकट होता है, वे उसके सामने समर्पण नहीं करेंगे, वे छानबीन करने की मांग करेंगे। वह बाकई भगवान है या नहीं? इस तरह के मन के साथ आप भक्त नहीं बन सकते।भक्ति आपकी भावनाओं को इतना मधुर बनाने के लिए है कि आपके जीवन का अनुभव सुंदर हो जाए लेकिन अभी, भक्ति के रूप में जो हो रहा है वह बस एक धोखा है। भक्ति के बारे में लोगों की सोच यह है, भगवान मैंने आपके लिए नारियल फोड़ा है, आप मुझे कल क्या देने वाले हैं? यह भक्ति नहीं है, यह एक खराब सौदा है। मान लीजिए आपके साथ मैं एक सौदा करने की कोशिश करता हूं। जहां मैं आपको दस रुपये देता हूं, लेकिन आपको मुझे दस करोड़ रुपये देने होंगे। क्या आप इस सौदे को करने को इच्छुक होंगे? हर कोई भगवान के साथ इसी किस्म का सौदा करने की कोशिश कर रहा है। आप इतने चतुर तो हैं ही कि आप मेरे साथ ऐसा सौदा नहीं करेंगे। मैं चाहता हूं कि आप जान लें कि वो भी ऐसा सौदा नहीं करता। एक भक्त का अपना कोई एजेंडा नहीं होता। उसका एकमात्र लक्ष्य होता है कि वह अपनी भक्ति की वस्तु में, अपने इष्टदेव में विलीन हो जाना चाहता है। उसका अपने जीवन में कोई दूसरा उद्देश्य नहीं होता। सिर्फ तभी भक्ति आपके लिए काम करेगी।

तन व मन दोनों पवित्र उसकी सुनते हैं महादेव

संकलित
प्रेरणा

मंदिर में जाकर नित्य नियम से दर्शन करने वाले भक्त पर भी महादेव जी उतने प्रसन्न नहीं होते, जितने उस व्यक्ति पर, जो जाति और धर्म का लिहाज छोड़कर एक ही दरिद्र व्यक्ति को शिव समझकर सेवा करता है। अनुभव करना ही धर्म का प्राण है। यदि देह मन शुद्ध न हो तो मंदिर में जाकर महादेव की पूजा करना व्यर्थ है। जिसकी देह और मन दोनों पवित्र हैं, महादेव जी उनकी प्रार्थना सुनते हैं। जो अशुद्ध स्वभाव होने पर भी दूसरों को धर्म सिखाने का दावा करते हैं, उनकी बुरी गति होती है। ब्रह्म पूजा तो मानस पूजा का सिर्फ बाहरी अंग है, मानस पूजा और चित्त शुद्धि ही असल चीज है। यदि यह न हो तो बाहरी पूजा करने से कुछ भी लाभ नहीं। चित्त का शुद्ध होना और दूसरों के भले के लिए उद्योग करना ही सभी प्रकार की उपासनाओं का सार है। शिव की यथार्थ पूजा वे ही लोग करते हैं जो दरिद्र, दुर्बल और रोगी में शिव का दर्शन करते हैं और जो सिर्फ मूर्ति में ही शिव की पूजा करता है, वह निराग्रहवर्तक है। व्याकुलता, ईश्वर प्राप्ति अथवा आत्मज्ञान के लिए उन्माद होना ही सच्ची धर्मपरायणता है। परार्थ सेवा परिपक्व काम है। इस सत्कर्म के बल से चित्त शुद्ध होता है और सब के भीतर जो प्रभु निवास करते हैं, वे प्रकट हो जाते हैं। वे जो सभी के हृदय में विराजमान हैं। यदि शीशे के ऊपर धूल पड़ गई है तो उसमें हम अपना स्पष्ट प्रतिबिंब नहीं देख सकते। हमारे दर्पण पर भी उसी तरह अज्ञान और पाप का मैल जम गया है। सब से बढ़कर मैल है, स्वार्थपरायणता पहले अपनी फिक्र करना।

सटाका

आज की पाती

देश ने खोया एक महान अर्थशास्त्री

हमारे देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले विश्वविख्यात अर्थशास्त्री मनमोहन सिंह का निधन दुखद है। उन्होंने 1991 में भारत की अर्थव्यवस्था के नाजुक दौर को संभालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह देश के लिए ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया के लिए महान अर्थशास्त्री की मिसाल है। उन्होंने कहा था कि, हजारों जवाबों से अच्छी है मेरी खामोशी, न जाने कितने सवालों की आबरू रखी। वह बोलते शायद कम थे, लेकिन जब बोलते थे तो उनकी हर बात में दम होता था, सच्चाई होती थी और देश-समाज के लिए भी अच्छे संदेश होते थे। उन्होंने देश को आर्थिक मंदी से उबारने के लिए जो उपाय बताए थे, पहले उपाय में उन्होंने जीएसटी को लर्कसंगत बनाने की सलाह दी, दूसरे में गांवों में खपत बढ़ाने और कृषि में सुधार लाने, तीसरे में पूंजी निर्माण और चौथे में नौकरी निर्माण की बात कही। *-राजेश चौहान, सुजानपुर*

ट्रेंड

विनिर्माण केंद्र बना भारत

भारत एक विनिर्माण केंद्र के रूप में तेजी से उभर रहा है।एक दशक पहले हमारा देश निर्यात, जहाँ लगभग दो हजार करोड़ था, सत्तर के प्रयासों से वह 21,000 करोड़ का आँकड़ा पार कर गया है। 2029 तक 50,000 करोड़ रुपये का लक्ष्य रखा है।

-राजनाथ सिंह, केंद्रीय मंत्री

निंदनीय घटनाएं

एक ओर देवास में दलित युवक की पुलिस कस्टडी में हत्या की गई। दूसरी तरफ बालाघाट में आदिवासी महिलाओं को पेड़ से बांधकर पीटा गया है। ये दोनों घटनाएं निंदनीय हैं। बीजेपी की कथुवादी सोच के कारण इस तरह की घटनाएं हो रही हैं।

-राहुल गांधी, नेता प्रतिपक्ष

मांगों का समाधान करो

अयोध्यादेवी पर पुलिस का लाठीचार्ज। आनाज पर बैठे युवाओं के साथ जानवरों जैसा व्यवहार, सरकार की तानाशाही का उदाहरण है। छात्र आंदोलन से उपजे नीतीश जी आपसे ऐसी उम्मीद नहीं थी। छात्रों की मांगों का समाधान करो।

-संजय सिंह, आप सांसद

भक्तिपूर्वक की भेंट स्वीकार

श्रीमद्भगवत गीता में, भगवान श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि जो भी शुद्धचित्त, कुछ सच्चे फल से पत्र, पुष्प, फल या जल भी अर्पण करता है, तो मैं ऐसे व्यक्ति की भक्ति पूर्वक दी गई भेंट को स्वीकार करता हूं।

-अनिल अग्रवाल, उद्योगपति

करंट अफेयर

बांग्लादेश को करारा जवाब देने की तैयारी में म्यांमार

शेख हसीना के कार्यकाल के दौरान बांग्लादेश ने खुद म्यांमार के संघर्ष से दूर ही रखा था, लेकिन अगस्त में हसीना को एक हिंसक विरोध प्रदर्शन के बाद सत्ता छोड़नी पड़ी थी। इसके बाद अई बांग्लादेश की अंतरिम सरकार म्यांमार में विद्रोहियों के साथ संपर्क बढ़ा रही है। हाल ही में म्यांमार के रखाइन प्रांत पर लगभग कब्जा जमाने वाली अराकान आर्मी और बांग्लादेश की सरकार के बीच संपर्क की खबरें हैं। इन सबका जवाब देने म्यांमार की सेना पूरी तैयारी कर रही है। म्यांमार की नौसेना ने अपने सबसे बड़े युद्धपोत किंग थालुन को 24 दिसंबर को समुद्र में उतारा है। इसी कार्यक्रम में दो 63 मीटर एंटी सबमरीन विध्वंसक जहाजों को शामिल किया है। म्यांमार के नए युद्धपोत किंग थालुन का नाम एक ऐतिहासिक राजा के सम्मान में रखा गया है। म्यांमार नेवी ने इसे समुद्री सुरक्षा और नवाचार के प्रति नौसेना की प्रतिबद्धता का प्रतीक बताया है। नए युद्धपोत की लंबाई 135 मीटर, चौड़ाई 14.5 मीटर और ऊंचाई 9 मीटर है। इसका ड्राफ्ट 4.1 मीटर है। यह युद्धपोत 3500 टन का भार झेलने की क्षमता रखने के साथ ही 30 समुद्री मील प्रति घंटे तक की गति प्राप्त कर सकता है। इसका निर्माण मार्च 2017 में नौसेना डॉकयार्ड कमांड मुख्यालय में शुरू हुआ था।

ऑफ बीट

सबरीमाला मंदिर में मंडला कमला पूजा का महत्व

सबरीमाला मंदिर में आयोजित की जाने वाली मंडला पूजा बहुत प्रसिद्ध है। पूजा के दौरान दूर-दूर से श्रद्धालु भगवान अयप्पा के मंदिर में आते हैं। मंडला पूजा के समय मंदिर हमेशा खुला रहता है और भक्त कभी भी भगवान के दर्शन कर सकते हैं। कई पुराणों में मंडला पूजा का जिक्र मिलता है। केरल के सबरीमाला मंदिर में मंडला पूजा की जाती है। सबरीमाला मंदिर भगवान अय्यप्पा का है। ये पूजा भगवान अयप्पा के भक्तों द्वारा किए जाने वाले 41 दिनों के लंबे तप के अंत का प्रतीक मानी जाती है। मंडला पूजा मंडला कलम के नाम से भी जानी जाती है। मान्यता है कि जो ये पूजा करता है, उसे साकारात्मक ऊर्जा मिलती है। सबरीमाला अयप्पा मंदिर में धनु मास के दौरान यानी जब सूर्य धनु राशि में होता है तब मंडला पूजा 11वें या 12वें दिन मनाई जाती है। इस व्रत की शुरुआत मंडला पूजा से 41 दिन पहले यानी मलयालम कैलेंडर के अनुसार जब सूर्य वृश्चिक राशि में होता है तब वृश्चिक मास के पहले दिन से होती है। भगवान अयप्पा के दर्शन के लिए 41 दिन पहले से तैयारी करनी होती है। यह पूजा नवंबर से शुरू होकर दिसंबर तक चलती है। सबरीमाला अयप्पा मंदिर में मंडला पूजा और मकर विलक्कू दो सबसे प्रसिद्ध कार्यक्रम हैं, जब मंदिर को ज्यादा दिनों तक भक्तों के लिए खुला रखा जाता है।

अपने विचार
हरिभूमि कार्यालय
पोस्टी-2, रतुवा तल, मानसरोवर कॉम्पलैक्स, वार्ड नं. 50, शिवाजी क्लार, निकट रानी कमलापति रेलवे स्टेशन, होशंगाबाद रोड, भोपाल, (म.प्र.) 462016
aapkepatra.haribhoomi@gmail.com
पर मेज सकते हैं।

13 हजार से अधिक ई-जर्नल तक आसान पहुंच होगी भारत के छात्रों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं की, उच्च शिक्षा में वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन योजना के माध्यम से।

वन नेशन-वन सब्सक्रिप्शन

देश में अनुसंधान एवं नवाचार का भविष्य

शोध और शिक्षा के क्षेत्र में भारत को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बनाने के उद्देश्य से सरकार ने वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन (ओएनओएस) योजना की शुरुआत की है। यह योजना छात्रों, शोधकर्ताओं और शिक्षकों को उच्च गुणवत्ता वाले वैश्विक संसाधनों तक समान पहुंच प्रदान करने के साथ-साथ अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इसके तहत छात्रों और शोधकर्ताओं को वैश्विक स्तर पर उच्च गुणवत्ता वाले जर्नल्स और संसाधनों तक पहुंच को आसान बनाया जाएगा, जिससे शोध की गुणवत्ता में सुधार के साथ ही नवाचार को भी प्रोत्साहन मिलेगा

प्रतीकात्मक

ड. अमरजीत कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं एनईपी कोऑर्डिनेटर, माधव विवि, सिरोही, राजस्थान

वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन योजना का लाभ केंद्र व राज्य सरकार के प्रबंधन के तहत आने वाले सभी उच्च शिक्षण संस्थानों, केंद्र सरकार के अनुसंधान एवं विकास संस्थानों के छात्रों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं को मिलेगा। इस योजना का संचालन सूचना और पुस्तकालय नेटवर्क (इन्फ्लिबनेट-ईकोमैंशन एंड लाइब्रेरी नेटवर्क) द्वारा किया जाएगा, जो इन्फ्लिबनेट सेंटर शिक्षा मंत्रालय के यूजीसी का एक अंतर-विश्वविद्यालय केंद्र है।

इन्फ्लिबनेट देशभर के शिक्षण और शोध संस्थानों को डिजिटल संसाधन उपलब्ध कराने में अग्रणी है। इस योजना के तहत, यह संस्थान एकीकृत मंच के माध्यम से देश के सभी विश्वविद्यालयों, कालेजों और शोध संस्थानों को जोड़कर यह सुनिश्चित करेगा कि छोटे एवं दूरदराज स्थित संस्थान भी उन संसाधनों का उपयोग कर सकें, जो वर्तमान में केवल प्रमुख विश्वविद्यालयों तक सीमित हैं। ओएनओएस योजना केवल प्रमुख महानगरीय क्षेत्रों में ही नहीं, बल्कि टियर टू और टियर थ्री शहरों में भी रहने वाले छात्रों, शोधकर्ताओं और शिक्षकों को भी वैश्विक स्तर पर सृजित हो रहे ज्ञान का लाभ उठाने का अवसर प्रदान करेगी।

अनुसंधान व नवाचार को बढ़ावा : राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) की संस्तुतियों के अनुसार, अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एएनआरएफ) की स्थापना पूरे देश में अनुसंधान और नवाचार की संस्कृति को विकसित करने तथा उसे बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन अधिनियम, 2023 के तहत की गई है। एएनआरएफ समय-समय पर 'वन नेशन-वन सब्सक्रिप्शन' के उपयोग और इन संस्थानों के भारतीय लेखकों के प्रकाशनों की समीक्षा करेगा। जिसका उद्देश्य देश में अनुसंधान और नवाचार की संस्कृति को प्रोत्साहित करना है। जहां ओएनओएस के माध्यम से देश के करोड़ों छात्र, शिक्षक और शोधकर्ता विश्व स्तर पर प्रकाशित हो रहे लगभग 13 हजार से अधिक ई-जर्नल तक आसान पहुंच हासिल कर सकेंगे। वहीं यह एएनआरएफ का लक्ष्य को पूरा करने में मददगार साबित होगा, जिसके तहत वैज्ञानिक अनुसंधान में कालेजों और विश्वविद्यालयों को शामिल करना है, क्योंकि वर्तमान में भारत में लगभग 40 हजार उच्च शिक्षण संस्थानों में से महज एक प्रतिशत से भी कम अनुसंधान में लगे हुए हैं।

इससे शोध की गुणवत्ता में सुधार होने के साथ ही हमारा देश वैश्विक अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिस्पर्धात्मक बनेगा। भारतीय प्रबंधन संस्थान, मुंबई के अनुसार, शोध कार्य के खर्च में यह योजना 18 प्रतिशत तक की कमी लाने में सहायक होगी, जिससे शिक्षण और अनुसंधान की गुणवत्ता में सुधार होगा। वर्तमान में धन की कमी के कारण शोधकर्ता महंगी अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं की सदस्यता पर निर्भर रहते हैं, जो उच्च शिक्षण संस्थानों पर वित्तीय बोझ डालती है। यह स्थिति छोटे और सीमित संसाधनों वाले संस्थानों में शोध और शिक्षा की प्रगति को बाधित करती है।

नवाचार माध्यमों की आवश्यकता : राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 ने शिक्षा में शोध और नवाचार को प्राथमिकता देते हुए छात्रों को शोध कार्य से जोड़ने के लिए नई नीति को लागू किया गया है। इसके तहत स्नातक स्तर पर छात्र शोध के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त कर सकता है। ऐसे में उपाधि के दौरान लघु शोध कार्य अनिवार्य किया गया है, जो उनके शोध कौशल को प्रारंभिक स्तर पर ही विकसित करने में सहायक होगा। इसके अतिरिक्त, 75 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को बिना स्नातकोत्तर किए सीधे पीएचडी में प्रवेश की अनुमति दी गई है, जिससे शोध को प्रोत्साहन मिलेगा।

यह योजना छात्रों और शोधकर्ताओं को वैश्विक स्तर पर उच्च गुणवत्ता वाले जर्नल्स और संसाधनों तक पहुंच प्रदान करती है, जिससे शोध की गुणवत्ता और नवाचार की क्षमता में सुधार होगा। हालांकि, इस दिशा में केवल वैश्विक संसाधन पर्याप्त नहीं हैं। भारतीय उच्च गुणवत्ता वाले जर्नल्स को भी ओएनओएस के तहत शामिल किया जाना चाहिए, ताकि शोधकर्ताओं को स्थानीय संदर्भ में प्रासंगिक सामग्री उपलब्ध हो सके। साथ ही, विश्वविद्यालयों को छात्रों के बीच शोध कार्यों की समझ विकसित करने के लिए सशक्त प्रयास करने होंगे।

चुनौतियां : पीएचडी में गुणवत्तापूर्ण शोध की कमी भारतीय शैक्षणिक प्रणाली में एक चुनौती बन गई है। इसका मुख्य कारण संसाधनों की अपर्याप्त उपलब्धता, अद्यतन ज्ञान तक सीमित पहुंच और शोधकर्ताओं में नवाचार के लिए आवश्यक प्रशिक्षण की कमी है। कई संस्थानों में शोध केवल डिग्री प्राप्त करने का साधन बन गया है, जिस कारण नवाचार और व्यावहारिक उपयोगिता पर जोर कम हो गया है। सदस्यता आधारित माडल बनाम ओपन-एक्सेस शोध पत्र भी इस स्थिति को और जटिल बना रहे हैं। सदस्यता आधारित माडल में उच्च गुणवत्ता वाले शोध पत्र और डाटा तक पहुंच का अधिकार केवल उन्हीं संस्थानों और व्यक्तियों को मिलता है जो महंगी सदस्यता शुल्क का भुगतान कर सकते हैं। इसके विपरीत, ओपन-एक्सेस माडल मुफ्त और सार्वभौमिक पहुंच प्रदान करता है, लेकिन सभी विषयों में गुणवत्तापूर्ण शोध सामग्री उपलब्ध नहीं होती। इस असंतुलन के कारण शोधकर्ताओं को जरूरी संसाधन नहीं मिल पाते, जिससे पीएचडी का स्तर प्रभावित होता है। ओएनओएस जैसे प्रयास सदस्यता आधारित माडलों की बाधाओं को दूर कर सकते हैं, लेकिन इसके साथ ओपन-एक्सेस पहल को भी प्रोत्साहित करने की जरूरत है, ताकि सभी शोधकर्ताओं को समान अवसर और संसाधन मिल सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और प्रारंभिक शिक्षा

ड. अनुराग सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, श्यामा प्रसाद मुखर्जी कालेज, दिल्ली विवि

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वजनिक पहुंच प्रदान करना वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में भारत की सतत प्रगति और आर्थिक विकास की कुंजी है। ये बातें इस तथ्य को ध्यान में रखकर कही जा रही हैं कि अगले दशक में भारत दुनिया का सबसे युवा जनसंख्या वाला देश होगा। यदि युवाओं को एक बेहतर मानव संसाधन के रूप में तैयार करना है तो शिक्षा उसमें सबसे महत्वपूर्ण है।

नई शिक्षा नीति में अवधारणात्मक समझ पर जोर दिया गया है। अभी तक यदि बिद्यालयी शिक्षा के प्रारूप को देखें तो उसमें रट कर पढ़ लेने वाली पद्धति हावी थी। एक बच्चे को कितनी चीजें याद हैं यह हमारे समाज में महत्वपूर्ण रहा, बजाय इसके कि वह किसे विषय को लेकर कितनी समझ रखता है। कई बार केवल ब्रचपन ही नहीं, अपितु बड़ी कक्षाओं की पढ़ाई भी केवल परीक्षा पास कर डिग्री ले लेने भर तक सीमित है। इस प्रक्रिया में केवल परीक्ष के समय पढ़कर पास हो जाना भर उद्देश्य है। यदि सामाजिक मान्यता केवल डिग्री भर लेना है तो शिक्षा की गुणवत्ता में कमी का होना स्वाभाविक है। इसलिए नई नीति में रचनात्मक व ताकिक सोच पर विशेष बल देकर केवल रट कर पास लेने वाली प्रणाली को बदलने की कोशिश की गई है। इस नए रूप में नैतिकता, मानवीय व संवैधानिक मूल्यों को बढ़ाने पर बहुत जोर दिया गया है। बिविधता और स्थानीय परिवेश के लिए सम्मान का भाव और भारतीय मूल्यों पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है।

विज्ञानियों एवं चिकित्सकों के अनुसार, एक स्वस्थ बच्चे का मस्तिष्क छह वर्ष तक की आयु में लगभग 85 प्रतिशत तक बिकसित हो जाता है। इसलिए आरंभिक छह वर्ष की अवस्था एक बच्चे के लिए बहुत महत्वपूर्ण होती है जिसमें उसके मानसिक एवं शारीरिक बिकास का ध्यान रखा जाना बहुत ही जरूरी हो जाता है, जिस ओर इस नीति में ध्यान दिया गया है। बच्चों का कम समय में ही शिक्षा को छोड़ देना एक बड़ी समस्य है। छठी-आठवीं तक 91 प्रतिशत, नौवीं-दसवीं में 79 और 11वीं-12वीं में केवल 56 प्रतिशत बिद्यार्थी ही आगे जा रहे हैं, यह चिंताजनक है। वर्ष 2030 तक माध्यमिक स्तर तक 100 प्रतिशत दर को कायम रखने की बात कही गई है।

इस नए पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण है मातृभाषा पर बल। जहां तक संभव हो आठवीं तक की पढ़ाई भी मातृभाषा में ही हो। यह न केवल सीखने की क्षमता व गति को बढ़ाएगा, अपितु मातृभाषा के संरक्षण एवं संवर्धन का भी एक बड़ा उपाय है। भाषा की शक्ति व बहुभाषिकता को बढ़ाए जाने पर जोर देनें से भारत के संस्कृतिक बैबिध्य की भी सुरक्षित किया जा सकेगा। राष्ट्रीय शिक्ष नीति को भारतीय ज्ञान प्रणाली के आधार पर तैयार करने पर बल दिया गया है। योजनाएं इस पर आधारित हैं, पर सबसे बड़ा सवाल योजनाओं के क्रियान्वयन पर है। प्रारंभिक शिक्षा के खस्ताहाल हो जाने का एक बड़ा कारण आधारभूत ढांचे का अभाव और बड़ी मात्रा में शिक्षकों के पद रिक्त हैं। कई जगह शिक्षक अपने दायित्व का निर्वहन नहीं कर रहे। इन सब ने सम्मिलित रूप से सरकारी प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था की छवि को धूमिल किया है। मजबूरी में भले लोग अपने बच्चों का वहां नामांकन करा दें, लेकिन सच्चाई यही है कि सक्षम परिवार उधर रुख नहीं करते। इन सबसे निपटना आज भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। यदि इन व्यावहारिक समस्याओं को सुलझा लिया गया तो निकट भविष्य में हम इस दिशा में बेहतर स्थिति में होंगे।

खरी-खरी

नागिन डांस

प्रभुनाथ शुक्ल

जिंदगी में अगर जोश नहीं है, तो फिर जीने का मतलब भी कुछ नहीं है। अलबत्ता यूं कहें कि जिंदगी का दूसरा नाम जोश है। यह दीगर बात है कि हम कभी-कभी जोश में होश खो बैठते हैं। जहां हम होश खो बैठते हैं, वहीं जिंदगी को हम जंग बना देते हैं। वैसे हमारे पड़ोस में ऐसे जोशीले लोग भरे पड़े हैं, जिनके जोश के आगे सर्कस के कलाबाज भी पानी भरते हैं। वह जिंदगी को बाजीगरी के रूप में देखते हैं। दरअसल ऐसे लोग असल जिंदगी में स्टंटमैन होते हैं। इनकी कलाबाजी के किस्से हमारी जिंदगी में आम होते हैं। घर से लेकर बाहर तक ऐसे स्टंटबाज देखने को मिल जाते हैं।

हमारे आसपास बिखरे कलाबाजी के बारे में मैं कभी-कभी गंभीर चिंतन करता हूं। ऐसे प्रजाति के लोगों को जन्म कुंडली देखता हूं तो पता चलता है कि ये बड़े गतिशील होते हैं। इनकी कुंडली में ठहराव शब्द का अभाव रहता है। इनकी गतिशीलता कुम्हार के चाक से भी अधिक गतिमान होती है। इनके जीवन में एक और खासियत होती है कि ये स्टंटबाज के साथ-साथ सेल्फीबाज भी होते हैं। कभी पहाड़ों, हैम और सड़कों पर बाइक रेसिंग करते समय अपनी सेल्फी और वीडियो इंटरनेट मीडिया पर डालकर लोगों में लोकप्रिय भी हो जाते हैं।

सड़कों पर रेसिंग करते ऐसे लोग खूब दिखते हैं। जाम में तो ऐसे स्टंटबाज नागिन डांस करते हैं। बाइक को नागिन की तरह नचाते हैं। अपने शरीर को भी लचीला छड़ बना लेते हैं। जैसे-जैसे बाइक नागिन डांस करती भीड़ में आगे बढ़ती है, वैसे-वैसे उनका शरीर भी डांस करता है। ट्रेन आने के पहले रेलवे फाटक बंद हो जाता है, लेकिन इनकी जिंदगी इतनी गतिशील है कि ऐसे लोग फाटक खूलने का इंतजार भी नहीं करते हैं, बल्कि स्वयं नागिन डांस करते हुए बंद रेल फाटक से क्रास कर जाते हैं। वे रेल कानून को भी अंगूठा दिखाते हैं। उनकी यह कलाबाजी आम लोगों को भी अच्छी लगती है, लेकिन अफसोस लोग ऐस नागिन डांस कर नहीं पाते। कभी वह समय भी आता है जब इनकी कलाबाजी परिवार, समाज और स्वयं इनके लिए एक बुरे हादसे में तब्दील हो जाती है और ये केवल तस्वीरों में याद बन कर रह जाते हैं।

पोस्ट

बीपीएससी परीक्षा में धांधली के आरोपों को लेकर पटना की सड़क पर उतरे हजारों छात्रों पर लाठी चार्ज अस्वीकार्य है। लोकतंत्र में छात्रों की बात सुनी जानी चाहिए। उनकी पीठ पुलिस की लाठी के लिए नहीं है, उस पर सत्ता के समर्थन-सहयोग का हाथ होना चाहिए।
अमिताभ अग्निहोत्री@Aamitabh2

लगता नहीं कि रोहित शर्मा और विराट कोहली संन्यास लेने वाले है। सिडनी में अंतिम टेस्ट के दौरान भी कमोबेश यही टीम रहेगी। कम से कम रोहित आराम के नाम पर तो बाहर बैठ सकते हैं और शुभमन गिल टीम में वापस आएं। अगर ऐसा नहीं होता तो समझिए कि भारतीय क्रिकेट में कुछ खिचड़ी खेल से भी बड़े हो गए है।
कुशल मेहरा@kushal_mehra

मेरे पिता (प्रणव मुखर्जी) के नागपुर स्थित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुख्यालय जाने पर उन्हें 'संघी' कहने वाले राहुल गांधी के 'भारतें' से यह पूछना है कि उनकी मां ने जिन नरेन्द्र मोदी को 'मौत का सौदागर' कहा, उनके साथ उन्होंने संसद में गलबहियां क्यों की?
शर्मिष्ठा मुखर्जी@Sharmistha_GK

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या आप मानते हैं कि रोहित शर्मा के विकल्प के रूप में जसप्रीत बुमराह टेस्ट टीम की कप्तानी के सबसे बड़े दावेदार हैं?

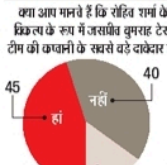

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल
क्या रोहित शर्मा-विराट कोहली टीम इंडिया की कमजोरी कही बन गए है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

आया है नववर्ष ते कहा रुकेंगे पैर,
राजा बाबु कर रहे वियतनाम की सैर।
वियतनाम की सैर रोजना येदिन आए,
भला देश मे बैठ कौन अब शोक मनाए!
गया शोक का गीत चार दिन जमकर गाया,
नाचे-गाए आल खुशी का दिन है आया!!
- ओमप्रकाश तिवारी

झंझावात को झेल और मजबूत हुईं ममता

बंगाल डायरी

जयकृष्ण वाजपेयी
राज्य ब्यूरो प्रमुख, बंगाल

वर्ष 2024 को समाप्त होने में कुछ घंटे ही बचे हैं। इसे वर्ष लोकतंत्र का सबसे बड़ा उत्सव लोकसभा चुनाव हुआ। संदेशखाली में महिलाओं पर अत्याचार, लोगों की जमीन हड़पने की घटनाओं के खिलाफ ग्रामीणों का उग्र विरोध प्रदर्शन भी देखा गया। आरजी कर मेडिकल कालेज एवं अस्पताल में डाक्टर से दुष्कर्म व हत्या के खिलाफ अभूतपूर्व नागरिक आंदोलन हुए। जनवरी से दिसंबर तक 2024 के 12 महीनों में बंगाल की राजनीति में घटनाओं की एक आवृत्ति रही। साल के अंत में देखा जा रहा है कि घोटालों, दुष्कर्म-हत्या, महिलाओं के विरुद्ध अपराध के खिलाफ आंदोलन, विरोध-प्रदर्शन और आलोचनाओं का झंझावात झेल कर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी राजनीतिक रूप से और मजबूत दिख रही हैं।

व्यवस्था विरोधी भारी नाराजगी के बावजूद ममता ने उपचुनावों में अपनी पकड़ नहीं खोई, बल्कि और अच्छे नतीजे लाकर अपनी मजबूत स्थिति दर्ज कराई। हालांकि, राज्य के 294 निर्वाचन क्षेत्रों में से केवल छह सीटों के नतीजे 'संकेतक' के रूप में बहुत सुसंगत नहीं हैं। परंतु आरजी कर कांड के बाद जिस तरह से जनाक्रोश सड़कों पर करीब दो माह तक दिखा था, उसने ममता के माथे पर 13 वर्षों के शासनकाल में पहली बार चिंता की लकीरें गहरा दी थीं। इसके बाद ऐसा लग रहा था कि बंगाल की राजनीति में बड़ा बदलाव हो सकता है, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उससे पूर्व 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले संदेशखाली की घटनाएं भी प्रदेश में ही नहीं, पूरे देश में चर्चा का विषय बन गई थीं और तृणमूल के लिए बड़ी असहज स्थिति पैदा कर दी थी। लेकिन सभी झंझावात को झेलते हुए ममता आज वहां खड़ी हैं, जहां उन्हें बंगाल में आइएनडीआइए के किसी भी सहयोगी दल की जरूरत नहीं है, यहां तक कि कांग्रेस की भी नहीं।

ममता अब पूरी तरह से प्रेटफुट पर आ चुकी हैं और उनका पूरा फोकस

ममता बनर्जी। फाइल

2026 विधानसभा चुनाव पर है। विषम परिस्थितियों के बावजूद लोकसभा के बाद विधानसभा के उपचुनावों में भी जिस तरह से तृणमूल के साथ मुस्लिम वोट बैंक अटूट रहा है उसने ममता का आत्मविश्वास कई गुणा बढ़ा दिया है। यही वजह है कि उन्होंने आइएनडीआइए की कमान संभालने तक की बातें कह डालीं। कांग्रेस के साथ उन्होंने दिल्ली में भी दूरी बना रखी है। अब वह बामपंथी दलों ही नहीं, कांग्रेस के साथ बंगाल में शायद ही कभी गठबंधन करेंगे, क्योंकि वह जान चुकी हैं कि अगर कांग्रेस या अन्य किसी बाम दल के साथ हाथ मिलाया तो मुस्लिम वोट इधर-उधर हो सकता है। यही वजह है कि वह कभी नहीं चाहेंगी कि भाजपा विरोधी चेहरे के रूप में उनका कोई और राज्य में स्वभागी बने। ममता को पता है कि मौजूदा राजनीतिक स्थिति में उन्हें बंगाल में हराना भाजपा या अन्य किसी दल के लिए संभव नहीं है। अपनी स्थिति को और मजबूत करने के लिए पार्टी से लेकर सरकार के अंदर तक पूरी लगाम उन्होंने अपने हाथों में पकड़ रखी है। यहां तक कि मंत्रियों को भी सख्त निर्देश दिए हैं कि बिना मुख्यमंत्री कार्यालय को सूचना दिए किसी भी समारोह और कार्यक्रम में नहीं जाएं। सीएम कार्यालय से अनुमति मिलने के बाद ही मंत्री किसी समारोह या कार्यक्रम में जा पाएंगे।

पार्टी संगठन की पूरी कमान भी ममता ने अपने हाथों में ले रखी है। पहले संगठन के अंदर उनके भतीजे व पार्टी महासचिव अभिषेक बनर्जी का भी हस्तक्षेप था। अब ऐसा नहीं है। ममता ने पार्टी की राष्ट्रीय कार्य समिति से लेकर मीडिया सेल तक में बदलाव कर अपने पुराने भरोसेमंद सहयोगियों को स्थान दिया है। नए वर्ष में संगठन में बड़े फेरबदल होने की चर्चा है। फेरबदल के लिए अभिषेक ने भी सभी स्तरों से फीडबैक लेकर अपनी सिफारिश पार्टी सुप्रीमो को सौंपी थी। देखने वाली बात होगी कि ममता उन सिफारिशों पर अमल करती हैं या नहीं। अभिषेक 2021 के विधानसभा चुनाव के बाद ही चुनावी रणनीतिकार प्रशंत किशोर की सलाह पर पार्टी में 'एक व्यक्ति, एक पद' लागू करने की योजना बनाई थी। साथ ही, पार्टी में नेताओं के लिए उम्र सीमा भी तय करने की भी बात कही थी। परंतु ममता ने उनके इन सुझावों को गंभीरता से नहीं लिया। उन्हें पता है कि उन्हें पार्टी को चलाने के लिए क्या करना है।

दूसरी ओर अगर राज्य की मुख्य विपक्षी दल भाजपा को देखें तो वर्ष 2024 में कुछ खास नहीं कर पाई है। साल के अंत में भाजपा बंगाल में पहले से भी ज्यादा खराब स्थिति में नजर आ रही है। वहीं माकपा नेतृत्व वाले वामपोर्चा-कांग्रेस की स्थिति 'दयनीय' है, वे अभी भी बंगाल की राजनीति में प्रासंगिक बने रहने की ही लड़ाई लड़ रहे हैं। लोकसभा चुनाव इस साल बंगाल के राजनीतिक दलों के लिए सबसे बड़ी परीक्षा थी। इस चुनाव में तृणमूल 22 से बढ़कर 29 हो गईं। वहीं भाजपा 18 से 12 पर आ गई है। कांग्रेस भी दो से सिमट कर एक सीट पर आ गई। पांच बार के सांसद अधीर रंजन चौधरी बहरमपुर में चुनाव हार गए। माकपा समेत वामपंथी दल युवा और पुराने नेताओं को उम्मीदवार बनाकर भी अपने शून्य के रिकार्ड को नहीं तोड़ पाए। कांग्रेस और बाम दल विधानसभा में भी शून्य ही हैं। विपक्षी दलों की यह स्थिति ममता की राजनीति के लिए अनुकूल है और वह स्वयं को लोकलुभावन योजनाओं विशेषकर लोगों में नकदी बांटकर अपने वोट बैंक को मजबूत कर शक्तिशाली हो रही हैं।

मंथन

आर्थिक धोखाधड़ी का नया जरिया

फर्जी इक्विटी कंपनी बनाकर आम निवेशकों को झांसे में लेकर उनसे एप के माध्यम से निवेश करवाने के बाद उस रकम को फ्रीज करते हुए हड़प लिया जाता है, जिससे बचाव जरूरी है

ड. हरीश कुमार सिंह
आर्थिक मामलों के जानकार

तकनीकी विकास के साथ ही आम आदमी को लूटने, उसके साथ धोखाधड़ी करने के लिए अपराधियों द्वारा भी नए नए तरीके बिकसित किए जा रहे हैं। मोबाइल के जरिये ओटीपी मांगने, लिंक पर क्लिक करने के तरीके पुराने हो गए हैं। साइबर अपराधी अब स्टाक मार्केट में निवेश कराकर आर्थिक धोखाधड़ी कर रहे हैं। फर्जी इक्विटी कंपनी और एप बनाकर लोगों से स्टाक निवेश कराकर और उसे स्टाक एक्सचेंज से किसी तरह अवैध रूप से लिंक करके निवेश की राशि को बढ़ाकर और फिर निवेशक को और अधिक निवेश बढ़ाने को कहकर एवं ऐसा नहीं करने पर निवेशित राशि को फ्रीज कर हड़प जा रहा है। वस्तुतः आजकल कई नए तरीकों से धोखाधड़ी बढ़ गई है।

वाट्सअप समूह : सबसे पहले आम निवेशकों को स्टाक मार्केट से संबंधित प्रशिक्षण और जानकारी देने के नाम पर वाट्सअप समूह में शेयर मार्केट की नियमित जानकारी दी जाती है और समूह में सक्रिय रहने पर कुछ अंक दिए जाते हैं। अंकों की संख्या बढ़ने पर उन्हें नकद पुरस्कार भी दिया जाता है जिसे निवेशक के बैंक खाते में भेज दिया जाता है। एक्सपर्ट द्वारा नियमित स्टाक मार्केट का बिश्लेषण किया जाता है जिससे निवेशक को भरोसा हो जाता है कि ये सचमुच के बिशेषज्ञ हैं। फिर निवेशकों को कोई स्टाक खरीदने की सलाह दी जाती है और कीमत बढ़ने पर उसे बेचने की सलाह दी जाती है।

फर्जी निजी इक्विटी कंपनी से जोड़ना : कुछ समय बाद बताया जाता है कि ब्लाक डील्स के जरिये निवेशक भारी कमाई कर सकता है। ब्लाक डील्स में कंपनियां, इक्विटी कंपनी को स्टाक की चल रही कीमत से कम में अपनी कंपनी के शेयर आफर करती हैं। इक्विटी कंपनी अपने छोटे निवेशकों से फंड लेकर एक साथ उसे दिन ब्लाक डील करती है और फंड के हिसाब से अलग अलग शेयर अलग अलग निवेशकों को आवंटित किए जाते हैं। निवेशकों को इक्विटी कंपनी के जरिये कम मूल्य में शेयर मिलते हैं और अगले दिन इन शेयरों को एक साथ बेचकर, अलग अलग निवेशक इक्विटी कंपनी के साथ खेले गए खाते में मुनाफा अर्जित कर लेता है।

अधिक निवेश के लिए दबाव : हो सकता है कि इक्विटी कंपनियां ऐसी ब्लाक डील्स से स्वयं भी कमाई करती हों, परंतु चूंकि ये कंपनियां ही फर्जी होती हैं (जैसाकि एक वाट्सअप ग्रुप से जुड़ने के बाद लेखक को पता चला), लिहाजा यह इक्विटी कंपनी असली इक्विटी कंपनी की तरह ही एनएसई/ बीएसई से जुड़ी होकर, फर्जी इक्विटी कंपनी थी जो निवेशक के शेयर बेचने पर असली पोर्टल की तरह ही प्राफिट भी दिखाती है। पता नहीं किस तरह से यह 'ब्रेक एंड' से अपनी फर्जी इक्विटी कंपनी को शेयर मार्केट के प्रतिदिन के उतार-चढ़ाव के अनुसार अपडेट रखते हैं, जिससे प्रभावित होकर निवेशक इनकी फर्जी इक्विटी कंपनी पर भरोसा कर लेते हैं।

झांसे में लेना : वाट्सअप समूह में अधिकतर निवेशक धोखाधड़ी करने वालों के निवेशक ही होते हैं जो समूह में अपना निवेश बढ़ा-चढ़ा कर बताते हैं और दूसरे आम निवेशक इनके झांसे में आकर निवेश की राशि को बढ़ाते जाते हैं। धोखाधड़ी करने वालों के आदमी यानी इन्फ्लुएंसर बताते हैं कि निवेशक किस प्रकार अधिक फंड जुटाए, उसके लिए अपनी प्रापर्टी को गिरवी रखना, उधार लेना या पर्सनल लोन लेना भी हो सकता है। कई बार निवेशक के पास

प्रतीकात्मक

जब रकम नहीं होती है तो वे उसे कुछ दिन की क्रेडिट भी उपलब्ध करा देते हैं या स्वयं की कंपनी से ऋण दे देते हैं। जब तक पूरा ऋण वापस नहीं आता, निवेशक अपनी जमा राशि निकाल नहीं सकता और जब जमा कर देता है तो कोई कारण बताकर राशि नहीं निकालने दी जाती है और निवेशक ठगा जाता है।

आइपीओ के जरिये निवेश : शेयर बाजार में चल रहे नए आइपीओ ही नहीं, बल्कि जिन कंपनियों के आइपीओ नहीं निकले हैं उनके शेयर भी बेच दिए जाते हैं। कहा जाता है कि कंपनी को पूंजी की जरूरत है, इसलिए वह व्यक्तिगत स्तर पर शेयर बेचना चाहती है। निवेशक झांसे में आ जाता है। इक्विटी कंपनी में कम से कम दस हजार शेयर के लिए आवेदन करना होता है और धोखाधड़ी करने वाले अधिक से अधिक शेयर आवेदन करने को कहते हैं यह बताकर कि अधिकतम 15 प्रतिशत शेयर आबंटित होंगे। फिर 90 प्रतिशत शेयर आबंटित कर दिया जाता है। आम निवेशक को यह बताया जाता है कि आप भाग्यशाली हैं, इसलिए ऐसा हुआ।

अब आम निवेशक इतनी बड़ी रकम कैसे जुटा पाएगा? प्राड यहीं से शुरू होता है। जब निवेशक इतनी बड़ी रकम इक्विटी कंपनी के खाते में जमा करने में असमर्थ रहता है तो निवेशक की जमा रकम को जब्त करने की धमकी दी जाती है। कानूनी कार्रवाई करने व एनएसई पर डाटा अपलोड कर निवेशक पर प्रतिबंध का डर दिखाया जाता है। जब निवेशक राशि जमा कर देता है तो वाट्सअप समूह बंद करके भाग जाते हैं और जो निवेशक राशि जमा नहीं कर पाता है उसकी जमा राशि हड़प लेते हैं। इस संबंध में की गई एक केस स्टडी में यह साबित भी हो चुका है।

****

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 17 अंक 271

आश्वस्त करते रुझान

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय ने घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण यानी एचसीईएस का 2023-24 का संस्करण गत सप्ताह जारी किया। हाल के महीनों में देश की अर्थव्यवस्था में मांग की स्थिति को लेकर तमाम चिंताएं जाहिर की गईं, खासकर बड़े शहरों में। इसके अलावा व्यापक अर्थव्यवस्था की दिशा पर इसके असर को लेकर भी बात हो रही थी। ऐसे में इस सर्वे की उत्सुकता से प्रतीक्षा थी। इसके आंकड़ों की जब ऐतिहासिक इजाफे से तुलना की जाती है तो कुछ राहत मिलती है। ग्यारह सालों के अंतराल के बाद गत दो वर्षों से एचसीईएस के आंकड़े जारी किए जा रहे हैं। जब विगत दो वर्षों में परिवारों के मासिक प्रति व्यक्ति व्यय की तुलना की जाती है तो पता चलता है कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में इसमें औसतन 3.5 फीसदी का इजाफा हुआ है। यह ग्रामीण क्षेत्रों के ऐतिहासिक औसत के अनुरूप है जबकि शहरी इलाकों की बात करें तो यह 2022-23 के पूर्व 11 साल के अंतराल में परिवारों के मासिक प्रति व्यक्ति व्यय में देखी गई तीन फीसदी की वार्षिक चक्रवृद्धि दर से काफी अधिक है। उद्योग जगत ने इस पर जोर दिया है कि शहरी और ग्रामीण इलाकों में खपत का अंतर कम हो रहा है। परंतु वृद्धि का समर्थन करने वाली मांग से जुड़ी चिंताओं को देखें तो शायद यह ध्यान देना अधिक महत्त्वपूर्ण है कि शहरी इलाकों में औसत व्यय धीमा होता नहीं नजर आता।

हालांकि एचसीईएस से कम से कम एक अहम नीतिगत प्रभाव उभरा और वह गत वर्ष के संस्करण में भी साफ नजर आया: एचसीईएएस में खाद्य पदार्थों पर किए जाने वाले पारिवारिक व्यय को जिस तरह दिखाया गया है वह आधिकारिक उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में भली भांति नहीं नजर आता। सर्वे में पाया गया कि शहरी परिवार अपने बजट का 60 फीसदी हिस्सा खाद्य पदार्थों के अलावा खर्च करते हैं जबकि ग्रामीण परिवार अपने व्यय का करीब आधा हिस्सा दूसरी चीजों पर खर्च करते हैं। विकसित देशों की तुलना में यह काफी अधिक है लेकिन बजट में खाद्य पदार्थों की हिस्सेदारी में गिरावट के रुख को नकारा नहीं जा सकता है। खाद्य पदार्थों पर इस व्यय के साथ अर्थशास्त्रियों ने यह भी कहा कि खाद्यान्न से सब्जियों और पैकेटबंद खाद्य पदार्थों की दिशा में भी बदलाव आएगा। लोगों के खाद्य बजट में अब सब्जियों और पैकेटबंद चीजों की ही बड़ी हिस्सेदारी है। प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद ने एक हालिया रिपोर्ट में कहा कि सर्वे में शामिल लोगों में से सबसे गरीब 20 फीसदी लोगों में यह हिस्सेदारी सबसे तेजी से घटी है। उसने इस गिरावट को सार्वजनिक वितरण प्रणाली के जरिये निःशुल्क खाद्यान्न वितरण से जोड़ा है। उसी रिपोर्ट में इस तथ्य को भी रेखांकित किया गया है कि खाद्यान्न कीमतों में मौसमी उतार चढ़ाव 2011-12 से कम हुए हैं। यह शायद बेहतर आपूर्ति श्रृंखला ढांचे के कारण संभव हुआ।

व्यय में इन बदलते रुझानों तथा मुद्रास्फीति सूचकांक में संशोधन, खाद्य सुरक्षा नीतियों और कृषि सब्सिडी आदि पर ध्यान देना जरूरी है। सरकार को कृषि सुधारों से पीछे हटना पड़ा था लेकिन चूंकि गरीब से गरीब लोगों की खपत में भी ये बदलाव आ रहे हैं इसलिए अधिक समय तक इससे दूर नहीं रहा जा सकता है। कृषि सब्सिडी को दुरुस्त करने का काम लंबे समय से अटका है। उपभोक्ता मूल्य सूचकांकों में भी खाद्य पदार्थों पर अधिक जोर नहीं दिया जाना चाहिए। खासतौर पर अनाजों पर क्योंकि भोजन में उनकी हिस्सेदारी कम हो रही है। रिजर्व बैंक के ब्याज दर निर्धारण की कुछ आलोचना हुई है क्योंकि उसे खाद्य कीमतों में होने वाले बदलावों पर सख्ती से प्रतिक्रिया करनी पड़ी है। जबकि मौद्रिक नीति ऐसी कीमतों को प्रभावित करने के लिए सीमित मात्रा में ही कदम उठा सकती है। खुदरा महंगाई सूचकांक में खाद्य पदार्थों के लिए अधिक भार इस तनाव को कम करने में मदद करेगा। इससे मौद्रिक नीति को में यह गुंजाइश बनेगी कि अनुमानों तथा अन्य वृहद मुद्दों पर प्रतिक्रिया दे सके।

विनय सिन्हा

सही नहीं है सीपीटीपीपी का अवसर गंवाना

कोई नहीं बता सकता कि ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में व्यापार की दिशा क्या होगी। इसलिए भारत को दुनिया के सबसे बड़े व्यापार समूह में अपनी जगह फौरन पक्की कर लेनी चाहिए। समझा रही हैं अमिता बत्रा

अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने मेक्सिको और कनाडा से होने वाले आयात पर ऊंचा कर लगाने का बयान हाल ही में दिया है, जिसके बाद विश्व व्यापार के दो पहलुओं पर आशंका के बादल मंडराने लगे हैं - फ्रेंडशोरिंग (सहयोगी देशों में उत्पादन करना या उनसे कच्चा माल लेना) और अमेरिका-मेक्सिको-कनाडा समझौता (यूएसएमसीए)। पहले का अमेरिका के उन करीबी देशों पर सीधा असर पड़ेगा, जिन्होंने मान लिया होगा कि ट्रंप के शुल्क वृद्धि के फैसले से उनके लिए राह आसान हो जाएगी। बाद वाले पहलू को देखें तो ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में संस्थाओं और कानूनों की समीक्षा होगी, चाहे अतीत में उन्हें अमेरिकी हितपूर्ति के लिए ही क्यों न बनाया गया हो।

कनाडा और मेक्सिको पर ऊंचे शुल्क लगाने से यूएसएमसीए का उल्लंघन होगा, जो उत्तर अमेरिका के इन तीन देशों को तरजीह देने वाला व्यापार समझौता है। 2020 में इसे उत्तर अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौते की जगह लागू किया गया था। शुल्क वृद्धि हुई तो 2022 के इनफ्लेशन रिडक्शन एक्ट को भी चुनौती मिलेगी। इस समझौते के तहत मेक्सिको और कनाडा को उत्पाद के मूल स्रोत के मामले में तरजीह दी जाती है ताकि खास तौर पर इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) में क्षेत्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं को बढ़ावा दिया जा सके।

स्पष्ट है कि ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में वैश्विक व्यापार में काफी अनिश्चितता रहेगी। भारत की व्यापार नीति देखें तो जोखिम से बचने के लिए स्थिर, वैकल्पिक संस्थागत व्यवस्थाओं और/अथवा समझौतों में भागीदारी के जरिये व्यापार में विविधता बढ़ाने की जरूरत है। इस समय भारत के सामने तीन बड़े क्षेत्रीय व्यापार समझौतों के विकल्प हैं जो हैं- इंडो-पैसिफिक इकनॉमिक फ्रेमवर्क फॉर प्रॉस्पैरिटी (आईपीईएफ), रीजनल कॉम्प्रिहेंसिव इकनॉमिक पार्टनरशिप (आरसेप) और कॉम्प्रिहेंसिव ऐंड प्रोग्रेसिव ट्रांस-पैसिफिक पार्टनरशिप (सीपीटीपीपी)। जोखिम कम करने के लिहाज से सबसे अच्छा तो इन तीनों में भागीदारी करना होगा। इससे व्यापार तथा वैश्विक मूल्य श्रृंखला में में शामिल होने की ज्यादा से ज्यादा संभावनाएं भी खुल जाएंगी। आईपीईएफ की बात करें तो भारत आईपीईएफ के तीनों स्तंभों का सदस्य है। ये स्तंभ हैं: आपूर्ति श्रृंखला, स्वच्छ ऊर्जा, और कर तथा भ्रष्टाचार विरोध। लेकिन वह चौथे स्तंभ यानी व्यापार से अलग रहा है। लेकिन जीवीसी में व्यापार-निवेश गठजोड़ को देखते हुए व्यापार में भारत की भागीदारी के भी पर्याप्त आधार हैं। मगर अभी शायद उसका सही समय नहीं है।

आईपीईएफ समझौतों के परिणाम अलग से नजर नहीं आते और ये समझौते बाध्यकारी होने के बजाय सिफारिशी भर हैं, इसलिए मुक्त व्यापार समझौतों या बड़े क्षेत्रीय व्यापार समझौते की तुलना में यह आर्थिक एकीकरण का कमजोर उपाय साबित होता है। आईपीईएफ कार्यकारी समझौता है और चुनाव प्रचार के दौरान ट्रंप इशारा कर चुके हैं कि जीतने पर वह इसे खत्म कर देंगे। ऐसे में आईपीईएफ के अस्तित्व पर ही संशय मंडरा रहा है।

जहां तक आरसेप और सीपीटीपीपी की बात है तो 2019 में बाहर होने के बाद भारत जोर-शोर से कहता रहा है कि वह आरसेप में वापस नहीं जाएगा। यह तब है, जब आरसेप ने भारत के लिए दरवाजे खोल रखे हैं और इसके स्रोत के नियम, मूल्य श्रृंखला के गहरे एकीकरण आदि से कई फायदे हो सकते हैं। सीपीटीपीपी की बात करें तो नीतिगत रूप से भारत ने इस पर ध्यान ही नहीं दिया है।

सीपीटीपीपी की स्थापना 2018 में हिंद-प्रशांत व्यापार समूह के तौर पर की गई थी। इसमें जापान, सिंगापुर, वियतनाम और ऑस्ट्रेलिया सहित 11 देश शामिल हुए थे। यूनाइटेड किंगडम को इस वर्ष इसका 12वां सदस्य बनाया गया। इसके सात सदस्य आरसेप के भी सदस्य हैं। चीन ने 2020 में इसकी सदस्यता के लिए अर्जी डाली थी मगर अभी तक उसे सदस्य नहीं बनाया गया है। सदस्यता के लिए औपचारिक आवेदन करने वालों की सूची लंबी है और दक्षिण कोरिया, थाईलैंड तथा इंडोनेशिया जैसे देशों ने इसमें अनौपचारिक रुचि भी दिखाई है। इसके नियम कायदों में विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के नियम शामिल हैं। सदस्य देशों के बीच लगभग सभी वस्तुओं और सेवाओं के लिए शुल्क मुक्त व्यापार मुहैया कराने तथा निवेश का उदारीकरण करने के अलावा सीपीटीपीपी ऊंचे दर्जे के निवेशक संरक्षण नियम, बौद्धिक संपदा अधिकार नियम, व्यापक ई-कॉमर्स संकल्प तथा विवाद निपटारा प्रणाली लागू करता है।

सदस्यता सभी के लिए खुली है लेकिन औपचारिक आवेदन पर विचार तभी होता है, जब सभी सदस्य देश नया सदस्य शामिल करने के लिए कार्यसमूह बनाने पर राजी हों। इसके बाद आवेदन करने वाले देश को समझौतों के उच्च मानकों का पालन करने के लिए तैयार रहना पड़ता है।

पिछले छह साल में केवल एक नया सदस्य शामिल किया गया है और दिलचस्पी रखने वाली दूसरी अर्थव्यवस्थाएं अभी इंतजार ही कर रही हैं। इससे प्रवेश की इस लंबी प्रक्रिया पर सवाल उठे हैं। वैश्विक अनिश्चितता बढ़ती देखकर प्रवेश प्रक्रिया पर पुनर्विचार करने की सलाह आई है और सभी आवेदकों को एक साथ समूह में शामिल करने का सुझाव भी दिया गया है।

ऐसे में भारत के आवेदन के लिए यह समय सही लग रहा है। अगर प्रक्रिया बदली गई तो भारत इससे सबसे बड़े, खुले और नियमों पर चलने वाले व्यापार समूह से बाहर नहीं छूटेगा। प्रवेश प्रक्रिया नहीं बदली तो भी मौजूदा भू-राजनीतिक हालात की वजह से दूसरे देशों के बजाय भारत को जल्दी शामिल किया जा सकता है।

सीपीटीपीपी में शामिल होने का औपचारिक इरादा जाहिर करने से जरूरी सुधार लागू करने और अपने घरेलू नियमों को उच्चतम वैश्विक मानकों के हिसाब से ढालने की भारत की इच्छा और संकल्प भी जाहिर होगा। चीन से अपना निवेश हटा रही बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भारत अपने यहां लाना चाहता है। इस लिहाज से भी सीपीटीपीपी के लिए आवेदन कारगर रहेगा। वियतनाम में हम ऐसा होते देख चुके हैं। वह सीपीटीपीपी का सदस्य है और यूरोपीय संघ के साथ उसका मुक्त व्यापार समझौता भी है। इसलिए चीन प्लस वन नीति का उसे काफी फायदा मिल रहा है।

यह सही है कि सीपीटीपीपी के व्यापार नियम पहले ही तय हैं और भारत वहां नियम तैयार करने में योगदान नहीं कर सकेगा। परंतु यह भी समझना चाहिए कि सीपीटीपीपी हर देश को विभिन्न कारोबारी क्षेत्रों में जरूरी मानकों तक पहुंचने का रास्ता और अवधि चुनने की पूरी छूट देता है।

यानी समझौते में नए सदस्यों के लिए छूट भी है और घरेलू सुधारों की पूरी गुंजाइश भी है। यूनाइटेड किंगडम को ही देख लीजिए। वहां इस बात पर राय बंटी हुई थी कि निवेश से जुड़े कुछ नियम स्वीकारने का नतीजा क्या होगा। मगर इसी बीच कुछ सदस्य देशों के साथ द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौतों और निवेश संबंधों को ध्यान में रखते हुए समझौतों पर हस्ताक्षर कर दिए गए। सीपीटीपीपी की सदस्यता के लिए यूनाइटेड किंगडम ने जो मोलभाव किया, उसका सावधानी से अध्ययन करना मददगार साबित हो सकता है।

कुल मिलाकर ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में लगातार अनिश्चित होते वैश्विक व्यापार के बीच अगर भारत इस समय सीपीटीपीपी की सदस्यता पाने के लिए औपचारिक आवेदन करता है तो उसे स्थिर, नियमों पर चलने वाली व्यापार व्यवस्था में प्रवेश मिल सकता है और व्यापार तथा वैश्विक मूल्य श्रृंखला की दृष्टि से गतिशील व्यापार समूह में आर्थिक एकीकरण बढ़ाने का मौका भी मिल सकता है।

(लेखिका सीएसईपी की सीनियर फेलो और जेएनयू में अर्थशास्त्र की प्रोफेसर हैं)

नब्बे के दशक में मनमोहन सिंह के आर्थिक सुधार

भारत में आर्थिक सुधारों की बुनियाद रखने वाले पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर सभी क्षेत्रों के लोगों ने गहरा दुख जताया। अर्थशास्त्रियों के साथ राजनेताओं, अधिकारियों और पत्रकारों ने भी सिंह की असाधारण प्रतिभा को नमन किया और शोक प्रकट किया। प्रधानमंत्री पी वी नरसिंह राव का पूरा समर्थन मिलने पर सिंह ने 1991 के भुगतान संकट की गंभीर चुनौती को आर्थिक सुधार लागू करने का अवसर बना दिया। उस दौरान भारत में आर्थिक सुधारों का ऐसा व्यापक और लंबा दौर शुरू हुआ, जो देश ने पहले कभी नहीं देखा था। ज्यादातर लोग इस बात से सहमत होंगे मगर इन सुधारों के प्रमुख बिंदुओं और बड़े नीतिगत कदमों की याद कुछ लोगों को ही होगी। इन बिंदुओं का संक्षिप्त ब्योरा हमें समझा देगा कि आर्थिक मामलों के माहिर मनमोहन सिंह के हम सब कितने ऋणी हैं।

वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ने की पहल

सबसे पहला और अहम कदम था भारतीय बाजार को वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ ठीक से जोड़ना। इससे पहले लगभग चार दशकों से चल रही अंतर्मुखी विकास नीति के कारण 1950 से ही भारत की प्रति व्यक्ति आर्थिक वृद्धि दर 2 प्रतिशत से नीचे रही थी। विदेश से आने वाले सामान और सेवा पर 300 प्रतिशत का भारी-भरकम शुल्क लग रहा था। 1991 से अगले पांच साल में इसे घटाकर 50 प्रतिशत कर दिया गया, जो तब भी ज्यादा था। पूंजीगत वस्तुओं, मध्यस्थ वस्तुओं और कच्चे माल पर लगने वाले सभी बेजा आयात प्रतिबंध और नियंत्रण वाणिज्य मंत्रालय के सक्रिय सहयोग से खत्म कर दिए गए। उपभोक्ता वस्तुओं पर ये नियंत्रण 2001 में ही खत्म हो पाए। 1991 से अगले पांच साल तक रुपये की कीमत गिरने दी गई और मुद्रा विनिमय दर की अपारदर्शी व्यवस्था खत्म कर 1993 तक बाजार से तय होने वाली विनिमय दर लागू कर दी गई। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) और तकनीक हस्तांतरण से जुड़े कायदे काफी उदार बनाए गए और विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) को 1992 में भारतीय शेयर बाजार में निवेश की अनुमति दे दी गई। इसका नतीजा यह हुआ कि निर्यात तेजी से बढ़ा, पूंजी निवेश में भी तेजी आई और विदेश मुद्रा भंडार नई ऊंचाइयों पर पहुंच गया।

शंकर आचार्य

उद्योगों से कड़े नियंत्रण खत्म

दूसरा बड़ा और अहम कदम उद्योग के विनिवमन से जुड़ा था। जुलाई 1991 में जब मनमोहन सिंह ने अपना पहला ऐतिहासिक बजट पेश किया तब उद्योग मंत्रालय ने नई औद्योगिक नीति का प्रस्ताव संसद के पटल पर रख दिया। इस प्रस्ताव के बाद उद्योग जगत में लाइसेंस से जुड़ी कड़ी शर्तें एक तरह से खत्म ही हो गईं। दशकों से इन शर्तों के कारण भारत में उद्योग रफ्तार नहीं पकड़ पाए थे और नवाचार भी नहीं हो रहा था। सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित रखे गए क्षेत्रों की संख्या भी कम कर दी गई। सरकार के इस कदम से विमानन और दूरसंचार क्षेत्रों में तेज वृद्धि का रास्ता साफ हो गया। आश्चर्य की बात नहीं कि वर्ष 1992 से 1997 के बीच औद्योगिक वृद्धि दर 8 प्रतिशत के करीब पहुंच गई। भारत के इतिहास में औसत आर्थिक वृद्धि दर पहली बार 7 प्रतिशत के करीब पहुंची थी।

वित्तीय क्षेत्र में सुधार

भारत के वित्तीय क्षेत्र में 1991 में सार्वजनिक बैंकों का दबदबा था। मगर ब्याज दरों पर कड़ा नियंत्रण रखने, नकद आरक्षी अनुपात (सीआरआर) और सांविधिक तरलता अनुपात (एसएलआर) को ऊंचा रखकर बैंकों के संसाधन हथियाने, ऋण आवंटन पर सख्त नियंत्रण तथा भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के दूसरे सख्त नियंत्रण के कारण उसकी हालत अच्छी नहीं थी। 1990 तक एसएलआर लगभग 40 प्रतिशत हो गया था। वर्ष 1991 से 1996 के दौरान ब्याज दरों पर नियंत्रण समाप्त कर दिया गया और सीआरआर तथा एसएलआर काफी कम कर दिए गए। शुरुआती निजी बैंकों (आईसीआईसीआई बैंक और एचडीएफसी बैंक भी शामिल) को लाइसेंस दिए गए।

मौद्रिक नीति का नया स्वरूप

इस दौरान मौद्रिक नीति व्यवस्था नियंत्रण की बेड़ियों से निकलकर नए जमाने की जरूरतों के हिसाब से तय होने लगी। इसका मुख्य ध्यान नीतिगत ब्याज दरों और अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति पर केंद्रित हो गया। केंद्र सरकार अस्थायी ट्रेजरी बिल के जरिये मनमाना उधार लिया करती थी मगर 1994 में सरकार तथा रिजर्व बैंक के बीच समझौते के बाद यह सिलसिला भी खत्म होने लगा। इसके साथ मनमोहन सिंह ने पूरी समझबूझ के साथ रिजर्व बैंक को वित्त मंत्रालय के नियंत्रण से निकालकर स्वायत्तता देने का रास्ता भी साफ कर दिया।

पूंजी बाजार का विकास

शेयर बाजार 1991 में किसी पुराने ढर्रे पर चलने वाले क्लब की तरह काम कर रहा था। इसमें भेदिया कारोबार और दूसरे गैर-कानूनी काम धड़ल्ले से हो रहे थे। 1992 में सामने आया हर्षद मेहता कांड इसका जीता-जागता उदाहरण था। बाजार में हो रही इन अनियमितताओं से पैदा हुए रोष के बाद मनमोहन सिंह ने कई संस्थागत उपाय किए, जिनसे भारतीय पूंजी बाजार में मजबूती ही नहीं आई बल्कि बेहतर नियम-कायदे के साथ अत्याधुनिक तकनीक भी इस्तेमाल होने लगीं। ऑनलाइन ट्रेडिंग और कागज रहित रिकॉर्ड रखने का चलन शुरू हो गया।

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी), सरकार के समर्थन वाले नैशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) और नैशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेड (एनएसडीएल) जैसे नए और अहम संस्थान अस्तित्व में आए। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष करों में सुधार हुए और सेवाओं पर भी कर लगाना शुरू हो गया। मगर यहां इसके बारे में विस्तार से चर्चा संभव नहीं हो सकेगी। फिर भी एक बात का विशेष रूप से जिक्र करना जरूरी है। मनमोहन सिंह ने वित्त मंत्रालय और रिजर्व बैंक में अर्थशास्त्र के माहिर अधिकारियों की शीर्ष टीम तैयार करने और उसे बनाए रखने पर खास जोर दिया। मोंटिक सिंह आहलूवालिया, सी रंगराजन, एन के सिंह और वाई वी रेड्डी ऐसे ही कुछ नाम हैं। इन अधिकारियों की विशेषज्ञता, लंबे समय तक मौजूदगी और आपसी समन्वय से मनमोहन सिंह के आर्थिक सुधार कार्यक्रम तैयार करने एवं उन्हें लागू करने में आसानी हुई।

उपरोक्त सभी पहलुओं ने भारतीय अर्थव्यवस्था को असीमित मजबूती दी है। लेकिन मनमोहन सिंह की स्वयं की काबिलियत और भारतीय अर्थ तंत्र की उनकी गहरी समझ के बिना भारत का आर्थिक कायाकल्प कभी संभव नहीं हो पाता। सिंह की बुद्धिमत्ता, राजनीतिक परिपक्वता और इन सबसे ऊपर उनकी असाधारण सज्जनता एवं ईमानदारी ने वह सब कर दिखाया जो किसी दिवास्वप्न की तरह लग रहा था।

(लेखक 1993 से 2001 तक भारत सरकार के मुख्य आर्थिक सलाहकार रह चुके हैं)

आपका पक्ष

एक देश, एक चुनाव: एक विचार, कई चुनौतियां

'एक देश, एक चुनाव' का विचार भारत में लगातार चुनावों से होने वाले खर्च और प्रशासनिक बोझ को कम करने के उद्देश्य से सामने आया है। इस विचार के समर्थक तर्क देते हैं कि इससे विकास कार्य निर्बाध रूप से चल सकेंगे और सरकार की नीतियों में स्थिरता आएगी। लेकिन इस विचार के साथ कई चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं। सबसे बड़ी चुनौती है विभिन्न राज्यों की अलग-अलग राजनीतिक परिस्थितियों को एक साथ समायोजित करना। अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग चुनावी मुद्दे होते हैं और अलग-अलग दलों का प्रभाव होता है। इन सभी को एक साथ मैनेज करना एक बड़ी चुनौती है। दूसरी चुनौती है चुनाव आयोग पर पड़ने वाला अतिरिक्त बोझ। एक साथ इतने बड़े पैमाने पर चुनाव कराने के लिए चुनाव आयोग को अपनी तैयारियों को कई गुना बढ़ाना होगा। इसके लिए बड़ी संख्या में

एक देश, एक चुनाव के लिए निर्वाचन आयोग को अपनी तैयारियों को कई गुना बढ़ाना होगा

कर्मचारियों और संसाधनों की आवश्यकता होगी। तीसरी चुनौती है राजनीतिक दलों की सहमति। सभी राजनीतिक दल इस विचार के पक्ष में नहीं हैं। कुछ दल मानते हैं कि इससे छोटे दलों को नुकसान होगा और बड़े दलों को फायदा होगा। इसलिए, 'एक देश, एक चुनाव' का विचार एक जटिल मुद्दा है। इसके फायदे और नुकसान दोनों ही हैं।

राजूराम प्रजापत, नागौर

आर्थिक और कारोबारी लिहाज से अच्छा साल

वर्ष 2024 में आर्थिक विकास दर 8 प्रतिशत व औद्योगिक विकास दर 9.5 प्रतिशत रही। वहीं बैंकिंग क्षेत्र का प्रदर्शन दमदार रहा। आरबीआई ने नीतिगत दर को यथावत रखा। भारत का सेवा निर्यात मजबूत बना हुआ है, जो वित्त वर्ष 2024 में 341.1 अरब डॉलर पहुंच गया। कुल मिलाकर वर्ष 2024 आर्थिक स्थिति व कारोबारी लिहाज से अच्छा रहा।

अवधेश मंगल, मुरैना

कारोबार व अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण प्रगति

इस वर्ष भारत के अर्थव्यवस्था और कारोबारी क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण प्रगति देखी गई है जैसे वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच भारत में 8.2 फीसदी जीडीपी वृद्धि दर हासिल की। जीएसटी संग्रह 2.10 लाख करोड़ रुपये के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया। मेक इन इंडिया के तहत वैश्विक कंपनियां भारत आ रही हैं और यहां पर अपने उत्पाद तैयार कर रही हैं। विदेशी मुद्रा भंडार 2.84 अरब डॉलर बढ़कर 692.30 अरब डॉलर पर पहुंच गया। वर्ष 2024 में कुछ आईपीओ निवेशकों को मालामाल किया, जबकि कुछ ने निराश किया।

सौरभ यादव, अंबेडकर नगर

आर्थिक सुधार हुआ

देश में आर्थिक दृष्टि से बहुत कुछ सुधार हुए हैं। स्वावलंबन में विकास के साथ ही उत्पादन तथा गुणवत्ता में वृद्धि हुई है। किंतु स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में हम पिछड़े हुए हैं। देश में सांप्रदायिक तनाव और भ्रष्टाचार भी रुका नहीं, बल्कि यह बढ़ रहा है। यह देश की प्रगति में बाधक है। सांप्रदायिक दंगों के दौरान भी हुए आर्थिक नुकसान को कमतर और अच्छा नहीं कहा जा सकता।

बी एल शर्मा, उज्जैन

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिज़नेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in
पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो - पीटीआई

श्रीनगर में भारी बर्फबारी के बाद सोमवार को जल की कमी के कारण पानी लेने जाती महिलाएं। मौसम विभाग ने बताया कि गुलमर्ग में न्यूनतम तापमान शून्य से 10 डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया, जो पिछली रात की तुलना में दो डिग्री कम है।

दैनिक जागरण
आत्मविश्लेषण सुधार की दिशा में पहली सीढ़ी है

पंजाब बंद का संदेश

पंजाब के किसान संगठनों की ओर से बुलाए गए बंद के दौरान रेल एवं बस सेवाएं ठप रहने के कारण किसान नेता अपने इस आयोजन को सफल करार दे सकते हैं, लेकिन प्रश्न यह है कि इससे उन्हें हासिल क्या हुआ? क्या अब पंजाब और केंद्र सरकार उनकी उन मांगों को मानने के लिए तैयार हो जाएगी, जिसे लेकर वे हरियाणा सीमा पर दस माह से धरने पर बैठे हैं और पिछले 35 दिनों से किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल आमरण अनशन पर हैं? यह ध्यान रहे कि किसान नेताओं के रुख-रवैये से सुप्रीम कोर्ट भी सहमत नहीं। किसान नेता इसकी अनदेखी करने के लिए स्वतंत्र हैं कि पंजाब बंद के दौरान आम लोगों को तमाम परेशानियों का सामना करना पड़ा और अनेक संगठनों ने उनकी अपील के बाद भी बंद को अपना समर्थन नहीं दिया। कई जगह किसान नेताओं को जबरन दुकानें बंद करानी पड़ीं, क्योंकि व्यापारी इसके लिए तैयार नहीं थे। बंद बुलाकर आवागमन ठप किया जा सकता है, लेकिन जन समर्थन हासिल नहीं किया जा सकता और ऐसा कोई आंदोलन सफल नहीं हो सकता, जिसके प्रति जनता की सहानुभूति न हो और जिसकी मांगें तार्किक न हों। जो किसान नेता सरकार पर अड़ियल रवैया अपनाने का दोष मढ़ रहे हैं, वे यह देखने को तैयार नहीं कि खुद उनका रवैया कैसा है। वे किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए सुप्रीम कोर्ट की ओर से बनाई गई समिति से बात करने को तैयार नहीं। इसी तरह वे यह समझने को तैयार नहीं कि आखिर उनकी मांगों के पक्ष में शेष देश के किसान आंदोलित क्यों नहीं हो रहे हैं? कहीं इसलिए तो नहीं कि वे यह जान रहे हैं कि यह आंदोलन राजनीति प्रेरित है?

भले ही संकीर्ण राजनीतिक कारणों से कई दल धरने पर बैठे किसान संगठनों की पीठ थपथपा रहे हों, लेकिन उनके और खासकर कांग्रेस के पास इसका जवाब नहीं कि वह जब केंद्र की सत्ता में थी, तब उसने एमएसपी की गारंटी वाला कानून क्यों नहीं बनाया? वह ऐसा इसीलिए नहीं कर सकी, क्योंकि यदि इस तरह का कानून बनता तो अर्थव्यवस्था का बेड़ा गर्क होता और किसानों की समस्याएं तब भी न सुलझतीं। इससे इन्कार नहीं कि देश के अन्य हिस्सों की तरह पंजाब के किसान भी कई समस्याओं से दो-चार हैं, लेकिन उनका समाधान उन मांगों को मानकर नहीं किया जा सकता, जिनकी जिद किसान संगठन कर रहे हैं। क्या यह विचित्र नहीं कि धरना-प्रदर्शन-बंद का सहारा वे किसान नेता अधिक ले रहे हैं, जो असेक्षाकृत बेहतर आर्थिक स्थिति वाले किसानों का प्रतिनिधित्व करते हैं? पंजाब के किसानों की समस्याओं का समाधान उन तौर-तरीकों में नहीं, जिनकी वे मांग कर रहे हैं, बल्कि उनमें है, जिन्हें उनके ही राज्य के कई किसान अपनाए हुए हैं।

सुधरें ब्लैक स्पाट

पहाड़ी प्रदेश हिमाचल में सड़कें ही आवागमन का प्रमुख साधन हैं। यही कारण है कि इन्हें भाग्यरेखा भी कहा जाता है। यह छिपा रहस्य नहीं है कि हिमाचल प्रदेश की सर्पीली सड़कें हर समय वाहन चालकों की परीक्षा लेती हैं। सड़क हादसों की दृष्टि से भी हिमाचल संवेदनशील राज्य है। प्रदेश में कई ब्लैक स्पाट हैं, जहां दुर्घटना की आशंका अधिक रहती है। प्रदेश में विकास का पहिया घूमा है और सड़कों का विस्तार भी किया जा रहा है, लेकिन चिंता की बात है कि प्रदेश की सर्पीली सड़कों पर अब भी 717 ब्लैक स्पाट सड़क दुर्घटना का कारण बन रहे हैं। करोड़ों रुपये खर्च करने के बावजूद इन्हें सुधारा नहीं जा सका है। राज्य सरकार की ओर से जारी आंकड़ों के अनुसार तीन वर्ष में ब्लैक स्पाट पर 395 लोगों की जान गंवानी पड़ी है। पर्यटन राज्य होने के कारण लोगों को बेहतर सड़क सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए फोरलेन का निर्माण भी तेजी से किया जा रहा है, लेकिन पहाड़ों की सही कटिंग न होने से फोरलेन पर भी कई ब्लैक स्पाट बन गए हैं। मंडी जिले का चार मील इसका उदाहरण है, जहां रविवार को गाड़ी पर चट्टान गिरने से महिला पर्यटक की मृत्यु हो गई। वहां पूर्व में भी कई हादसे हो चुके हैं। ब्लैक स्पाट को सुधारने के लिए प्रदेश सरकार की ओर से प्रयास सराहनीय हैं, लेकिन लोगों की सुरक्षा के लिए इसमें तेजी लाए जाने की आवश्यकता है। फोरलेन निर्माण भी इस बात का ध्यान रखना होगा कि लोगों के लिए पहाड़ों की कटिंग से किसी तरह का खतरा न हो। सभी पक्षों से अपेक्षा है कि लोगों की सुरक्षा को प्राथमिकता मिले।

सड़क सुरक्षा के लिए प्रदेश में ब्लैक स्पाट सुधारने के काम में तेजी लानी होगी

वास्तविक चुनौतियों की अनदेखी

शिवकांत शर्मा

गुजरता वर्ष यह बता रहा है कि अन्य देशों के उलट भारत व्यर्थ के मुद्दों में उलझा रहा

बीतता वर्ष इतिहास का सबसे बड़ा चुनावी वर्ष होने के साथ-साथ प्रमुख लोकतंत्रों में फैलती अस्थिरता के नाम भी रहा। जर्मनी, फ्रांस, कनाडा और जापान में सरकारें सत्ताधारी पार्टियों के बहुमत खोने की वजह से अस्थिर हुईं। दक्षिण कोरिया में मार्शल ला लगाने की वजह से सरकार संकट में है और ब्रिटेन में प्रचंड बहुमत से जीतने के बावजूद कारोबारी टैक्स बढ़ाने और पेंशनभोगियों का शीतकालीन भत्ता काटने की वजह से सरकार की लोकप्रियता बुरी तरह गिरी। सत्ताधारी पार्टियों और उनके गठबंधनों के प्रति बढ़ते जन असंतोष के तीन प्रमुख कारण हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, बेरोजगारी भत्ता और पेंशन जैसी सुविधाओं की बढ़ती मांग के साथ-साथ टैक्स दरों में भी कटौती की आशा, महंगाई और शरणार्थियों की बढ़ती संख्या। अमेरिका में कमला हैरिस की हार के मूल कारण भी यही थे।

जापान, कनाडा और यूरोप के लोकतांत्रिक देशों में लोगों की औसत आयु बढ़ रही है, जिससे पेंशन और स्वास्थ्य सेवाओं का खर्च बढ़ रहा है। जनन दर घट रही है, जिससे कमाने और टैक्स देने वालों की संख्या घट रही है। आर्थिक विकास दरें भी धीमी पड़ रही हैं, जिसकी वजह से राजस्व नहीं बढ़ पा रहा है। लोग न तो जनकल्याण की उन सुविधाओं में कटौती सहने को तैयार हैं, जिनके वे आदी हो चुके हैं और न अधिक टैक्स देने को तैयार हैं। सीरिया, अफगानिस्तान, फलस्तीन, म्यांमार और सूडान जैसे देशों से आने वाले शरणार्थियों की बाढ़ से जन सेवाओं पर बोझ और बढ़ रहा है। सरकारें इन चुनौतियों के बीच संतुलन बैठाने में खुद को असमर्थ पा रही हैं। जापान, जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन और कनाडा तक लगभग हर देश में बढ़ते जन असंतोष का एक प्रमुख कारण यही है।

रोजगार और जनकल्याण सुविधाओं की बढ़ती मांग के साथ-साथ महंगाई की मार भारत में भी जन असंतोष का एक प्रमुख कारण है। इसकी वजह से भाजपा आम चुनाव में अपना बहुमत बढ़ाने की जगह बचाने में भी नाकाम रही। जहां तक शरणार्थियों की बात है, भारत में अमेरिका और ब्रिटेन की तरह शरणार्थियों से कहीं बड़ी समस्या घुसपैठियों की है। जहां अमेरिका और ब्रिटेन में घुसपैठियों की रोकथाम और निष्कासन के लिए एक राय है, वहीं भारत में वोटबैंक के लालच में उन्हें प्रश्रय दिया जा रहा है। इस सबसे अलग भारत में एक ऐसी राजनीतिक समस्या खड़ी हो गई है, जो अभी तक और किसी बड़े लोकतंत्र में देखने को नहीं मिलती और वह है जनादेश स्वीकार न करने की समस्या। चुनाव से पहले तक अमेरिका में भी ऐसा अंदेशा था कि यदि ट्रंप हार जाते तो वह और उनके समर्थक जनादेश को स्वीकार नहीं करते और तब सबसे पुराने लोकतंत्र का तमाशा बन सकता था, लेकिन ट्रंप की नाटकीय जीत ने अमेरिका की लाज बचा ली। इसके ठीक उलट भारत में महंगाई और बेरोजगारी की मार और संविधान एवं चुनावी बांडों को लेकर किए गए भ्रामक प्रचार के बावजूद सत्ताधारी गठबंधन को बहुमत मिल गया। अन्य किसी भी स्थिर लोकतंत्र में भारत जैसा चुनाव परिणाम आया होता तो हारने वाला पक्ष जनादेश स्वीकार कर अपनी भूलों और नई सरकार की योजनाओं की समीक्षा में जुट जाता। जर्मनी में राष्ट्रपति शुल्ज की सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी और फ्रांस में राष्ट्रपति मैक्रों की रेनेसां पार्टी बुरी तरह हारीं और अति दक्षिणपंथी पार्टियों से भी पीछे रह गईं। इसके बावजूद दोनों देशों में पराजित पार्टियों ने चुनावी प्रक्रिया पर सवाल उठाने और संविधान खतरे में है, जैसे नारे लगाकर संसद और सड़कों पर अराजकता फैलाने के बजाय अपनी ऊर्जा नए गठबंधन बनाने में लगाई। उन्होंने वामपंथी, मध्यमार्गी और ग्रीन पार्टियों के नए गठबंधन बनाकर सरकार बनाई। यह बात अलग है कि आर्थिक नीतियों में गहरे मतभेद की वजह से ये सरकारें चल नहीं पाईं, लेकिन किसी ने लोगों को जनादेश के विरुद्ध उकसाने और अराजकता फैलाने का प्रयास नहीं किया। जापान में भी यही हुआ और अब ट्रंप के सत्ता संभालने के बाद अमेरिका में भी यही होता दिखता है। यहां संसद चीखने-चिल्लाने और अनर्गल प्रलाप करने की जगह अपनी-अपनी बात तथ्यों के साथ रखते हैं। दुर्भाग्य से भारत में ठीक इसके उलट तमाशा जारी रहा। संसद का पूरा शीतकालीन सत्र अदाणी समूह पर अमेरिका में लगे आरोपों पर बहस के हठ, संविधान और मनुस्मृति पर प्रलाप और आंबेडकर के कथित अपमान पर माफी की जिद की भेंट चढ़ गया। भारत का भला इसी में है कि नए वर्ष में वह असल चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करे, क्योंकि जलवायु परिवर्तन के चलते बढ़ते प्रदूषण, बीमारियों, बाढ़ और सूखे की वजह से लाखों-करोड़ों का नुकसान हो रहा है। कारोबार विरोधी माहौल के कारण उद्योग-रोजगार नहीं पनप पा रहे। शिक्षा प्रायोगिक न होने के कारण स्नातक काम-धंधों में निपुण नहीं बन पा रहे। गुणवत्ता और उत्पादकता में अपेक्षित सुधार न होने से भारतीय माल विदेशी प्रतिस्पर्धा में टिक नहीं पाता। उत्पादन, भंडारण और आपूर्ति के तालमेल के बिना खाद्य उत्पादों के दामों में उछाल और गिरावट आती रहती है, जिसकी सबसे बुरी मार गरीबों पर पड़ रही है।

अवधेश राजपूत

अमेरिका को छोड़कर चीन से लेकर यूरोप तक अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं के धीमे पड़ने के संकेत भी अच्छे नहीं हैं। ट्रंप सत्ता संभालते ही उन देशों पर आयात शुल्क लगाने की धमकी दे रहे हैं, जिन्हें अमेरिका के साथ व्यापार में लाभ हो रहा है। भारत को सबसे बड़ा व्यापार लाभ अमेरिका से ही होता है। इतनी सारी ज्वलंत समस्याओं पर सरकार से समाधान का हिसाब मांगने और जनता के समक्ष बेहतर विकल्प रखने की जगह केवल संविधान और आंबेडकर की माला जपने और मनुस्मृति जलाने से कौन सी समस्या का क्या समाधान होगा? क्या संविधान यह कहता है कि विपक्ष का काम सरकार की योजनाओं के रचनात्मक चुनौती देने के बजाय केवल जनादेश को ही चुनौती देते रहना है?

(लेखक ब्रीबीसी हिंदी के पूर्व संपादक हैं)

response@jagran.com

नए अवसरों के द्वार खोलने वाला समय

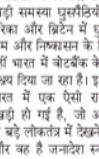

डा. सुरजीत सिंह

निवेश, उपभोग और ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाले सुधार 2025 में भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत आधार देंगे

निकट आता विकसित भारत का लक्ष्य। फाइल

भू-राजनीतिक चुनौतियों से उत्पन्न आपूर्ति शृंखला और कच्चे तेल के दामों में आई तेजी के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था 2024 में विश्व की सबसे तेज बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बनी रही है। तकनीकी प्रगति, प्रौद्योगिकी, बैंकिंग, नवीकरणीय ऊर्जा और आत्मनिर्भर भारत जैसे नीतिगत उपायों से भारत वैश्विक आर्थिक क्षेत्र में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत रखने में सफल रहा है। मजबूत विदेशी मुद्रा भंडार और विदेशी निवेश के रिकार्ड प्रवाह ने भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए ईंधन का कार्य किया है तो बढ़ती मुद्रास्फीति, घटता उपभोग, वित्तीय ऋण और जीडीपी वृद्धि पूर्वानुमानों में कमी ने बड़ी चिंताएं भी पैदा की हैं। 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र का दर्जा दिलाने की दिशा में आगे बढ़ने के लिए वर्तमान आर्थिक स्थितियों में वर्ष 2025 की रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित करना होगा। निवेश, उपभोग और ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाले सुधार वर्ष 2025 में भारतीय अर्थव्यवस्था का मजबूत आधार तैयार करेंगे। दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला देश होने के कारण वर्ष 2025 में भी घरेलू मांग में मजबूत निरंतरता बनी रहेगी। शहरी के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों की मांग में भी सकारात्मक रुझान दिखाई दे रहा है। जून 2024 में भारत की जीडीपी में निजी अंतिम उपभोग व्यय 57.9 प्रतिशत से बढ़कर 60.4 प्रतिशत हो गया। ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ता वस्तुओं की मांग 2.2 प्रतिशत से बढ़कर 2023 में 6.2 प्रतिशत हो गई। सांख्यिकी मंत्रालय के अनुसार मासिक प्रति व्यक्ति व्यय में शहरी-ग्रामीण अंतर वित्त वर्ष 2011-12 में 84 प्रतिशत से घटकर 2022-23 में 71 प्रतिशत हो गया। यह 2023-24 में और घटकर 70 प्रतिशत हो गया। ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोग वृद्धि से ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में असमानता कम हुई है।

चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही यानी जुलाई-सितंबर में आम चुनावों के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था में 5.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो पहली तिमाही की 6.7 प्रतिशत वृद्धि के मुकाबले धीमी है। तीसरी तिमाही में अर्थव्यवस्था पुनः बढ़ने का अनुमान है। क्रिसिल की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, चालू वित्त वर्ष 2024-25 में भारत की वृद्धि दर 6.5 प्रतिशत से सात प्रतिशत के बीच रह सकती है। इसका प्रमुख कारण यह है कि भारत के पास अभी कार्यशील युवाओं की सबसे बड़ी पौध है। हालांकि उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना और मेक इन इंडिया अभियान सहित अनेक सरकारी प्रोत्साहनों के बावजूद विनिर्माण क्षेत्र अपेक्षित लाभ लेने में सफल नहीं रहा है। इसके लिए विनिर्माण क्षेत्र की दीर्घकालिक प्रकृति पर अधिक ध्यान देते हुए संरचनात्मक सुधारों की दिशा में बढ़ना होगा। नीति निर्माताओं को निवेश में विविधता लाने पर ध्यान देना होगा, क्योंकि अभी तक निवेश स्टील, मशीनरी, केमिकल्स जैसे भारी उद्योगों में ही अधिक रहा है। विविध उद्योगों को बढ़ावा मिलने से घरेलू मांग में भी तेजी से वृद्धि होगी। नवाचार संस्कृति, अकादमिक-उद्योग साझेदारी और वैश्विक बाजार पहुंच का विस्तार करके भारत 2025 में स्वयं को वैश्विक नवाचार पावर हाउस में बदल सकता है।

वर्ष 2024 में सेंसेक्स और निफ्टी के रिकार्ड ऊंचाई पर पहुंचने से भारत का वित्तीय बाजार वैश्विक निवेशकों के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया था। यह तेजी 2025 में भी बनी रह सकती है, इसके लिए विदेशी मुद्रा बाजार में स्थायित्व पर काम करते हुए अपनी वस्तुओं के निर्यात को बढ़ाने पर अधिक काम करना पड़ेगा। साथ ही निवेशकों का भरोसा बनाए रखने के लिए राजकोषीय अनुशासन पर विशेष ध्यान देना होगा।

वर्ष 2025 में सरकार की प्राथमिकता मौद्रिक नीति में मामूली ढील द्वारा मुद्रास्फीति के दबाव को घटाने की भी होगी। पूंजी निर्माण को प्रोत्साहन मिलने से निम्न एवं मध्य आय वर्ग की क्रय शक्ति को बढ़ावा मिलेगा। जन धन, आधार और मोबाइल के तहत खोले गए खातों में 2.32 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा रकम जमा है। वर्तमान में ई-लेनदेन बढ़कर 134 अरब रुपये हो गया है, जो सभी वैश्विक भुगतानों के 46 प्रतिशत के बराबर है। उम्मीद है 2025 की शुरुआत में ही भारतीय अर्थव्यवस्था जापान की अर्थव्यवस्था के आकार को पछाड़ कर दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगी। एक दशक पहले भारतीय अर्थव्यवस्था दुनिया की 11वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी। जापान में संभावित ब्याज दर वृद्धि, अमेरिका और चीन के बीच संभावित टैरिफ युद्ध सहित वैश्विक भू-राजनीतिक तनाव भारत के लिए वैश्विक व्यापार और विनिर्माण में एक केंद्रीय खिलाड़ी बनने के नए अवसर खोल सकते हैं। तेजी से बदलती भू-राजनीतिक स्थितियों में आपूर्ति शृंखला में विविधता लाने, चीन प्लस वन का रणनीतिक लाभ लेने, कुशल श्रमशक्ति के उपयोग आदि के लिए नीतिगत उपायों पर विशेष ध्यान केंद्रित कर 2025 में भी विदेशी निवेश के प्रवाह की निरंतरता को बनाए रखा जा सकता है। इसके लिए मुक्त व्यापार समझौतों को तेजी से आगे बढ़ाने और रुपये के अंतरराष्ट्रीयकरण करने के उपायों पर विशेष फोकस करना होगा। कुल मिलाकर शहरी उपभोग में वृद्धि, सेवा क्षेत्र में बढ़त और आधारिक संरचना क्षेत्र में हो रहे निवेश की और लगातार झुकाव के कारण वर्ष 2025 में भारतीय अर्थव्यवस्था एक मजबूत वृद्धि के लिए तैयार है।

(लेखक अर्थशास्त्री हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

समय की गति

नव वर्ष, त्योहार, बर्थडे, परिवार में नए सदस्य के आगमन जैसे अवसर संबंधों और आकांक्षीय परिवेश को संवारने, पुनर्व्यवस्थित करने का कारण बनते हैं। उत्सवी परिवेश दैनंदिन एकरसता को तोड़ कर जीवन में जीवंतता, आशा और उत्साह का संचार करते हैं। आनंद तो उस उल्लास और प्रसन्नता के आदान-प्रदान के सिलसिले में है, जो आजीवन चलता रहे, दिन विशेष तक सीमित न रहे। उत्सवी वेलाओं का परम उद्देश्य आपसी संबंधों को सौहार्दपूर्ण रखना है। जो संबंधों की गरिमा समझते और इन्हें निभाते हैं उनके हृदय में सुख-शांति और संतुष्टि का वास रहता है।

अतीत के मूल्यांकन या भविष्य की कल्पनाओं में ले जाते कालचक्र के पहाव हमें तुष्टि देते हैं या कचोटते हैं, यह हमारा सोच और अपेक्षाएं तय करती हैं। आप समाज और दुनिया से क्या चाहते हैं, क्या सभी आपके लिए हैं या आप उनके निमित्त हैं। यानी आप देने वालों में हैं या लेने वालों में। देने के साथ शर्त है कि इसके पीछे प्रतिफल की आशा न हो, अन्यथा देना फलीभूत न होगा। स्वजनों सहित दूसरों से अत्यधिक अपेक्षाएं संजोना दुखजन्य होता है। दूसरों से न्यूनतम अपेक्षाएं रखने वाले को ज्ञान रहता है कि उसकी भूमिका तभी तक रहेगी जब तक वह उपयोगी है। कर्मठ रहना वह अपना स्वभाव बन लेता है। वह कहीं भी कर्तव्य निर्वहन में पीछे नहीं रहता और अंततः सुखद परिणति का अधिकारी बनता है। दूसरों के अधिकार और स्वयं के कार्त्तव्यों के प्रति वह सजग रहता है। दूसरों से मेलजोल बनाते हुए वह स्वस्थ रहेगा। यह जानते हुए कि उसे शेष जीवन भविष्य में बिताना है, वह अतीत की उपलब्धियों की गणना में नहीं, आगामी योजनाओं में व्यस्त रहेगा। अतीत की उलझनों में कंभकेर्ण नहीं पड़ते। जो अपने पास है उसके बूते अभीष्ट प्राप्त हो जाएगा, यह धारणा उसे सुनहरे भविष्य के प्रति आश्वस्त रखती है।

हरीश बड़थ्वाल

लालच पर अंकुश लगाने का लें संकल्प

डा. महेश परिमल

साइबर फ्राड से बचने के लिए अपने भीतर के लालच को नियंत्रण में रखें और सादगी के साथ नए साल की अगवानी करें

हम सब नए साल के मुहाने पर हैं। तय है इन दिनों हमारा मोबाइल पहले से भी अधिक व्यस्त हो जाएगा। हमारे अपनों के आकर्षक संदेश आएंगे। इन सबके चलते हमारे पास कुछ ऐसे भी संदेश आएंगे, जो हमारे लिए घातक होंगे। तो हमें सबधानी इस बात की रखनी है कि किसी लुभावने लिंक को क्लिक नहीं करना है। संभवतः इस लिंक में कुछ ऐसा हो, जिससे आपका खाता ही खाली हो जाए। इस लिंक के माध्यम से आपके कंप्यूटर या मोबाइल पर वायरस का आक्रमण हो सकता है। जो आपके नए साल को बहुत ही बुरा बना सकता है। अपने भीतर के लालच को नियंत्रित रखें और शांति और सादगी के साथ नए साल की अगवानी करें।

2024 में भारतीयों को साइबर धोखाधड़ी से 11 हजार 333 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। इस साल साइबर जालसाजों ने जमकर आतंक मचाया। शेयर बाजार में अधिक कमाई का झांसा दिखाकर धोखाधड़ी करने की 2,28,094 शिकायतें दर्ज की गईं। शेयर बाजार में निवेश का प्रलोभन देकर लोगों से 4,636 करोड़ रुपये हड़पे गए। डिजिटल अपराधी लोगों को निशाना बनाने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपनाते हैं। ये घपलेबाज लोगों के मन में मौजूद लालच को जगाते हैं। जो उनके जाल में फंस जाते हैं अपनी संपत्ति खो बैठते हैं। इस साल हुए आनलाइन फ्राड, हैकिंग और डिजिटल अरेस्ट जैसी घटनाओं से लोग डरे हुए हैं।

ऐसा भी नहीं है कि साइबर अपराधियों ने केवल छोटे शहरों के लोगों को अपना निशाना बनाया है। वे महानगरों में पढ़े-लिखे लोगों को भी अपना शिकार बन चुके हैं। इनकी लुभावनी बातों पर जो आंख बंद कर भरोसा कर लेते हैं, उनकी जेबें कटने में वक्त नहीं लगता। बैंक में रखें पूरी जमा-पूंजी भी साफ हो जाती है। 2024 में साइबर धोखाधड़ी की कुल 12 लाख शिकायतें आईं। उनमें से 45 प्रतिशत शिकायतों में अपराधी म्यांमार और लाओस जैसे देशों में बैठे थे। इतनी दूर से वे लोग हमें अपना शिकार बनाते रहते हैं। हम चाहकर भी इनका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते। अब तो फोन पर जैसे ही किसी की काल लगाओ, तो साइबर अपराधी से बचने के लिए चेताया जाने लगा है। सरकार ने देर से ही सही, यह कदम उठाकर लोगों का भला ही किया है, पर इसके साथ-साथ यदि सरकार साइबर अपराधियों पर लगाम कसकर लोगों की धनराशि वापस दिलाकर उनका विश्वास जीतने की ओर कदम उठाए, तो लोग और भी सचेत हो जाएंगे। हमें भी जागरूक नागरिक होने का सबूत देना होगा। साइबर अपराधियों से बचने के लिए भीतर के लालच को मारना होगा। अपनी मेहनत की कमाई को यूं ही बर्बाद करने के लिए लोगों को फोन पर अपनी या ओटीपी की जानकारी नहीं देने का निश्चय करना होगा, तभी हमारा आने वाला नव वर्ष सार्थक होगा। ऐसी आशा की जा सकती है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

मेलबाक्स

शवों पर न हो राजनीति

'दुर्भाग्यपूर्ण राजनीति' शीर्षक से प्रकाशित संपादकीय में सही टिप्पणी की गई है कि पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के अंतिम संस्कार और स्मारक को लेकर कांग्रेस की ओर से विवाद खड़ा करना अनुचित था। इस विवाद से हर हाल में बचा जाना चाहिए था और इसकी कोशिश सभी को करनी चाहिए थी। बाद में आम आदमी पार्टी और शिरोमणि अकाली दल भी इस विवाद में कूद पड़े। यह विशुद्ध राजनीति है, श्रद्धा का अंश इसमें शायद ही हो। ऐसा पहले भी होता रहा है। ऐसी लज्जास्पद राजनीति पहले भी होती रही है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे वीर बहादुर सिंह की जब मृत्यु हुई, तो उनके शव को काशी के मणिकर्णिका घाट ले जाया गया। मान्यता है कि इस घाट पर दाह संस्कार करने से प्राणी स्वर्ग का अधिकारी बन जाता है। चूंकि यह अंत्येष्टि अति विशिष्ट जन की थी, तो उस दिन वहां ले जाए जा रहे अन्य आमजनों के शवों को अन्यत्र प्रत्यावर्तित किया गया। इसकी यह कहकर आलोचना हुई थी कि 'वे बेचारे आम लोग स्वर्ग गमन के अधिकार से केवल इसलिए वंचित रहे, क्योंकि उनकी मृत्यु तिथि एक अति विशिष्ट जन की मृत्यु तिथि पर हो हो गई।' प्रधानमंत्री श्रीं इंदिरा गांधी की हत्या 31 अक्टूबर, 1984 को प्रातः साढ़े नौ बजे हुई थी। उनके शव की अंत्येष्टि पर भी भरपूर राजनीति हुई। उसे तीन दिन तक रोके रखा गया। यही नहीं, दाह संस्कार के समय वहां लगे कैमरों को भी उपस्थित विपक्षियों को कवर न करने के निर्देश थे। अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने एक भाषण में कहा था कि 'हम और एनटी रामाराव अगल-बगल बैठे थे। रामाराव ने बताया कि वाजपेयी जी हम और आप चित्रों में नहीं आ रहे हैं।' तब, जैसा कि वाजपेयी जी ने कहा कि वह उठे और एक लकड़ी लेकर चिता की परिक्रमा की और उसे चिता में डाल दिया। तब तो फोटो आ ही जानी थी, क्योंकि कैमरा चिता को तो अनवरत कवर कर ही रहा था।

रघोत्तम शुक्ल, लखनऊ

नए सोच की जरूरत

'राजनीति में नवसंकल्प का समय' आलेख में हृदयनारायण दीक्षित ने वर्तमान संसद में सार्थक चर्चा के अभाव और विपक्ष द्वारा संविधान बदलने के मिथ्या दुष्प्रचार पर सही प्रकाश डाला है। संविधान के अनुच्छेद-368 में संविधान संशोधन को पारित करने की एक व्यापक और गहन प्रक्रिया है जिसमें संसद सदस्यों ही नहीं, आवश्यकतानुसार राज्यों के निर्वाचित विधायकों को भी अपने मतदाधकार के प्रयोग करने का अधिकार है। विपक्ष शायद संसद को किसी भी विषय पर सार्थक चर्चा नहीं करने देना चाहता और संसद में शोरगुल, बहिष्कार कर, सभापतियों का अपमान और उनकी नकल उतारकर देश की व्यस्थापिका का माखौल लगातार बना रहा है। अभी संसद में दो दिन चली संविधान दिवस पर हुई चर्चा भी भविष्योन्मुखी नहीं थी। सिवाय अंतिम कुछ पलों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा गिनाए गए 11 संकल्पों को छोड़कर। इन कुछ पलों को छोड़कर सभी पुरानी बातों को दोहराते रहे और एक-दूसरे पर एक चुनावी सभा की भांति आरोप दोहराते रहे। कांग्रेस लाख कोशिश करे, पर अपने हित और स्वार्थ हेतु किए गए अतीत में कुछ संविधान संशोधनों की काली स्याही को अपने ऊपर से मिटा नहीं सकती। संसद के सत्रों की व्यवस्था भी ऐसी है कि सत्रों के बीच अवकाश में चुने हुए प्रतिनिधि जनता के बीच में जाकर उनकी समस्यों को सुलझाएं और बड़े विषयों को समझकर अगले संसद सत्रों में उन पर चर्चा करें और जरूरी नीतियां बनाएं, पर सत्रों में संसद चलती नहीं है। ऐसे में माननीय सांसदों के बीच देश के भविष्य की बुनियाद के निर्माण हेतु जरूरी विचारों के मंथन का अभाव रहता है। आज जरूरत है सार्थक चर्चा करने की। वर्तमान देशकाल परिस्थिति तथा वैश्विक वातावरण के अनुसार हमें संविधान के दायरे में रहते हुए योजनाओं, कानूनों, नीतियों का निर्माण करना चाहिए।

पीयूष शंकर गर्ग, गाजियाबाद

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।
अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।